

प्रकाशकीय

भाषाय चमुरसेन का कहानी-साहित्य में ओ विगिष्ट स्थान है उससे हिंदी के पाठक नसी भाँति परिचित हैं। उन्होंने १९०६ या १९७ से लिखना प्रारम्भ किया था और अन्त तक लिखते रहे। आधी सदी के अपने दीर्घकाल में उन्होंने लगानग माडे चार सौ कहानियाँ लिखीं जिनमें अधिकांश अपने कला-वशिष्टय के लिए सुविख्यात हो गई। शली की दृष्टि से तो आपका नाम हिंदी के सधथच्छ कहानी-लेखकों में आन्तर से लिया जाता है।

भाषायजी की कहानियों के दो-तीन संग्रह बहुत पहले निकले थे परन्तु उनका सारा कहानी-साहित्य एक जगह सकलित नहा हो पाया था। यह एक बहुत बहा अभाव था जिनकी पूर्ति के लिए भाषायजी के ही जीवन-काल में उनके समग्र कहानी-साहित्य को पुस्तक-माला के रूप में प्रकाशित करने की एक रूपरक्षा हमने बनाई थी। इतना ही नहीं कहानियों का सफलन-सम्पान भी उनकी देख रेख में शुरू हो गया था और हम माना के लिए उन्होंने स्वयं 'कहानीकार का वक्तव्य' भी लिखा था (जो इन पुस्तक-माला के पहले खण्ड में दिया गया है) किन्तु दुर्भाग्यवश इस बीच उनका देहावमान हो गया।

सम्प्रति हमारे सामने पहली भाव-यकता यह थी कि लेखक का सम्पूर्ण कहानी साहित्य प्रामाणिक रूप से एक जगह उपलब्ध हो सक जिससे हिन्दी-कथा साहित्य के पाठक भाषायजी की कहानी-कला का रसास्वादन और यथेष्ट अध्ययन कर सकें। इसके लिए भाषायजी के निर्देशों के अनुसार उनके छोटे भाई श्री चमुरसेनजी ने अथक परिश्रम से इस महान लेखक की पत्र-पत्रिकाओं व पांडुलिपियों में बिलखी हुई सामग्री को सकलित तथा सम्पादन किया है जिसे हम क्रमशः पुस्तक-माला के रूप में प्रकाशित करन जा रहे हैं।

हर एक कहानी के ऊपर सक्षिप्त टिप्पणी दी गई है आशा है इससे पाठकों को कहानी की पृष्ठभूमि जानने में सुविधा होगी।

भाषायजी की कहानियों को साधारणतया इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है—मुगल-कालीन बौद्ध-कालीन ऐतिहासिक राजपूती सामाजिक

समस्या प्रधान राजनीतिक धीरता प्रधान भाव प्रधान प्रेम प्रधान कौतुक प्रधान
धीर पारिवारिक ।

हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक-माला हिंदी-साहित्य के एक अभाव की
पूरक होगी एवं विद्वानों तथा-साहित्य के विद्यार्थियों तथा रस के इच्छुक पाठकों
के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी ।

क्रम

पानवाली	७
बुलबुल हजारास्तान	१८
फूलवालों की सल	३१
धम्बपालिका	३६
क्रीता	५८
प्रतिदान	६४
इन्द्र	६८
परपर म धकुर	८६
विश्वास पर विश्वास	१७
सफ़ कौमा	१२२
सम्बप्रोव	१३६
मृतबिर	१४६
मुहम्बत	१७२
धकस्मात्	१८६
ठकुरानी	१९६
फिर	२१५
प्रणय-बंध	२२६
टार्प-साइट	२३२
घरती और घासमान	२४
नही	२४६

—

पानवाली

पानवाली लखऊ का प्रसिद्ध कहानी है। मरिदा और नैरोल्मवा में लखनऊ का तरंग दृश्य था। मुगल-काल की सभ्ये श्रेष्ठ कहानियों में इस कहानी की गणना है।

लखनऊ के धमीनावा पाक में इस समय जहा घटाघर है वहा धव से सी वय पूव एक छोटी-सी टूटी हुई मस्जिद थी जो भूतोंवाली मस्जिद कहलाती थी और धव जहा वाला भी का मंदिर है वहा एक छोटा-सा कच्चा एकमखिला घर था। चारों तरफ न धाज की-सी बहार थी न बिजली की जमक न बढ़िया सड़कें न मोटर न मेम साहबाओं का इतना जमघट।

लखनऊ के धावरी बाग़ाह वाजिधती शाह की धमलारी थी। ऐयाशी और ठाट-भाट के दौर-दौरे थे। मगर इस भुदत्ते में रौनक न थी। उस धर में एक टूटी-सी कोठरी में एक बुढ़िया—मनहूस सूरत सब क समान वालों को देखेरे—बठी किसीकी प्रतीक्षा कर रही थी। धर में एक दिया धीमी धामा से टिमटिमा रहा था। रात के दस बज गए थे जाहों के लिन थे सभी लोग धपने-धपने धरों में रबाइया में मुह लपेरे पडे थे। गती और सडक पर सन्नाटा था।

धीरे धीरे बढ़िया बस्त्रा स धाच्छादित एक पानकी इस टूटे धर के द्वार पर धुपचाप धा लगी और काले बस्त्रा से धाच्छादित एक स्त्री-मूर्ति ने पालकी से बाहर निकलकर धीरे स द्वार पर धपकी दी। तत्काल द्वार खुसा और स्त्री न धर में प्रवेश किया।

बुढ़िया ने कहा—धर तो है ?

‘सब ठीक है क्या मौलवी साहब मौके पर मौजूद हैं ?’

‘कब के इतजारी कर रहे हैं कुछ क्यादा आफिगानी तो नहीं उठानी पडी ?’

‘आफिगानी ? बेखुग जान पर खेतकर साईं हू। करती भी क्या ? गर्दन थोड़े ही उतरवानी थी।

होगा न तो है ?’

‘अभी बेहोग है। किसी तरह राजी न होती थी। मरमूरन यह बिया गय ठव वनी।

बुढ़िया उठी। दोनों पालकी में जा बठी। पानकी सकेत पर वस मस्जिद की सीढियां चढ़नी हुई भीतर चली गई।

मस्जिद में सनाटा घोर अंधकार था मानो वहा कोई जीवित पुरुष नहीं है। पालकी के आरोहियों को इसकी परवाह न थी। वे पालकी को मीचे मस्जिद के भीतरी भाग के तक बहा म ले गए। महा पालकी रखी। बुढ़िया ने बाहर घाबर वगल की कौठरी में प्रवेग बिया। वहां एक भादमी सिर से पेर तक चादर धोड़ मो रखा था। बुढ़िया ने कहा—उठिए मौलवी साहब मुरीशों को ताबीज इनायत कीजिए। क्या अभी जुसार नहीं उतरा ?

‘अभी तो चडा ही है बहकर मौलवी साहब उठ बटे। बुढ़िया ने कुछ जान सं कहा। मौलवी साहब सफेद धाकी हिलाकर बोले—समझ गया कुछ बटकर नहीं है। हैर खोजा मीचे पर रोगनी लिए हाजिर मिलेगा। मगर गुप्त भाग बेहोरी की हालत में उसे किम तरह

माप बेफिक्र रहें। वस मुरग की चाभी इनायत कर।

मौलवी साहब ने उठकर मस्जिद के बाईं घोर के चतुसरे वे पीछेवाले भाग में घाबर एक बन्न का पत्थर किमी तरकीब से हटा दिया। वहां सोढ़िया निबल भाई। बुढ़िया उसी तग तहखाने के रास्ते उसी वाले बस्न से भाष्छादित सम्बी स्त्री के सहारे एव बेहोग स्त्री को नीचे उतारन लगी। उनके चले जान पर मौलवी साहब न घोर स च्छर-उधर देखा घोर फिर किसी गुप्त तरकीब से तहखाने का द्वार बंद कर गिया। तहखाना फिर बन्न बन गया।

चार द्वार कानूसों में बाफूरी बसियां जल रही थीं घोर वमरे की दीवार मुनाबी साटन के पनों स छिप रही थी। फर्श पर ईरानी वालीन बिछा था त्रिमपर निहायत नफीम घोर मुगरग काम बना हुआ था। कमरा सूब सम्बा धोड़ा था। उसमें तरह-तरह के ताब कुलों के गुलदस्ते मजे हुए थे और हिना की सेज मटक स बमरा मटक रहा था। वमरे के एव बाजू में महमन का बालिनमर उधा गहा बिछा था त्रिसपर कारखोदी का उमरा हुआ

बहुत ही सुगन्धुमा काम था। उसपर एक बड़ी-सी मसनद लगी थी जिसपर मुनहरी खमो पर मोती की भांति का चमोवा बना था।

मसनद पर एक बलिष्ठ पुरुष उत्सुकता से किंतु झलसाया बठा था। इसके वस्त्र अस्त-व्यस्त थे। इसका मांती के समान उज्ज्वल रंग कामनेव को मात करन वाला प्रदीप्त सौन्दर्य भ्रुवदार मुखे रसभरां भाखें और मदिरा से प्रस्फुरित होठ कृष्ण और ही समा बना रहे थे। सामने पानदान में मुनहरी गिलौरिया भरी थी। इनदान में शींगिया सुबक रही थी। धराब की प्याली और सुराही क्षण-क्षण पर खाली हो रही थी। वह सुगन्धित मदिरा मानो उसके उज्ज्वल रंग पर मुनहरी निखार ला रही थी। उसके कंठ में पन्न का एक बड़ा-सा कठा पड़ा था और उगतियों में हीरे की भ्रगूठिया बिजली की तरह दमक रही थी। यही लाखों में दगनीय पुरुष मसनद के प्रख्यात नवाब काजिदघनी शाह था।

कमर में कोई न था। वह बड़ी आतुरता से किसीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। यह आतुरता क्षण-क्षण पर बढ़ रही थी। एवाएक एक क्षटका हुआ। बादशाह ने खाली धजाई और वही लम्बी स्त्री-मूर्ति सिर से पर तक काले वस्त्रों से धारीर को सपेट माना दावार फाड़कर धा उपस्थित हुई।

'धोह मेरी गवरू ! मुमन तो इतजारी ही में मार जाता ! क्या गिलौरिया भाई हो ?

'म हुजूर पर कुर्बान ! इतना बहकर उसने वह काला लबादा उतार जाता। उफ़ ग़बब ! उस काले आवेष्टन में मानो मूय का तेज छिप रहा था। कमरा घमक उठा। बहुत बड़िया घमकील विनायती सादन की पोशाक पहने एक सौन्दर्य की प्रतिमा इस तरह निकल भाई उसे रास के ढर में से अगार। इस अग्नि-सौंदर्य की रूप रेखा कसे बयान की जाए ? इस अंगरेजी राज्य और अंगरेजी सम्मता में जहां क्षणभर घमककर बादलों में विलीन हो जानेवाली बिजली सड़क पर अघाचित डेरों प्रकाश बछरती रहती है इस रूप-ज्वाला की उपमा क्या डूडी जाए ? उस अघकारमय रात्रि में यदि उसे लड़ा कर लिया जाए, तो वह कसौटी पर स्वर्ण रेखा की तरह दिप उठे। और, यदि यह दिन के ध्वलंत प्रकाश में खड़ी कर दी जाए तो उस देखन का साहस कौन करे ? किन भांसी में इतना तेज है ?

उस सुगंधित और मधुर प्रकाश में मदिरा रजित नत्रों से उस रूप-ज्वाला को देखने ही बाजिदमली की घासना भङ्क उठी। उन्होंने कहा—रूपा जरा नज़लीक आओ। एक प्याला गीराखी और अपनी नगाई हुई धवरी पान की वीडिया ले ता। तुमने तो तरसा-तरसावर ही मार डाला।

रूपा आगे बनी सुराहां से धाराव उडेमी और जमीन में घुटन टेककर आगे बढ़ा दा। इसके बाद उमने चार सोन क बर्क-लपेटी वीडिया निभालकर दाद शाह के सामने पग की और दस्तबस्ता अज की—हुजूर की खिदमत में लौंडी वह ताहफा से आई है।

बाजिदमली ग्राह की बाख़ खिल गई। उन्होंने रूपा को धूरकर कहा—वाह! तब तो आज रूपा ने सकेत किया। हैदर खोजा उस फूल-सी मुर भाई कुसुम-बली को फूल की तरह हाथों पर उठाकर पान गिलौरी की तरतरी की तरह बादशाह के हवरू कासीन पर डाल गया। रूपा ने बाकी अदा से कहा—हुजूर को आदाव!—और चन दी।

एक सौन्ह वष की भयभीत मूर्च्छित असहाय कुमारी बाजिदा अकस्मात् आल पुलने पर सम्मुख शाही ठाठ से गजे हुए महल और दैत्य के समान नर पंगु को पाप-वासना से प्रमत्त देखकर क्या समझी? कौन अब इस भयानक दण की कल्पना करे। पर वही दण हाथ में आने ही उस बालिका के सामने आया। वह एकदम शीतर करके फिर से बहोश हो गई। पर इस बार शीघ्र ही उमकी मूर्च्छा दूर हो गई। एक अतय माहम जो ऐसी अवस्था में प्रत्येक जीवित प्राणी में ही जाता है उस बालिका के शरीर में भी उदय हो आया। वह निमटकर दठ गई और पागल की तरह चारों तरफ एक दृष्टि डालकर एकदम उस मत्त पुरुष की धार देखन लगी।

उस भयानक दण में भी उम विशान पुरुष का सौन्ध और प्रमा देखकर उम बुद्ध साहस हुआ। वह बोली तो नहीं पर बुद्ध स्वल्प होने लगी।

नवाव जोर से हस दिए। उन्होंने गने का वह बहुमूल्य बटा उतारकर बाजिदा की ओर फेंक दिया। इसके बाद वह नत्रों के तीर निरंतर फेंकते बठ रहे।

बाजिदा ने बटा दखा भी नहीं शुभा भी नहीं वह बसी ही सिन्डुठी हुई

वसी ही निनिमप हृष्टि न भयभीत हुई नवाब का देखता रही ।

नवाब न दस्तक दी । दो यात्रिया दस्तबस्ता धा हाजिर हुई । नवाब न हुकम किया इस गुस्ता करकर और सज्जनरी बनाकर हाजिर करो । उस पुरुष पापारा नो अपेगा स्त्रियों का ससग गनीमन जानकर बालिवा मत्रमुग्ध-सी उठ कर उनके साथ चली गई ।

इसी समय एक खाज न धाकर घाज की—पुत्रात्रद । रजाडोट उतरम साहब बहादुर बडी दर स हाजिर है ।

उतस कह दा धभी मुलाकात नहा हागी ।

भालीजाह ! कलकत्त से एक जहरी

दूर हो मुर्दार ।

सोजा चना गया ।

लखनऊ के खास चौक-बाजार की बहार देखन योग्य थी । गाम हो चली थी और छिड़काव हो गया था । इक्को और बहलियों पालकियों और घोडा का घजीब जमघट था । घाज सो उजाड भनीनाबा का रग ही कुछ और है । तब यही रौनज चौक का प्राप्त थी । बीच चौक मे रुपा का पाना की दूकान थी । पानूसो और रगोन भाडों स जगमगाती गुनबी रोगनी क बीच स्वच्छ बोटल म मरिया की तरह रुपा दूकान पर बठी थी । दो निहामत हसीन लौडिया पान की गिलीरिया बनाकर उनम सोने क बरु सपेट रहा था । बीच-बीच में घठ मलिया भी कर रही थी । घाजकन क कलकत्त-लिली क रगमचा पर भी एसा माहक धार धारकक हय नही दर पढता जसा उन समय रुपा की दूकान पर था । घाजकों का नाड का पार न था । रुपा खाम-खाम ग्राहवा का स्वागत कर पान द रही थी । बाल म खनाखन घाफिया स उमकी गगा-जमनी काम की तनरी भर रही थी । व घाफिया रुपा का एक घना एक मुसकराहट—नेवन एक कटान का मोल था । पान की गिलीरिया सो लोगा नो घाते म पडती थी । एक नाजुध-घदाज नवाबघाटे तामजाम म बठ अपने मुसाहवा और बहारों के झुरमुट के साथ घाए और रुपा की दूकान पर तामजाम रोका । रुपा न सलाम करने कहा—मैं सन्के साहजाना साहब जरी वादा की एक गिलीरी बकूल फर्मावें ।—रुपा ने लौडो की तरफ इगारा किया । लौडो सहमतो हुई सोन की

रकबी में पाच-सात गिलौरिया लेकर तामब्राम तक गई। साहूजादे ने मुसकराकर दो गिलौरियां उठाईं और एक भुट्टी भर्साफियां त्ततरी से डालकर भागे बढ़। एक सासाहब बालों में मेंहदी लगाए दिल्ली के कसली के जूते पहने तनजब की बपकन कम तिर पर लमदार ऊंची टोपी लगाए भाए। रूपा न बड़े तपाक से कहा—अरूपा सासाहब ! आज तो हजूर रास्ता मूल गए ! घरे कोई है, भाप को बठने को जगह दे। भरी गिलौरिया तो लामो।

सासाहब रूपा के रूप की तरह छुपचाप गिलौरिया के रम का घूट पीने लगे। थोड़ी देर में एक मधेड मुसलमान अमीरजादे की शकल में भाए। उन्हें देखते ही रूपा ने कहा—घरे हजूर त्ततरीफ सा रहे हैं ! मेरे सरकार ! भाप तो ईद के चाद हो गए। कहिए खराफियत है ? भरी ! मिर्जा साहब को गिलौरिया दी ?—ततरी में खनाखन हो रही थी और रूपा का रूप और पान की हाट खूब गरमा रही थी। ज्यो-ज्यो मधकार बढ़ता जाता था त्या-र्यों रूपा पर रूप की दुपहरी चढ़ रही थी। धीरे-धीरे एक पहर रात बीत गई। साहबा की भीड़ कुछ कम हुई। रूपा अब सिर्फ कुछ चुन हुए भरी साहबों से घुल घुलकर बातें कर रही थी। धीरे-धीरे एक अजनबी आदमी दूकान पर आकर खड़ा हो गया। रूपा ने अप्रतिम होकर पूछा

‘आपको क्या चाहिए ?

‘आपके पास क्या-क्या मिलता है ?

‘बहुत-सी चीजें। क्या पान साइएगा ?

क्या हर्ज है।

रूपा के सबेत् से दासी बालिषा ने पान की ततरी अजनबी के धागे धर दी।

दो बीडियां हाथ में लेते हुए उसने कहा—इतनी कीमत क्या है बीसाहबा !

जो कुछ जनाब दे सकें !

यह बात है ? तब ठीक जो कुछ मैं लेना चाह वह मूंगा भी ! अजनबी हसा नहीं। उसने भेदभरी दृष्टि से रूपा को देखा।

रूपा की भृकुटी उर्रा टेढ़ी पड़ी और यह एक बार अजनबी को तीख दृष्टि से देखकर फिर अपने मिर्जा के साथ बातचीत में लग गई। पर बातचीत का रंग जमा नहीं। धीरे-धीरे मिनगण उठ गए। रूपा ने एकांत पाकर कहा

‘क्या हजूर का मुक़दे कोई सास काम है ?

‘मेरा तो नहीं मगर कपनी बहादुर का है ।

रूपा नाप उठी । वह बोसी—कपनी बहादुर का क्या हुकम है ?

‘भीतर चलो तो कहा जाए ।

मगर माफ़ कीजिए—घ्रापपर यकीन कस

‘ओह ! समझ गया । बड़े साहब की यह चीज़ तो तुम शायद पहचानती ही होगी ?

यह कहकर उन्होंने एक झगूठी रूपा को दूर स दिया दो ।

समझ गई ! भाप भदर तयारीफ़ साइए ।

रूपा ने एक दासी को अपने स्थान पर बठाकर अजनबी के साथ दूकान के भीतरी कक्ष में प्रवेश किया ।

दाना ब्यक्तियों में क्या-क्या बातें हुई यह तो हम नहीं जानते मगर उसके ठीक तीन घंटे बाद दो ब्यक्ति काला सबाना छोड़े दूकान से निकले और किनार सगी हुई पालकी में बठ गए । पालकी धीरे-धीरे उसी भूखंडवाली मस्जिद में पहुंची । उसी प्रकार मौलवी ने कब्र का परतार हटाया और एक मूर्ति न कब्र के तहखाने में प्रवेश किया । दूसरे ब्यक्ति न एकाएक मौलवी को पटखकर मुक़े बाध ली और एक संकेत किया । अणभर में पचास सुसज्जित काली-काली मूर्तियां आ खड़ी हुई और बिना एक शब्द मुह से निवाले धुपचाप कब्र के अन्दर उतर गईं ।

अब फिर बलिये अगस्त्ये क उमी ग-मदिर में । मुष्-साधना से भरपूर वही कष भाव सत्रावट सतम कर गया था । सहृयो उल्कापात की तरह रगोन हाशियां बिल्लीरो फानूस और हजारों भाड सब जल रहे थ । तत्परता से कितु नीरव बालिया और गुलाम दौड़-धूप कर रहे थ । अगिनत रमणिया अपने मद भर होंठों की प्वालिया में भाव की मन्त्रिा उठेल रही थी । उन सुरीन रागों की बौद्धाओं में बठ बान्शाह वाजिदमला शाह धाराबोर हो रहे थ । उस गायनों म्मा में मातूम होता था कमरे के जठ पनाथ भी मतवाले होकर नाच उठेंगे । नाचनवालयों के ठुमके और मुरुर की ध्वनि सोते हुए यौवन से ठोकर मारकर कहती थी—उठ उठ ओ मतवाले उठ !—उन नर्तकियों के बड़िया चिकनगोबी

के सुवासित दुपट्टों से निकली हुई सुगंध उनके मृत्य-वेग से विचलित वायु के साथ पुन मिलकर गदर मचा रही थी। पर सामने का सुनहरी फण्वारा जो स्थिर ताल पर वीस हाथ ऊपर फेंककर रंगीन जलविन्दु राशियों से हाथा-पाई कर रहा था देखकर कनआ बिना उछले बैस रह सकता था।

उसी मसनद पर बादशाह शाजिदमली बाह्र बटे थे। एक गंगा-जमनी नाम का भलबेला बहा रहा था जिसकी खमीरी मुदवी तबाक जसकर एक घनासी सुगंध फला रही थी। चारों तरफ सुदरियों का झुरमुट उन्हें घेरकर बटा था। गभी अधनगी उमल और निर्लज्ज हो रही थी। पाम ही सुराही और प्यालियां रखी थी और बारी-बारी से व उन दुर्लभ हाटा की चूम रही थी। प्राया म पी-पीकर वे मदरिया उन प्यालियों को बादशाह के होटी में सगा देती थी। यह भाषें बन्द करके उन्हें पी जाते थे। कुछ सुदरिया पान लगा रही थी कुछ बसवेले की निगाली पब्र हुई थी। दो सुदरिया दोनों तरफ पीक्यान लिए खड़ी थी जिनमें बादशाह कभी-कभी पीप गिरा देने थे।

इस उल्लसित आभास के बीचोबीच एक मुरभाया हुआ पुष्प। कुचली हुई पान की गिलौरी। वही बानिवा बहुमूल्य हारे-खचित वस्त्र पहन बादशाह के विलुप्त बख में सगभग मूर्च्छित और प्रस्त-व्यस्त पड़ी था। रह रहकर साराब की प्याली उसके मुत्त म लग रही थी और वह खाली कर रही थी। एक निर्जीव दुगाल की तरह बान्शाह उसे अपने बदन से सटाए मानो अपनी तमाम इन्द्रियों को एक ही रस म साराबोर कर रहे थे। गभीर आधी रात बीत रही थी। सहमा इसी आनद-बर्षा म विजनी गिरी। बस के उमी गुप्त द्वार को विनीत कर सणभर म वही रूपा वाले भावरण स नम गिम डबे निबल घाई। दूसरे दाख म एक और मूर्ति बम ही भावेष्टन म गुप्त बाहर निबल घाई। सणभर बाद बोना ने अपने भावेष्टन उठार केंके। वही प्राग्नि गिशा ज्वलत रूपा और उसके साथ गौराग कनल उटरम।

नतकियों ने एकत्र मनाचना-माना रोक दिया। बादियां साराब की प्यालियों निग बाठ की पुतली की तरह खड़ी की खड़ी रह गईं। केवल फण्वारा ज्यो का स्यों आनन् स उछल रहा था। बान्शाह यद्यपि विलुप्त ब्रह्मवास थे मगर यह सब देख वह मानो आधे उठकर बोले—ओह ! रूपा—दिवरिया ! तुम और तें—भरे दोस्त बनम इस बस ? यह क्या मात्रा है !

आगे बन्द कर और अपनी सुस्त पोशाक ठीक करत हुए तनवार की झूठ पर हाथ रख बर्नत उतरत न बन्ग—कल आतीजाह की बन्गी म हाजिर हुमा या मगर

ओफ मगर इन बरत एम रास्त स ? ऐं माजरा क्या है ! भच्छा बठो हा ओहरा एफ प्याला मरे दोस्त बनस ने

माफ कीजिए हजूर ! इम वक्त मैं आन्दरेदुल कम्पनी सरकार के एक काम स आपकी सिन्मत म हाजिर हुमा हू ।

'कम्पनी सरकार का काम ? यह काम क्या है ? बठन हुए बाग्गाह मे वहा ।

'मैं तसलिये म भज किया चाहता हू ।

'तसलिया ! भच्छा भच्छा ओहरा ! धी वादिर ।

धीरे धीरे रुपा को छोडकर सभी बाहर निकल गइ । उस सौंदर्य-स्वप्न म भवशिष्ट रह गई अकली रुपा । रुपा को लक्ष्य करके बादशाह ने कहा—यह तो गर नहीं । रुपा ! दिसदवा ! एक प्याला । अपने हाथों स दो ता ।—रुपा ने मुराही से दरवाज उदेल लबालब प्याला भरकर बाग्गाह के हाठों से लग लिया । हाथ ! लखनऊ की नवाबा का वहा अगिम प्याला था । उसे बादशाह न आँसू बंद कर पाकर कहा—बाह प्यारी ! हा भव कहा वह बात मरे दोस्त

'हजूर को जरा रेडीहेंसी तक चतना पडगा ।

बाग्गाह ने उदमकर कहा—ऐं यह कंसी बात ! रेडीहेंसी तक मुझ ?

'जहापनाह मैं मजबूर हू काम एमा ही है ।

'इसका मतलब ?

मैं भज नहीं कर सकता । कल मैं यही ता भज करत हाजिर हुमा था ।

गरमुमकिन ! गरमुमकिन ! बादशाह गुस्से म हॉठ फाटकर उठ और अपने हाथ से मुराही म उदेलकर तीन चार प्याले गराव पी गए । धीरे-धीरे उस दीवार म एक-एक करके खालीस गोरे मलिक मगीन और किचें सजाए, बक्ष पुम प्राण ।

बाग्गाह देखकर बोले—मुदा की नमम यह ता दगा है ! कादिर !

'जहापनाह अगर खुशी स मेरी भर्जी कुबूल न करेंगे तो खून-खराब

होगी। कम्पनी बहादुर के गोरो ने महल घेर लिया है। भयं मही है नि सार
बार चुपचाप चले चलें।

बादशाह घम से बठ गए। मासूम होता है शरणभर के लिए उनका मसा
उतर गया। उन्होंने कहा—तुम तब क्या मेरे दुश्मन होकर मुझे कद करने
आए हो ?

मैं हुजूर का दोस्त हर तरह हुजूर के भाराम और फख्त का खयाल
रखता हूँ और हमेशा रखूंगा।

बादशाह ने रूपा की ओर देखकर कहा—रूपा ! रूपा ! यह क्या माजरा
है ? तुम भी क्या इस मामले में हो ? एक प्याला—मगर नहीं भय नहीं
अच्छा सब साफ-साफ सब कहो ! कनल मेर दोस्त नहीं-नहीं अच्छा
कनल उटरम ! सब खुलासावार बयान करो।

सरकार ज्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता। कम्पनी बहादुर का सात परवान
सेकर खुद गवर्नर जनरल के अंदर सेक्रेटरी तथरीफ साए हैं वे आलीजाह से कुछ
मस्वरा किया चाहते हैं।

‘मगर यही।

यह नामुमकिन है।

बादशाह ने कनल की तरफ देखा। वह तना खड़ा था और उसका हाथ
सलवार की मूठ पर था।

समझ गया सब समझ गया। यह कहकर बादशाह कुछ देर हाथों से
भाखें धापकर बठ गए। बदाजित् उनकी मुन्दर रसभरी भाखों में धामू भर आए।

रूपा ने पास आकर कहा—मेर खुदाबद बादी

हूट जा ऐ नमकहराम रबील बाजारू औरत !

बादशाह ने यह कहकर उसे एक सात लगाई और कहा—तब चलो !
मैं खसता हूँ। खुश हाफिज !

पहले बादशाह पीछे कनल उटरम उसके पीछे रूपा और सबके भत में
एक-एक करके सिपाही उठी दरार में बिलीन हो गए। महल में किसीको कुछ
मासूम न था। वह मूर्तिमान् संगीत वह उमडता हुआ आनन्द-समु सदा के
लिए मानो किसी जादूगर ने निर्जीव कर दिया।

कसकते के एक उजाड़-से भाग में एक बहुत विंगल मकान में बाजिन अली शाह नज़रबन्द थे। ठाठ लगभग वही था सऊहों दासियां बादिया भी वेश्याए भी हुई थी पर वह लखनऊ का रंग नहीं।

खाना खाने का वक्त हुआ और जब दस्तरखान पर खाना चुना गया तो बादशाह ने खख-खखकर फेंक दिया। भगरज भफमर ने धबराकर पूछा—खाने में क्या नुस्स है ?

जवाब दिया गया—नमक खराब है।

नवाब कैसा नमक खाते हैं ?

‘एक मन का डसा रसकर उसपर पानी की धार छोड़ी जाती है। जब घुलते घुलते छोटा-सा टुकड़ा रह जाता है तब बादशाह के खाने में वह नमक इस्तमास होता है।

भगरज अधिकारी मुस्कराता हुआ चला गया। क्यों ? भोह ! सब लोगों के समझने के योग्य यह भद नहीं।

उसी रस रंग की दीवारों के भीतर अब सरकारी दफ्तर खुल गए हैं, धीरे-धीरे वह भमर कसरबाग मानो रड्डुए की तरह खड़ा उस रसीली रात की याद में घिर घुन रहा है।

बुलबुल हज़ारदास्तान

बुलबुल हज़ारदास्तान कहानी उद्दे लेखकों के लिखे लघु पर आधारित है। इसमें मुगलों के अंतिम चिरम के गुन होने की दृश्यी दास्तान है।

ठीक साढ़े तीन बजे सारी दिल्ली सो रही थी। साल बिले के बासुदखाने की ऊपरी मञ्जिल में गंगा-अमनी पिञ्जरे के भीतर से जिसपर कारघोबी की बस्तनी खड़ी थी बुलबुल हज़ारदास्तान ने अपनी कूब सगाई। रात के सन्नाटे में उस मुरीसे पसी का यह प्रकृत राग रात की विदाई का सूषक था। कूब मुनते ही बहराम खां गोलन्दाज बल्मा पदता हुआ उठ बटा और तोप पर बत्ती दी। मोती मस्जिद में अज्ञान का शब्द हुआ। चम्पी-मुक़्कीवास्तिया शाही मसहरी पर आ हाज़िर हुई और धीरे धीरे बादशाह के पाय दबाने लगी। बादशाह बहादुरशाह 'जफर' की नीद खुली। वह तुरन्त उठ खड़ा हुए निर्यकृत्य से निपट और मस्जिद में आ तमाज में सम्मिलित हुए। सबके साथ नमाज़ पढ़ी और फिर बड़ीफा पढ़ने लगे।

सूर्योदय के साथ ही वह मस्जिद से निकले। चारा और मुजरा करन वाले सब थे। दरवाज़ पर पहुँचते ही हाथ में मुनहरा बल्सम लिए असोलनी ने आगे बढ़कर पुकारा—पीरो मुगद हुबूर आनी बादशाह सलामत उम्राराज !—तीन बार यह वाक्य उसने घोषित किया इनके बाद ही दरवारी गण अदब से भूके एक सम्मिलित ममर शब्द हुआ—तरबिकए इकवाल दराज उम्र !—बादशाह न दीवाने परहृत में प्रवेश किया असीलें अदब से मिर भूकाए खड़ी थीं। भागन में एक मुमज्जित तख्ता विद्या आ बादशाह उसपर बठ गए। जसोनिनी दारीगा दोनो हाथा में अतनम खड़ी मुक़्किया लिए आ हाज़िर हुईं। गुस्तखाने के दारोगा न सामन आ मिर भकाया। बादशाह उठकर गुस्त करने बस लिए।

जौनपुरी खली मुग़िधत वेसन अमेनी गब्बो मातिया बेला जुही-मुलाज के सेन बोतला में भरे तरतीब से रमे थे। दाकाव में एक और ठग और दूसरी

घोर गर्म पानी भरा था। धादा बे लाटे और सोने की झुटिया जगमगा रही थी। गुस्ल हुआ। बादशाह पोगाक के कमरे में चले गए। इबाजा हसन बग दारोगा ने आकर आगव बजाया। उसने लखाऊ की बिनन का कुर्ता दोनों आर मुकमे घुटिया मटठ का चौड़े पायत का पायजामा जिसमें दिल्ली का कमरबन्द पड़ा था—हाजिर किया। बादशाह ने पोगाक पहनी। मसमसी कपल पहनी।

अब गमीमखान का शरागा आ हाजिर हुआ। उसने सिर में तेल डाला कथा किया कपड़ों में इत्र लगाया। बादशाह तस्बीह खाने में आए माला फरी और हुआए पत्नी; फिर दीवान खिलवत में चले गए। इबाखाने के मुन्तजिम ने आगे बढ़कर बोनिश की और हकीम अहसन की सौत्र-मुहरबन्द शीशिया पेश की। मुहर तोड़ी गई और याकूबी की प्याली तयार की गई। तभी खवास ने धादी की तस्वीरी में छिलकों समेत दो सोने भुन घन पेश किए। बादशाह ने याकूबी की प्याली पी फिर घना स मुह साफ किया और बेगमी पान की एक गिलौरी खाकर मिटटी से कागड़ी हुकमे को मह लगाया।

इतने ही में खबरों का अफसर आ उपस्थित हुआ। रातभर की खबरें सुनाई गईं। बादशाह ने पान की एक और गिलौरी खाई और उठकर दीवाने आम को चले।

बादशाह तस्त पर बठ। प्रत्येक विभाग के अधिकारी तथा अमीर उमरा हाथ बांधे नीची नजर किए चुपचाप निश्चल खड़े थे। नबीब ने पुकारा—जल्लेइलाही बरामद बद्-मुजर अदब से!—यह मुन्त ही प्रत्येक अमीर सत्मता हुआ आग बना—बादशाह की बोनिश की और हटकर पीछे अपने स्थान पर आ खड़ा हुआ। नबीब ने अमीर का रैसियत का अनुमार उनकी विरद बलानो। सब दरबारी मुजर और बोनिश की रस्म पूरी कर चुके तो बादशाह ने एक मृदु मुस्कान के साथ कृपापूर्ण दृष्टि से सबकी ओर देखा और पर्माया—आज हमन एक ग़डल बही है उसका पहला घेर पंग करता हू

यारे बेरीना' है पर रोड है बह यार नया।

हर सितम उसना नया उसका है हर प्यार नया।

दरबार में अयुक्त कपड़ों का एक घोर उठा—मुमानअल्ता बलामुलमनुफ मरुकुलव नाम !

बादशाह ने भागे ग़ज़ल पढ़ी—

मई धवाअ का है बामे बसा^१ तुरए^२ पार ।
 रोख है एक न एक उसमें गिरफ्तार नया ॥
 तेरो ही^३ में है 'नहीं' और 'नहीं' में ही ।
 तेरा इकरार मया है तेरा इकार मया ॥
 कसे बदव विल आजार^४ को विल हमने दिया ।
 रोख है अब नया रोख एक आजार मया ॥
 क्या क्रयामत है सितमगर तेरो तबे छराम^५ ।
 फिनना^६ हर घाम^७ पर उठा बमे रफ्तार^८ नया ॥
 करे वो किसकी बवा देखते हैं रोख तबोव ।
 तेरे इस नगिसे बीमार का बीमार मया ॥
 फरे इसमें 'अफर' विल का ओ सौदा फिर आय ।
 एक मौजूद है उसका खरोवार मया ॥

ग़ज़ल के हर शेर और हर मिसरं पर दरबार भ हलचल मध गई और बड़-बड़कर सारोफें हुई ।

इस वक़्त शाही दरबार में बादशाह के पीर मौलाना फखर के पुत्र मिया कुतुबुद्दीन भी उपस्थित थे । वह बड़ भालिम समझे जाते थे । मिया कुतुबुद्दीन के पुत्र मिया नसीरुद्दीन उफ़ काले साहेब को बादशाह ने अपनी शाहजादी ब्याह दी थी । इनके प्रतिरिक्त शाह गुलाम हसन चिस्ती एक पढ़ूचे हुए महात्मा भी दरबार में थे । इन सबके बादशाह की बेवसी और दर्द से मरी हुई ग़ज़ल में उनकी मजबूरिया को साक्षात् देखा तथा दाएँ दी । मुमान अल्साह कहा और बारम्बार कत्तामुलमनूक मल्लुधुलकत्ताम कहा ।

अभी यह बाहवाही हो ही रही थी और शाही दरबार एक मुशाहर का रूप धारण कर चुका था कि एक चीत्कार ने सबका ध्यान भंग कर दिया । एक भगन रोती-चीखती दरबार में घुम आई और बादशाह सलामत के ख़बर जा कर वह धरती धूमकर और हाथ जोड़कर बोली

१ भांगल का जाण २ जुल्फ ३ रिफ को दुखाने वाला ४ खपने की धा ५ भगवा ६ बदम ७ चलने का समय

‘जहापनाह मिर्जा महमूद मेरी दा मुगियां से गए ।

सासजिले के बादशाह भगन की फरियाद से सिन्न होकर बोले—रो मत
आ मुगियां घाठी हैं ।

भगन जमीन चूमती हुई उल्टे पर सौट गई साहजादा मिर्जा महमूद की
दरवार म तलबी हुई । घह घासों नीची किए आ सडे हुए ।

‘भरे महमूद’ गरीब भगन की मुगिया हाय हाय ! बाशाह की घासों
कसणा से गीली हो गई बाणी गद्गद हो गई । उन्होंने घली महमूद दारोगा
की घोर दृष्टि फरी घोर हुकम दिया—दिलवा दो घोर एक बहती ।

मिर्जा मुहमूद ने घरती चूमी । घोर दारोगा ने उन्हें सग ले जाकर तीन
मुगिया भगन को दिलवा दी ।

तोशाखाने के घडिमान ने दस्त बजाए । विभागों के अधिकारियो ने अपने
अपने बस्ते खोलकर घावयक भाजाए ली । दस्तखत कराए । ग्यारह बजते ही
बादशाह उठे । घोवदारा ने ऊँचे स्वर म जय-जयकार किया । रगमहल के लिए
बसोलिनी दण्ड लिए आगे बदा घोर पुकारकर कहा—तरककीए इकवास
दराब उन्न !—महल म सब सावधान हो गए । अब आगे आगे बादशाह घोर
पीछे असोलनिया बहारनिया कमीरनिया हब्बाने तुकने मोरदल करती चलीं ।
बीच-बीच में पुकारती—अब होशियार ! अदब-होशियार !

महल मे बड़ी वेगम ने सडे होकर ससाम किया । घमीरों की सातूनों
घोर साहजादिया न भी ससाम किया । बादशाह घासन पर बडे । सबको
बठने का हुपम दिया । अब कमीरन महताब ने जरबफ्त घोर कमस्बाव के दो
कसनों की मुहर तोड़ी । वेगम ने अपन हाय से भण्डा तयार किया । चांदी की
सुराही से जस लिया घोर ससनऊ की गगा-जमनी ठाठरी में पेश किया ।
बादशाह ने भण्डा लिया । वेगम ने पान की गिलीरी बना नीचे घादी घोर
ऊपर सोन का घक सगा पेश की । इतन में महताब भाई अदब से झुककर
निवेदन किया—भोजन परसा जाए ?

हुकम हुमा—अस्तु ।

रोजे के दिन । जामा मस्जिद पर घादमियों का जमघट । जाबजा लोग
गुट बनाए बडे ये । कहीं कुरान के दौर हो रहे हैं । कहीं कुरान सुनाने वाले

हाफिज एक दूतार का धायन सुना रहे है। कही मूफ्रे साधु ध्यान—धनसहक—की चर्चा कर रहे है। वही मतिर और हदीस की चर्चा हो रही है। दो आतिम इल्मी बाम कर रहे है। हम-बीग मज म ध्यान लगाए सुन रहे हैं। कही कोई चुपचाप समाधिस्थ थटा है। कही कोई तस्वीह घुमा रहा है। उगलिया पर तस्वीह के दान जसे-जस सरकते हैं। असे ही उरावे होर भी फडक रहे है। बहुत सेलानी इधर से उधर मटरगती कर रहे है।

इसी तरह गिन बीन गया। राखा खोलने का समय धा गया। प्रब सक्डो घाल बिबिध पयधानो से भरे बने धा रहे है। मुजाबिर लोग उन्हु लोगा म बांट रहे है। थडालु मदगृहस्थ घालो पर घाल भज रहे हैं। उनका घाठ नही है। शाही माल से भी भिन्न भिन्न स्वादिष्ट पकवाना से भरी बिनिया धा रही है। मुहल्ले मुहल्ले म मिठाइया से भरे घाल चल धा रहे हैं। किले की प्रत्येक बेगम प्रत्येक राजकुमारी अपन अपन घाल भज रही थी। शहर के सब अमीर उमरा अपनी अपनी हैसियत के अनुसार घाल भज रहे थ। उनका ताता लग रहा था। घाला की सट्या सेवडा तक पहुच रही थी। घौर यह रोज का काम था प्रत्येक अमीर बोगिंग करता था कि उसका घाल दूसरों से बडकर रहे। घाला पर भिन्न-भिन्न रंग के रेशमी रुमाल और उनबी जरी की भासरे भी एक एक से बड चढकर थ। मस्जिद म एस समय एक निराला समा बघा था।

साफिकिल से मकाने पकीरा का मानन भजा जा रहा था। शाहजाहिया और बगम इन काम म एक दूगरे म होर से रहा था।

भाज उात्तीसवा रोजा है। जा चाद की खबर समय पहले साएगा उसे शरई सागी के बिन्धात पर पान मानें और एर जाडा इनाम मिलेगा। इसी से सहरी के वाट धीम माननी-सवार जिनकी साइनिया पचाम-पचाम साठ-साठ बीम का धावा मारती थी तिली से चारा लिंगाभा को बल पडे और घाट घाट नौ-नौ मद्रिस पर जाकर पडाय गिग। साइनी-सवार गगल म शहर घाने कोसे पर म्बिया ममनिया पर टापक घाज गिन लिपने म कभी देर है पर साखो घाखें घागाण को साध रहा है।

मूयास्त हुषा बाग्याट सलामठ दीवाने घाम का छत पर धा रौनक अफ रोज हुए। यही भाज हफ्तारी रोजा खोला जाएगा। कार-बोरे मटके साभी सोधी सुराहियां कागडी घादपोर पकिनया म घुन रते हैं। धुले धलाए। बडे

बड़े हठा म जस्त की कुन्दिया और मरफन मताइ और दूध स भर रख है । फानम सरदूख सिउ दागान का बफिया घाना में झारला है । फिर दुनिया भर की मिठाया कचौरिया मनोम तायना सम क बाज कनी बडे पुन किया दान्वा विठियों म नजाय रख है । परन्तु आज हमार पर किनीकी नबर नगी है—नगर है—बाग पर । बन बाग पर ।

बागान न मरु बाघर नमात्र पना । और बाग को दान उठ खड हुए । चारा पार एण मरु मबर दान मरु । कठों न निक्ता—मस्ता—विमिल्लाह!—साते म पाव भुदरे एक दाडा दा पान गुलबन् के एक पान जरबन्त का नौबूत है । जा सबसे पत्रन पाव देखना उस यह पुरस्कार मितया ।

घाबिर बाग सिताई दिया । म्हा या र्द का बाग ! म्हा जवान ई की । मुजरे धारम्भ हुए । जा सामन घाना भुक्कर सनाम का । साहीरा दरवाज स म्हाए तापे दगी । नौबउखान पर घौस पर चोब पना । जाना मम्बिद क होज पर बतानु गोने छेने गृहर को ई की खबर दिन गे । और साणे दिन्नी ई की सदाय म सतमन हो गई । इ की सुधिया ता मम्बे रोज ही शुरू हो चुकी थी । पर माफ किए गए थ । कमर दासान भगई दरौषा पर सफा का गई था । फग घाए जा चुके थ । श्रिवा और घाबिना की बाग थी । काम की भीम स होश न था । अयेनगाहा दून वाता का दूरान पर साहक टूट पडत थ । मिथवा घर-घर टूट खा थी । सातने घानी कामन बागदों का ह्जार बूडिया म झारला कर चुका था । मनिहारिया दाडा म दिम्मा का घड जमाए पान का गिलीटिया कचरला हु ठनक स बूडिया पत्रनाता और गृहे इनाम मता जा छा थी मत्तानान हो रहा था । घर घर भानन-उल्ब मना जा रह थ । बन्वा की सुनी का किना न था । म्बका नद बस्र दिन थ । साम का हा नई बुनिया पहनी गई था । उन्हें ब लिखत रखकर साए थ । लडकिया घना गान-किनार का पायाके धन-धरक पृथा न सन्या थी । कल यह इ की पो-ध पहनेंग । उन्हें भूख-भान मता कहां ? बस पायाक को निहार रही हैं । मा घन को बहता है मगर लडका न मही लगाई है यह कह रहा है—घम्नी ! हमन सा मही रचार् है हमन खाना न खाया जाएगा ।

रात बाडा । घदान की बाग नुना पडी । गृहिणी हडबडाकर उठ खनी हुई घुग्हा जना और मिथवा पुगर आइ निकाली । घुन्ट पर मिथवा का पाना

थाया। प्रात की नमाज पढ़ा हुई और सिबया तयार। घर साफ किया, फर
 राग किया बपट बढ़ने। और मिया बीबी बच्चे सब चने ईदगाह की ओर।
 ते तो मिठाइयां खिलौने सरबारियां खरीद कर। अब ईदियां शुरू हुईं
 किसीको पाच किसीको एक रुपया किसीको छठनी चवनी दुमनी। दि
 भर चला यही सिलसिला। काम को भाई अपनी छोटी बहनों के घर और ब
 अपनी बेटियों के घर ईदियां देने गए।

मनहारिन घर म आई। घर में प्रवेश करते ही बहुधा ने खड़े हाकर मुच
 कर सलाम किया। बेटियों ने सलामें की। मनहारिन मालकिन के पास पहुंची
 उसने गदन झकावर मुस्कराकर स्वागत किया। मा का समेत पात ही बहू ने
 सिबया बचौरिया मिठाई मनहारिन के सामन रखी मनहारिन ने सामा
 कुल्ली की पानी पिया। बीबी ने दो बीटा पान बनाया। जर्दा दिया। मनहा
 रिन ने मिलौरिया मुह मे ठूसी और प्रसीस दी—बूढ़ गुहागनसाई जिएं
 बच्चे जिएं

बीबी ने आई रुपये बटुये मे निकालकर सामने रखे और कहा—सो
 भा अपना नेग।—मनहारिन ने पूछियां तो पाच पाने की ही पहनाई थी
 र इस बमत तिनकर पीछे हटी और कहा—वाह बेगम ! आई कैसे ?
 हमेगा तो इस खोटी से पाच मिलते रहे और इस बार तो भत्साह रख,
 गुन्हारी हसना समुराल से पहली बार आई है। इसकी ईनी भी लूगी।—बेगम
 न एक छठनी और बढ़ाई तो मनहारिन और बिगड गई उसन कहा—
 हये-हये ! सब खर्च तो पूरे हुए गुए मेरे ही दो रुपये बाट रह हो। ना, ना
 बड़ी बेगम तो बमी हुरजत करती ही न थी।—बेटिया-बहू सब घुप ! बेगम ने
 एक रुपया और चढ़ाया और कहा—बस करो भत्साह न चाहा तो बनरीद
 पर बसर निकाल दूगी।—मनहारिन ने कहा—ए बीबी ! गुन्हारी पूतियां
 के तुर्पस से बच्चों की ईद हो जाती है। सुदा सलामत रखे बुकिया का मा

यह हुई दिल्ली की ईद। अब थलिए साल किले म। चांद हो गया, इन
 बंट चुके। महला में रातभर घूम रही। इकतीस तोपों से चांद की सल
 हुई। मोदीखान तोराखाने के दारोगा अपने-अपने सामान की फिहरिस्त ब
 में पनेमान। साहजादियां बुबुगों की चांद का आदाबर्ब कर रही हैं। छह

रात रही तो किले से तम्बू और झोलदारियों के छक्के ईदगाह की ओर चले ।
 सामियाने तने तम्बू लगे डेरे पड़े । फौजदार सा फीलसाने के दारोगा
 भाए और हुक्म दिया—हाथी रगो !—मौलाबख्श हाथी रंगा गया। शाही सिलभत
 तयार हुआ । घाहजादियों भगमात चुबी-मैहदी में लगी हैं । चार बज ईद की
 तोप दगी । बादशाह जगे गुस्ल किया शाही पोशाक पहनी फिर मोती मस्जिद
 में आ नमाज़ पढ़ी और जवाहरखाने में तशरीफ साए । ताज पहना गले में
 मोतिया का हार । खासाबरदार ख्वाजा सराभों ने दस्तरखान बिछाया । बाद
 शाह ने एक चम्मच सिंदूरों और एक टुकड़ा छुहारा खाकर इफ्तार किया ।
 इसके बाद सूसा निवाला और मसूर की दाल । कुत्ली की पान खाया सबे
 हुए । रसखानियों ने पुकारा—भल्ला रसूल की भमान !—उरपचियों ने नफीरी
 बजाई । सवारी का हुक्म हुआ । बादशाह बाहर भाए । दोनों तरफ सशस्त्री
 फौजों ने सलामी दी । फौजदार सा ने हाथी लगाया । हथकियों ने हवादान
 लगाया । बादशाह हवादान में बैठ । बाजे बजने लगे और बादशाह दीवाने
 भाम में पहुच । भहतकारों न जोनिशों कीं । बादशाह हाथी पर सवार
 हुए । इक्कीस तोपों की सलामी छूटी । सलवारों की छांह और बाजों की
 धूमधाम में बादशाह किले से बाहर चले । पालकी में शाहजादे घोड़ों पर भमीर,
 बीच में बादशाह का हाथी भागे-पीछे फौज । शाही जुलूस ईदगाह की ओर
 चला । हुक्मे भाम की पुकार हुई—कोई प्रार्थी-दुस्तिया भाए, और अपनी
 विपता सुनाए !—लाहोरी दरवाज तक चांदी के फूल गरीबों और फरीरो को
 सुटाए गए । भागे का रास्ता तेज था । मकारा खत्म । खरात खत्म । मेला
 यही से शुरू । मुरई, गुम्बारे वन का घोडा तीतरी, किरती भीख जाने क्या
 क्या बिलौने बिक रहे हैं, बच्चे मचल रहे हैं ।

ईदगाह घाई । शाही हाथी रुका । बादशाह नाचे उतर और ईदगाह में
 प्रविष्ट हुए । तबवीर झारम्भ हुई । नीयत बांधी दुमाना पड़ा सलाम फरा
 और नमाज़ खत्म हुई । अब खुतबे का समय भाया । शाही हुक्म होते ही तोपों
 । खाने का दारोगा भागे बड़ा किरती में सिलभत के सात कपड़े और जडाऊ पर
 । तला इमाम साहेब को पेश किया गया । बनारसी दुपट्टा उनकी कमर में बांधा
 गया । सलवार कमर से लगाई गई । इमाम साहेब ने कुत्ले पर हाथ रखकर
 । खुतबा पड़ा । बादशाह का नाम भाते ही उपस्थित जन में 'घामीन' का भाद

छठा । धुतवा खरम हुआ । पचास रुपये नकद इनाम के बरूये गए । बादशाह हवागान में बठकर किले में आए ।

बादशाह दरबारे-खास में तख्त पर बठे कम्पनी के रजिस्ट्रार ने भागे बड़कर नज़र पेग की कोनिश की । फिर दूसरी भेंट हुई । इनाम बटे, बारह की तोप चली । बादशाह खानखान में आए । बेगमात ने भेंट दी भोजन का समय हुआ घोंस पर चोट पड़ी । देग का लगर सुटा ईद का खाना बटा ईदिया दी गई । बादशाह दस्तरखान पर बठे ।

रात हुई । ईद की रात । किले के चप्पे चप्पे कोने-कोने पर कदीलें जगमगा रही थीं । वृक्षों पर कुमकुमे लटक रहे थे मोती मस्जिद के कगूरों पर झवरख की लालटेरें जड़ी थी । नाच रग संगीत में साल विला चौपी की दुसहिन बन रहा था ।

सत्तावन की भाग दिल्ली में घाय घाय जल रही थी । दिल्ली में लूट-पाट और खून-खराबी का बाजार गम था । विद्रोही शहर में घुस आए थे । जामा मस्जिद में जगह-जगह चूल्हे बने हुए थे, सिपाही रोटियां पका रहे थे । कहीं घोड़ों का दाना दला जा रहा था । जानबा पास के अम्बार लग थे । शाहजहाँ की वह जगद्विख्यात जामा मस्जिद अस्तबल बन चुकी थी । गिरजाघर और अगरेजों की कोठियां लूटकर उनमें आग लगा दी गई थी । औरत-बच्चे जो जहाँ मिला काट डाले गए थे । अनेक अगरेज अफसर चेहरे पर कालिल पोत हाथ पर रग फटे बिपड़े पहन कहीं कहीं भाग रहे थे । सड़कों पर घोड़ों बगियों पालकिया और पदलों की भर मार थी । चारों तरफ से बन्दूकों की आवाज़ आ रही थी । घायल कराह रहे थे । सारे बाजार बंद गलियों में सन्नाटा सब घर बन्द । नित नया कोतवाल बदला जाता था । विद्रोही जहाँ-जो मिलता लूट लेते । शाही खजाने में खेला न था । न बादशाह का हुक्म कोई मानता था न शाहजहाँ की पूछ थी । गोलियों से शहर सडहर हो गया था । दीवाने-खास का संगममर का तख्त धूर धूर हो चुका था । अगरेजी स्कूल जला डाला गया था । लोगों के मकानों में गोलियां इतनी भरती थीं कि लठके उन्हें ढर-ढेर जमा करते थे । मेगजीन फटने से उसका सामान टोपी-बन्दूक, सलवार और संगीत सोग उठाकर अपने घर

ले गए थे। खतासिया ने रुपये के तीन सेर के हिवाब स तोल-तोल कर हृषियार से वे। ठांवे की चादरें रुपये की तीन सेर और बढ़क भाठ धाने की विक्रि थी। भन्धी से भन्धी भगरेजी किरच चार धाने में महंगी थी। सगीन को कोई प्रुछता भी न था। बिरोही नगर में किसीकी धान न मानते थे। न्हें सूट में गहरा माल हाथ लगा था वे जगलो में भाग गए थे। दाम गन पर दुकानदार मार टाला जाता था। सुटेरो के पास इतना सूट का माल था हो गया था कि वे उसके बोझ के कारण मूष ही नहीं कर सकते थे। रुपयों की मुहरें बदलवाते थे इसलिए उन तिनों दिल्ली में १६) की मुहर (२३) म विक्रि रही थी। ये भन्वेरगदी के भन्वेरे दिन थे।

सत्तावन की घाषी घाई और गई। भगरबी तोपों किरचों सगीना तथा नीति ने दिल्ली को भटियाभट कर लिया। गालियां बरस चुकी थीं। दिल्ली कले भ्राम हो रहा था। चादनी चौक म फव्वारे स घंटाघर तक फांसियां गी थीं। चारों ओर से सा-साकर लोगों को फांसी पर लटकाया जा रहा था। नमें बूढ़े भी य रोगी भी थ जवान और दुधमुहे बच्चे भी थ। सात परदों में हन बालिया मुह धाले बासों में धूल भोके अपने-अपने सगे-सम्बन्धियों की ां डूबती फिर रही थीं। बच्च भन्वा-भन्वा चिल्ला रहे थे। कोई रो रहा था। कोई पागल की तरह फटेहाल धूम रहा था। लोगों के घर सूट लिए गए और उनमें धाम लगा दी गई थी।

बादशाह सत्तामठ जल्नी-जल्नी नमाज पढ़ रहे थे घांखों से धामू बह रहे थे। एक छोटी-सी घट्टादी ने उनके पास आकर कहा—भन्वा हुआर भाप ह क्या कर रहे हैं ?—बादशाह ने कहा—बेटी खुदा से दुष्मा मांगता हू कि यह तरी मौलाद पर रहम कर।

उन्होंने सब सगे-सम्बन्धियों को बुलाया। एक-एक मुनी हीर सबको दिए और कहा—खुदा हाकिम ! वह सासकिले स निकते और सीधे निजामुद्दीन की दरगाह में पहुंचकर सीढ़ियों पर बठ गए। उनकी दाढ़ी म धूल भरती थी और बेहया उतरा हुआ था। कुछ ख्वाजासरा बहार और शुभचिन्तक साथ थे। तब नुनवे ही गुलाम हुसन किन्ती दरगाह में आए। उन्हें देखते ही बादशाह खतखिताकर हंस पडे। कहने लगे—यही हुआ जो होना था मगर मैं मुमत

सस्त का घालिरी बारिस हू । मुगलों का चिराग बुझ रहा है । खून-खराबी से क्या लाभ है इसीसे सात किल्ला छोड़कर चला भागा । मुल्क खुदा का है । जिसे चाहे दे ।—उन्होंने एक छोटा-सा सद्रुक पिन्ती को दिया और कहा—यह तुम्हारा सुपुर्द है इसमें हज़रत पैगम्बर की दाढ़ी के पाँच बाल हैं । ये भाज तक हमारी भमानत म थे—अब तुम सम्हालो और कुछ खाने की घर में हो तो ले भागो ।

चिरती ने कहा—बेसनी रोटी और घिरके की चटनी है ।

‘बस वही ले भागो ।

बादशाह ने एक रोटी खाई पानी पिया और हुमायूँ के मकबर में जा बैठे जहाँ हब्बसन ने उन्हें दाहजादा सहित गिरफ्तार कर लिया ।

वे उन्हें ले चले । खूनी दरवाजे के पास सवारी रोकी । हब्बसन ने दाहजादों को रख स उतरने का हुक्म दिया और चारों को गोली से उड़ा दिया । दाहजादे वहीं घुल में तड़पने लगे । तब हब्बसन ने तलवार से उनके घिर काट लिए और उन्हें बादशाह के सामने ले जाकर कहा—बहुत दिन से आपको णिजायत थी कि अंगरेजों ने आपको खिराज नहीं दी । यह सीजिए खिराज ।

बादशाह ने देखा और कहा—ये समूरी खानदान के बच्चे हैं जो मुर्खरु होकर आप के सामने आए हैं ।—और मुह कर मिया ।

वही बदनसीब दीवाने-खास था । बादशाह पर मुकदमा चलाया जा रहा था । सेपिटनेन्ट जनल हास प्रधान विचारक की कुर्सी पर ये और बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र अमियुक्त की जगह । दीवाने-खास की छतों सरज रही थीं और सम्भे नाँप रहे थे । अदालत ने बादशाह पर फर्द जुम लगाई

मुहम्मद बहादुरशाह सुमने कम्पनी बहादुर के पेन्शनयापता होने पर भी बगावत की और अंगरेज सरकार की प्रजा होने पर भी राजमन्त नहीं रखी । मुहम्मद बहादुरशाह सुमने ये अपराध किए हैं ?

बादशाह ने मुस्कराकर कहा—अहीं !

अदालत में गवाहों की बुलाने का हुक्म दिया । नागजात पड़े गए और बादशाह बेहोश हो गए ।

सरकारी बक़ील में कहा—अदालत को सिर्फ फंसला करने का अधिकार

है। दण्ड देन का नहीं। क्योंकि जनरल विलसन न अभियुक्त से वात्स क्रिया है कि उस प्राणायाम नहीं दिया जाएगा।

और अन्त में वह बदनसीब बूढ़ा बाग्दाह रगून के एक शानदार कदखाने में एक साचार लावारिस नदी की भांति मर गया।

रमजान का महीना आया। घर न के पाकीजा खसलत के आतिम थे न वह धान। कुछ मुसलमान मले-कुचले कपड़े पहने बैठे थे। दो-चार कुरान धरीफ का दौर कर रहे थे। कुछ विसिप्तावस्था में बढबढा रहे थे। रोना छोलने का समय हुआ तो वहाँ से कोई बाल नहीं आया। मुजावरों ने कुछ सजूरें और दासमोठ लोगों म बांट दी। किसीने कोई फल या साग-सब्जी के टुकड़े बांट लिए। सबके मुह पर हवाइयां उड़ रही थीं। दुदिन ने सबको अपने पजे में प्रस तिया था।

ईद की सुबह। एक गनी-सी सेज अधिमारी गली म एक टूटे-फूटे घर में एक शोकरस्त शाही परिवार के कुछ लोग बठे थे। गुमसुम। ये लोग नमाज से पहले ही इस घर के स्वामी साहजादा मिर्जा दिलदार शाह को गाड़ आए थे। वह दस दिन से बीमार थे। कम्पनी की सरकार उन्हें पाच रुपये माहवार पेन्शन देती थी। घर म इनकी बेगम और चार सन्तानें थी। तीन सड़कियां एक सड़का। दो सड़कियों की शादी हो चुकी थी एक बेटे साल की लड़की गोद में थी सड़का दस बरस का था। पति-पत्नी गोटा बुनते और पेट भरते थे। लड़का पढ़ा-लिखा न था प्यार से वह जिद्दी हो गया था। वह रो रहा था और कह रहा था—भरे बच्चा को बुला दो। हम ईगाह जाएंगे।—घर में न खाने को कुछ था न पकाने को भरतन। पड़ोसी गोटेवालों ने कुछ खाना ठरस खाकर भिजवा दिया। बेगम ने ठण्ठी सांस ली और बच्चा को वह दान का भोजन कराया खुद निराहार रही। घर घर ईद बनाई जा रही थी। सिर्बिया और पखाल बन रहे थे—पर यहा सन्नाटा था। बच्चा नई जूती और नये कपड़े मांग रहा था। बेगम घामू पीती जा रही थी और कह रही थी—बेटा तेरे बच्चा परदेश गए हैं वह भा जाए तो जूतिया और कपड़े मंगवाऊ।

‘तो पसे दो मैं खुश से आऊंगा।

‘बेटे मेरे पास तो एक भी पसा नहीं।

‘वाह मैं नहीं जानता मैं अभी पसे लूंगा ।

बेगम ने ठण्डी सांस भरी । उठी, पड़ोस से लगी खिडकी में जा खड़ी हुई ।
पड़ोसिन से कहा—बूधा सूतन में है मैं भीतर नहीं आ सकती जरी मेरी बात
सुन जाओ ।

वह भाई तो कहा—बुदा के लिए अपने बच्चे का उतरन कोई कुरता
और फूतों का जोड़ा हो तो एक दिन के लिए उधार दे दो । कल लौटा दूंगी ।—
उसकी धांखों से गंगा-जमुना की धार बह खली । पड़ोसिन ने फूती और अपने
बेगम को दिए । पर बेगम बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी ।

साल किस म सन्नाटा था—दीवाने-न्यास में बयूतरों का एक जोड़ा गुटरगूं
कर रहा था । दूर जमना नितारे कोई दह भरी भावाज में गा रहा था

बमबने में दम नहीं—खर मानो जान की ।

ए ‘अफर’ ठण्डी हुई दामशीर हिबुस्तान की ॥

फूलवालों की सैल

अग्नि मुगल बाग़ाह की हिन्दू-मुस्लिम देव्य भावना की सद्गुणी जिसमें उस बाग़ाह के लिए और बाग़ाह की अमंगल सन्तान के लिए हमें भाव्य बहाने पड़े हैं। अगर के बहुत जिनो तक मुगल का शर-उपर जिनो क खपहरों में अपनी प्रपय-चरनाओं के दरान करते रहे।

जुनुव की साठ दिल्ली की प्रधान दरानीय वस्तु है। जाननेवालों की दृष्टि में वह अनक भग्न म दिखाए स्तम्भ सड़ो न मालूम किस भगात की प्रतीसा र रही है। साल के तमाम जिनो में चाह भाषी हो या पानी गरमी हो या शदी जुनुव के यात्रियों का ठाठा लगा रहता है। हिन्दू और मुसलमान सब जगपर फिग हैं। दिल्लीवाले एक ही मनषते छसा हाते हैं, जरा बदती ने एग बदला हवा में नमी भाई, और जिल्लीवाले स्त्री-मुख्य छोटी-छोटी पुटलियों में सान की समझी बाप जुनुव पर चढ़ दौड़े। अजमरी दरवाजे के बाहर भाप मोटर-सारियों की फौज रात दिन सखी देखेंगे। ग्यारह मील के रास्ते का बचारे गांव पसे तक का भाव कर देते हैं। फिर मसा जुनुव क्या महगा रहा ? बाहरी विलानियों के लिए एक और भी मुखिषा है। ये सारियां रायसीना (नई दिल्ली) की प्रशस्त भाष के समान चमकती हुई और प्राचीन रोम-साम्राज्य की प्रति बिम्ब-रूपी धूम धुमौवस सड़कों पर जब दौडती है ता यह दुनभ सर उन्हें मुष्य हो प्राप्त हो जाती है। सगभग भाषी दूर तक तो रायसीने का गोरखपघा ही है। उसके बाज जुनुव क दशन हो ही जाते हैं।

ग्यारह साल बाज इस वध फूलवासों की सल का मत्ता लगा था। यह मेसा प्रतापी किन्तु माम्पहीन मुगल-साम्राट शाहजहां न सगाना प्रारम्भ किया था। जुनुव के एक पाव में वृष्वीराज क समय की प्राचीन योगमामा एक जील मरि में भाषीन हे दूसरे पाव में स्वाजा साहब की दरगाह है। बाग़ाह ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को प्रतिवध १००) १००) व का बडोछा देना स्वीकार

बाह में नहीं जानता मैं अभी पसे लूंगा ।
 बेगम ने ठण्डी सांस मरी । उठी पढोस से लगी खिठकी में जा खड़ी हु
 पढोसिन से कहा—बूधा सूतक में है मैं भीतर नहीं भा सकती खरी मेरी ब
 सुन जाओ ।

वह भाई तो कहा—बुदा के लिए अपने बच्चे का उतरन कोई कुरत
 और पूतों का जोडा हो तो एक दिन के लिए उधार दे दो । बल लौटा दूगी ।—
 उसकी भांखों से गगा-अमुना का धार बह खली । पढोसिन ने सूती और कपडे
 बेगम को दिए । पर बेगम बेहोश होकर वहीं गिर पडे ।

साल बिले में सन्नाटा था—दीवाने-खास में बबूतरो का एक जोडा गु
 कर रहा था । दूर जमना किनारे कोई दद मरी भावाज में गा रहा था
 बमरमे में बम नहीं—खर सामो जान की ।
 ए 'दरर' ठण्डी हुई दामगीर हिदुताम की ॥

की घांठ की तरह सब एकनात्र बाजार लिए चुपचाप सो रहा है। उसमें जागृति के चिह्न दीख पड़े। शिल्लिकावाले टूट पड़े। दो शिनों के लिए सभी मकान कोठ छत्र मुंडेर, सबहर किये पर उठ गए। एक बप का किये दो शिने में मिल गया। गस के हूँडे बिजनी के लीप और म्बड-म्यानूज जलने लग। सबहरोँ पर ईरानी कानीन और दरियां बिछ गईं। उनपर डेरे-तबू खड़े कर लिए गए। महरोली सज-सजाकर सारबनिता की तरह मानो धमाधम नाचने के लिए उठ सही हुई। शिल्ली की प्रस्यार वनामों न कोठों के नाव भासमान पर पड़ा लिए। रामतीता की सवाठी जिन्होंने अपनी पुस्य-भाखों से चावठी बाजार के राज-मय पर नौटली बार दसी है वे उस महरोली के स्यापी हृय को समझ सें।

हिन्दुओं का पखा तो कल पड चुका था मात्र दरगाह पर मुसलमानों का पखा चढ़ना था। मुसलमान उन्नत हो रहे थे। नर-अमुद कुतुब की और उनड रहा था। सभी की राउ बसने की तयारियां थीं। राउ मौनने की ओ सोषठा था और जवाब मिलता—म्यां दो बजे तो पखा दरगाह छोड़ ठक पड़ेगा।—राउ बसन जो जा रहे थे उनके हाथ में बहा छोटी-सी पुस्तिका बपत में उतरकी बेब में डिगरेट का बस और शियाजताई की पेटो पोडे-से पसे भांति सानान था। मुसलमान-जाति ऐसी से नष्ट हो रही है यह ठाक देखने को मिल रहा था। छोटे-छाटे बप्प गदे और बेहूदे मौत्र ग रहे प।

वह मन्दा और बूदा तथा अतक मता क्या दखन मोम्य था। पुपान और तम बाजार में ठगान्म भांती भर रहे प—पसीने और सास की दुगध चुनत हुए कबाब और सडे तेल के तले जात हुए पकौठों की भयानक बास शिनाप की फाडे झालती थी। धून और अन्यकार, माटरों की धोंधों-पोंधों सब शणियों क मनुष्यों की बिल्लाहट की मिथित ध्वनि मलाई-भगडे गानी मनोब और हूली-छटठा एक अत्रव गडबडन्तना पदा कर रहा था। पखा अपनी बाजार तक भी न पहुँचा था पर छत्रों पर, छत्रों पर, भांती स रहे प। कोठों पर वेनामों के रगीन प्रशयन मार्गों के शिप-बहुताव की सामग्री बन रहे थे। हन सब भाफत स पबरकर, अतह म्यों और मन्दी से ब्रकर, एक संपकाराकृत सबहर के एक धून्य माग पर सडे रातमर परेधानी भोगने

किया था। उस रकम से हिन्दू यागमाया पर और मुसलमान दरगाह शरीफ पर फूलों के पत्थे बढ़ाया करते थे। जब मुगल-तन्त्र का अन्त हुआ और अंगरेजों ने भारत के साम्राज्य का भार सिर पर लिया तब यह बजीफा घटाकर (१००) १००) रुपये की राकम में हिन्दू-मुसलमानों का मिलता रहा। परन्तु गत ग्यारह वर्ष से (महायुद्ध-काल से) गवर्नमेंट ने यह बजीफा बन्द कर दिया। मेला भी बन्द हो गया। इस बार ग्यारह साल बाद गवर्नमेंट ने इस सोते हुए मेले को फिर जाग्रत किया फिर सौ-सौ रुपये उन परिवारों को प्रदान करने की उदारता दिखाई जो कदीम से पक्षा बढ़ाने का घाही अधिकार प्राप्त कर चुके हैं। ग्यारह साल बाद इस बार इस मेले के लिए दिल्ली को उबसाने की सरकार का क्या भाव-यकता था पड़ी इसपर कुछ बुद्धिमानों ने विचार किया समाचार पत्रों ने भी मुक्ताचीनी की। यही तो समय था जब पंजाब के सिंह-शासक ने मूख-हठताल की थी और अमर यतीन मृत्यु शय्या पर अन्तिम श्वास प रहे थे। राष्ट्रीय नेता उस अनतिक्रम मेले के उग्र विरोधी थे। दिल्ली देश के वेदना के साथ शरीक है या नहीं यह बात देखने योग्य समझी गई। फूलवालों की सस की एक झलक देखने की हमारे मन में अभिलाषा पैदा हुई।

सचमुच दिल्ली को वेदना न थी। दिल्ली और वेदना ? महाराज्यों की य विभवा-पुश्वनी जिस तरह नये पतियो को प्राप्त कर नये टाठ सजती है—क्या जगत् देखता नहीं है ? यह महामंदोदरी जब वेदना के अनुभवयोग्य हृत्पिपावगी यह सदागुहागिन महावेश्या आज असह्य नरवरों के प्राणों को एक-एक झूट में पीकर ब्रिटेन सिंह के पर्जों की कृपा से नये रूप नये वेदा में नवनी दुलहिन की तरह जगमगा रही है। एबार यतीन मरें, इसे क्या सास की मूख-हठताल करें, इसे मास्ता ?

इस वर्ष वर्षा मजे की हो गई थी। जंगल हरियाली से सहलहा रहे थे रायसीने के प्रमुओं ने मच्छड़ भय से प्राय सभी जसाशया को नष्ट कर दिया है। असबत्ता कहीं-कहीं नवीन इंजीनियरी की प्रतिष्ठा रखने को सड़को पर पानी भरा दील पड़ता था। दिल्लीवालों पर हरियाली को देखते ही रंग बन गया। सबकी जबान पर फूलवालों की सस' उछल रही थी। दिल्ली के प्राण कुतुब पर घा अटके। कुतुब के पांव में महरोसी का छोटा-सा बम्बा दावान

की घात की तरह सब एकमात्र बाजार लिए चुपचाप सो रहा है। उसमें जागृति के विल्ल दोष पड़े। दिल्लीवाले टूट पड़े। दो दिनों के लिए सभी मकान कोठे धत मुंढेर खडहर किराये पर उठ गए। एक वष का किराया दो दिन में मिल गया। गस के हडे ब्रिजसी के संप और भाड-फानूस जलने लगे। सडहरों पर ईरानी कालीन और दरियां विद्य गईं। उनपर डेरे-सबू सडे कर दिए गए। महरोली सज-सजाकर धारवनिता की तरह मानो छमाछम माचने के लिए उठ सडी हुई। दिल्ली की प्रस्थात बेस्याभा ने कीठों के भाव भासमान पर चडा दिए। रामलीला की सवारी जिन्होंने अपनी पुष्प-भासों से धावडी बाजार के राज-पष पर सौटती बार देखी है वे उस महरोली के स्थापी हश्य को समझ सें।

हिन्दुओं का पला तो कल चढ़ चुका था धात्र दरगाह पर मुसलमानों का पला चड़ना था। मुसलमान उन्मत्त हो रहे थे। नर-समुद्र कुतुब की धोर उमड रहा था। सभी की रात बसने की तयारिया थीं। रात सौटने की जो सोचता था फौरन जवाब मिलता—म्यां दो बजे सो पला दरगाह चरीफ तक पहुँचेगा।—रात बसने जा जा रहे थे उनके हाथ में वही छोटी-सी पुटलिया बगल में धतरजी जेब में सिगरेट का बक्स और दिमासलाई की पेटी थोडे-से पैसे भादि सामान था। मुसलमान-जाति तेजी से नष्ट हो रही है यह साफ देखन को मिल रहा था। छोटे-छोटे बच्चे गडे और बेहूदे गीत गा रह रहे थे।

वह गन्दा और वेहूदा तथा भर्त्तिक मेला नया देखने योग्य था। पुराने धोर तग बाजार म ठसाठस धादमी भर रहे थे—पसीने और सास की दुर्गंध भुनते हुए कवाव और सडे तेल के तले जाते हुए पकौडों की भयानक बास त्रियाग को फाड़े डालती थी। धूस और घन्धकार, मोटरो की धोंधों-धोंधों सब धणियों के मनुष्यों की चित्लाहट की मिश्रित ध्वनि सडाई भगडे गली गली और हसी-ठठठा एक भजब गडबडभाला पदा कर रहा था। पला अपनी बाजार तक भी न पहुँचा था पर धतों पर छज्बो पर भादमी सद रहे थ। कीठों पर बे-याधों के रगीन प्रन्धान लोगो के त्रि-बहलाव की सामग्री बन रहे थे। हम सब धाफत से धबराकर भसह्य गर्मी और गदगी से ढक्कर, एक धयकारावृत खडहर के एक धून्य भाग पर सडे रातभर परेशानी भोगने

के लिए मनावल सग्रह कर रहे थे।

एक बूढ़ा उस झंझकार में एक पुरानी घतरजी बिल्खाए चुपचाप बैठा था। हमें उसके अस्तित्व का ख्याल भी न था। उसने आवाज लगाकर कहा— इधर आ जाइएगा। पक्षा तो दो बजे पहुंचेगा।—हमने नज़दीक जाकर देखा—एक कदम के ठकिए के सहारे अतिशय वृद्धकाय एक वृद्ध साधारण मल मल का एक अंगरखा पहने बैठा है। उसकी धाड़ी और भी बिल्कुल सफ़ेद थी। उसकी आवाज कांप रही थी। उसके पैर में पुराना बिजु अरुली बसली का जूता था।

हमने निकट जाकर बूढ़े का उसकी मेहरबानी के लिए शुक्रिया अदा किया। उसने बदगी बरके कहा—मालूम होता है आप पहली ही बार फूलवालो की सल को आए हैं ?

जी हां। मगर आप क्या पहले भी यह मेला देख चुके हैं ?

बूढ़ा कुछ हसा। उसने आकाश की ओर एक बार देखा और कहा—जनाब ! इसी फूलवालों की सल को देखकर जिंदा रह सका हूँ। मैं जो कुछ देखता हूँ आप क्या यह देख सकेंगे ?

माफ़ कीजिएगा बदबू और धोर के मारे हमारे नाक में दम हो गया।

उसने बीच ही में नास काटकर कहा—आह ! बाबू साहब, मेला तो दिल का होता है। भीड़ देखने में क्या खाक मजा आ सकता है ? आज अठारसी साल से यह मेला देख रहा हूँ इस मेले की बदौलत न मैं अपने को बूढ़ा समझता हूँ न गरीब न मूख महसूस करता हूँ न प्यास न नींद न थकावट न सर्दी न गर्मी। मैं बसा ही अठारह साला नौजवान वैसा ही खुस्त खन-खन बना हूँ। मेरी आँखें आज के दिन रातों का देखने में कमजोर और धुंधली हो गई हैं। मगर मैं अपने उन प्यारे दिनों को हबहूँ देख रहा हूँ।—इतना कहकर बूढ़े ने फिर आकाश की ओर देखा और अपनी आँखें मूंद लीं।

हम घतरजी पर बैठ गए। हमने कहा—जनाब की बातों से कुछ भद मालूम होता है मगर हज़ न हो तो ज़रा सोलकर कहिए। ज़रूर आपकी जिंदगी से किसी भेद का तिलसिमा है।

बूढ़े ने एक बार झंझकार में मृतकवत् पड़े हुए उस खंडहर पर एक विषाद पूर्ण दृष्टि डाली, एक सही सांस ली, फिर कहना शुरू किया

भाराम से बठ जाइएगा जनाब ! सन् १८५६ की बात है । यही महीना और यही दिन था । इसी तरह फूलवाला की सल हो रही थी । उन दिनों मोटर-कारियां नहीं थी । अभी भाए और अभी गए यह भी मला कोई मेला हुआ । उन दिनों नागरी बसों की जोड़ियां जब मभोलियो में उछलती थीं तब देखते ही बनता था । रथ बहली तामजाम पानकी हाथी घोड़े खासदान इनपर घहर के रईस दा चार दिन पहले भाते और दो चार दिन बाद जाते थे । हस्तों बाजार रहता था । दूकानदार मुहमांगा दाम पाते और गाठ बांधकर घर ले जाते थे । उस मेले में मजा था भाराम था मस्ती थी । वह मेला था । नन्ही-नन्ही भादों की फव्वारें चलती थी बागों में भूले पड़ते थे लोग मत्तार गाते थे । नशा-पानी होता था घेर गजला के श्याल और भूलनों के मसाले जमते थे । गरज हस्तेभर के लिए मौज का दरिया उमड़ भाता था ।

दिल्ली के भासिरी बादशाह फूलवालों की सल देखने भाए थे । वह जईफ़ और सन्ने सामु थे उनका कनामे जफ़र' तो भापने देखा ही होगा । ऐसा सोज और किसी कलम में है । दरप्रमल वह बादशाह न थे शायर थे । भासिर बाग्शाही उनस छिन ही गई !

सर बाग्शाह के साथ उनका हरम और करीब दो हजार भादमी थे । मगहर शायर और भी साथ थे । बाग्शाह इन्हें उस्ताद मानते थे । मिर्जा गालिब से जौज की लाग-ठाट थी—मगर इस बार वह भी बादशाह के साथ थे । हजरत सलामत को शायरी का इसकदर धौक था कि वही उनकी तफरीह और वही दरबार भी बन गया था । बाग्शाह के हुकम से उस बार मुचायरे का खास बंदोबस्त किया गया था । दूर-दूर के शायर बादशाह की नजर में पढ़ने और इनाम इकराम पाने की नीयत से भाए थ । इस मामले में वह एक ही फ़याज-निश थ । बादशाह क्या थे धौलिया थे ।

जिस दिन पक्षा निकलता था उस दिन की बात है । जिस खडहर को भाप इस वक्त ऐसा डरावना और उजाड़ देख रहे हैं उस दिन इसकी सजावट और रौनक देखने के बाविल थी । यह इमारत भरतपुर के साल पत्थर की बनी थी । और इसपर मकरान के मसली सगमरमर का पत्ता था । ठीक इसी जगह जहां भाप बंठ हैं घामियाना शानी की मसलों पर सजा था और बाफूरी शमा दान जल रहे थ । ईरानी कालीन विद्ये हुए थ । बिलायती साटन के पर्दे पड़े

एक पुरानी छाही बांदी ने जिसने गदर में भागकर महरोली में रहना शुरू किया था बताया कि यही कन्न शाहजादे लसा की है ।

इतना कहकर बुड्ढा बहुत थककर चुप हो गया । वह किसी गहरे विषाद में डूब गया । हमने पूछा—जनाब ! शाहजादे का फिर क्या हुआ ?

वह हसा और बोला—उसने लसा की कन्न से निकाह किया और तब से मर्य तक उसीके पास रात दिन रहता है उसे साफ रखता है उसपर विराग जलाता है और साल में चार बार सफदी करा देता है । इसी कन्न के पास उसने अठहत्तर साल व्यतीत कर दिए हैं ।

हमने अकनकाकर पूछा—क्या वह अभी जिंदा है ?

यही बूढ़ा भपाहिज घादमी वह बदनसीब शाहजादा है ।

अम्बपालिका

अम्बपालिका कहानी आचार्य ने सन् १९२८ में लिखी थी। हिन्दी में अम्बपालिका से सम्बन्धित यह सर्वप्रथम कहानी है। इसका नाम अम्बपालिका को लेकर अनेक कहानियाँ और उपन्यास भी लिखे गए तथा आचार्य ने आगे इसी आधार पर अपनी अमर रचना 'बैशाली की नगरवधू' लिखी। जिन समय यह कहानी लिखी गई थी उस समय लेखक की दृष्टि में कथा का आधार बहुत अस्पष्ट था। उसका बाद में जो परिवार हुआ वह तो नगरवधू में व्यक्त है। इसमें लेखक के भीतर का उदीच्यमान साहित्यकार झंक रहा है।

मुजफ्फरपुर से पश्चिम की ओर जो पक्की सड़क जाती है उसपर मुजफ्फरपुर से लगभग १८ २० मील पर 'बसाढ़' नामक एक विलुप्त छोटा-सा गांव है जिसमें ३० ४० घर भूमिहार ब्राह्मणों के और कुछ घर क्षत्रियों के बचे रहे हैं। इस गांव के चारों ओर कोसों तक खण्डहर टीले और पुरानी टूटी फूटी मूर्तियाँ ढर ढी ढर मिलती हैं जो इस बात की स्मृति दिलाती हैं कि यहां कभी कोई बड़ा भारी समृद्धिशाली नगर बसा रहा होगा।

वास्तव में ढाई हजार वर्ष पूर्व यहां एक विशाल नगर बसा था जिसका नाम बघाली था और जो प्रबल प्रतापी लिच्छविगण तन्म के शासन में था।

बघाली लिच्छविगण तम की एक प्रधान नगरी और रियासत थी। नगर व्यापारियों जौहरियों, शिल्पकारों और भिन्न भिन्न प्रकार के देश विदेश के यात्रियों से परिपूर्ण था। श्रष्टि बत्बर' नगर का प्रधान बाजार था जहां जौहरियों और बड़े-बड़े व्यापारियों की कोठियां थी और जिनकी व्यापारिक शाखाएँ समस्त उत्तर भारत में फैली हुई थीं। दुकानदार स्वच्छ परिधान धारण किए, पाद कुचरते हस-हसकर आहूँ से बाँठें करते। जौहरी पन्ना साल भूगा मोती पुसपज हीरा और अन्य रत्नों की परीक्षा तथा लेन-देन में व्यस्त रहते थे। निपुण कारीगर धनगढ़ रत्नों की सान बढाते स्वर्ण चामरणों में रगीत रत्न जड़ते और मोती मूथत थे। गंधी लोग केसर के धसे हिलाते थे। चन्दन के तसों में भिन्न भिन्न सुगंध मिलाकर इत्र बनाए जाते और नागरिक उनका

रही है। यह घोर भी कष्ट का प्रश्न था। पर वृद्ध ने हसकर कहा—भ्रष्टा
 मन्त्रा में अभी गेहूँ लिए आता हूँ। इतना कहकर वृद्ध ने बालिका के तडाकड़
 तीन-चार घुम्बन लिए घोर उसे गोल् से उतारते-उतारते दो बूद भ्रामू गिरा दिए।
 बालिका भीतर गई घोर वृद्ध चिन्तामग्न बठ गया। अन्ततः उसने एक बार
 फिर महाराज की सेवा में उपस्थित होकर पुरानी नौकरी की याचना करने का
 निश्चय किया। उसके बाहु का पौरुष तो एक चुका था। परन्तु क्या किया जाए
 क्या का विचार सर्वोपरि था। फिर भी वृद्ध के प्रति गम्भीर हान का यही मात्र
 कारण न था। साल वृद्ध हाने पर भी उसकी भुजा में बल था बहुत था।
 पर उसकी चिन्ता थी बालिका का अप्रतिम सौन्दर्य। सहस्राधिक बालिकाएं
 भी क्या उस पारिजात-कुसुम-सुल्य कुल-बालिका के समान थीं? किम पुष्प में
 उतनी गन्ध कोमलता और सौंदर्य था? उसे भय था कि राज नियमानुसार
 वह विवाह से वंचित करके कहीं नगर-वेष्ट्या न बना दी जाए। यदि लिच्छवि
 गण तम में यह काठून था कि राम की जो कन्या अत्यधिक सुन्दरी होती
 थी उसे किसी एक पुरुष की पत्नी न होने दिया जाकर नागरिकों के लिए
 सुरक्षित रखा जाया करता था। वास्तव में इसी भय से महानामन राजधानी
 छोड़कर भागा था जिससे किसीकी दृष्टि उस बालिका पर न पड़े। पर अब
 उपाय न था। महानामन ने राजधानी में एक बार जाने का निश्चय किया।

बसाली की घोर जानेवानी सड़क पर वर्षा के कारण बड़ी कीचड़ हो रही
 थी। कहीं-कहीं तो नामा का पानी कच्ची सड़क को तोड़कर सड़क पर नदी की
 तरह बह रहा था। अभी वर्षा हा चुकी थी। वृद्ध और उसकी पुत्री दोनों भीग गए
 थे पर धीरे धीरे बड़ बने जा रहे थे। हवा बन्द थी गर्मी बढ़ गई थी और
 दूरस्थ पर्वतों की चाटिया में अस्त होते हुए सूर्य को देख-देखकर वृद्ध डर रहा
 था। निकट किसी बस्ती के चिह्न न थे। यदि यहीं चौपट में अघेरा हो गया
 तो जहां रात बटगी बच्ची लाएगी क्या यही वृद्ध के भय का कारण था। वह
 साठी टेकता-टेकता धीरे धीरे भाग बड़ रहा था। वह स्वयं बहुत थक गया था
 और बालिका तो क्षण-क्षण में विथाम की इच्छा प्रकट कर रही थी। बालिका
 ने कहा—पिता! अब मैं और नगी चल सकती मेरे परों में देखो सोहू बह
 रहा है वे फट गए हैं। वृद्ध ने स्नह से उसे चुम्बकारकर कहा—अब अब घोड़ी

दूर धीरे निवट ही वहीं गाँव या बस्ती मिलने पर ठहरन म सुभीता रहेगा । पर बालिका धीरे कुछ पग चलकर माग म ही एक ऊँची जगह पर बठ गई । वृद्ध भी निरुपाय हो पास ही बठ गया । भ्रमरकार न चारों ओर से उह घेर लिया ।

सहसा बालिका ने चौंकर कहा—पिता जी देखो घोड़ों की टाप का शब्द सुनाई द रहा है ! बुद्ध ने उठकर दूर तय दृष्टि करके देखा । सड़क के निकट एक घना समन का वृक्ष था जिसके नीचे धीरे भ्रमरकार था । वृद्ध कन्या का प्य पकड़ वही जा छिपा । भावाग म भ्रम भी बादल भिर रह थे धीरे फिर र का वपा होने के रग-रग दीस पडत थ । बीच-बीच म बिजली भी चमकती थी । पाठी देर बाद बहुत-स सवार वहा तक आ पहुँचे । वपा भी शुरू । गई । सवारों ने निश्चय किया कि उस वृक्ष के नीचे भ्रमर थें ।

वृद्ध भय से बालिका को छाती म छिपाए वृक्ष का षट में चिपककर बँठ या । सहसा बिजली की चमक मे भ्रमरारोहिया ने वृक्ष के निवट मनुष्य मूर्ति खकर कहा—घर ! वृक्ष के निवट यह कीन है ? वृद्ध वहा से हटकर चुपचाप त म जान लगा । तरक्षण एक वर्या भ्रमर उसकी छाती को विदीण कर गया । वृद्ध एक आस्कार करके धरती पर गिर गया । बालिका ओर से चिल्ला उठी ।

भ्रमरारोही दल ने निवट जाकर दखा—मृत पुरुष वृद्ध धीरे निरस्त है । र कन्या को देखते ही वर्या फँकन वाले सवार ने कहा—वाह ! वृद्ध को मार र रतन मिला ! इसम किसीका साम्रा नहीं है ।

बालिका भय धीरे छोड से चिल्ला उठी । भ्रमरारोही न उसकी परवाह न र, उसे उठाकर घोड़े पर रख लिया धीरे व भागे बड़ ।

चमरपालिनी वशाली का जो थप्टि-धरकर नामक बाजार था उसके उत्तरी कोण पर एक विशाल प्रासाद था जिसके गुम्बजा का प्रकाश रात्रि को गङ्गा गार स भी दीसता था । बाहर का सिद्धार विंगल पत्थरों का बनाया गया था जैसे उठाना धीरे जोडना दर्यों का ही काम हो सक्ता था । इन पत्थरों पर श्यापत्यकला धीरे गिल्प की सूक्ष्म बुद्धि सध थी गई थी । द्योढी पर गहरा रंग रग किया हुआ था धीरे ऊँचे महरावकार फाटक पर पूना की गुपी हुई पुन्कर माताए सटक रही थी । पहले भागन में प्रवेश करने पर स्वैत घट्टालि चामों की पक्ति दीस पडती थी । उनकी दीवारों पर बाघ की तरह चमकदार

उसपर मुनहरी प्रभा थी—जैसी चम्पे की अविकसित कली म होती है। उसके शरीर की सचक झङ्गों की मुडौलता वणुन से बाहर की यात थी। उस मौन्य में विनेपता यह थी कि समय का अत्याधार भी उस सौन्य को नष्ट न कर सकता था। जैसे मोती का पत उतार देने से भीतर से नई आभा नया पानी दमकने लगता है उसी प्रकार सम्बपालिका का शरीर प्रतिबन्ध निखार पाता था। उसका कण कुछ लम्बा देह मांसन और कुच पीन थे। तिसपर उसकी कमर इतनी पतली थी कि उसे कटिबन्ध बांधने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग अतम्य थे मानो प्रकृति ने उन्हें नृत्य करने और आनन्द भोग करने को बनाया था।

उसके नेत्रों में सूक्ष्म तालसा की झलक और दृष्टि में गजब की मदिरा भर रही थी। उसका स्वभाव सतेज था चितवन में दृढ़ता निर्भीकता विनाद और स्वेच्छाधारिता माफ़ भूतवती थी। उसे देखते ही आमोद प्रमोद की अभिसाया प्रत्येक पुरुष के हृदय में उत्पन्न हो जाती थी।

जैसा कहा जा चुका है उसकी रगत पर एक मुनहरी झलक थी गाल कोमल और गुलाबी थे भोठ झाल और उत्फुल्ल थे मानो कोई पका हुआ रसीला फल चमक रहा हो। उसके दात हीर की तरह स्वच्छ चमकदार और मनार की पक्ति की तरह मुडौल कुच पीन तथा अनीदार थे। नाक पतली गदन हंस जमी कण्ठे मुडौल बाहु मृणाल जसी थी। सिर के बाल काले तन्वे और घघराने तथा रंगम से भी मुलायम थे। घाँवें काली और कंटीली रंगलिदा पतली और मुलायम थी। उनपर उसने गुलाबी नाखूना की बड़ी बहार थी। पर छोटे और सुन्दर थे। जब वह ठसक के साथ उठकर खड़ी हो जाती तो लोग उन एकटक देखते रह जाते थे। उसकी मुद्राओं और देह पर पूर्व भाग सदा पुलक रहता था।

बशाली में बड़ी भारी बेचैनी फैल गई। आचारोही दल के दल नगर के ओरण से होकर नगर से बाहर निकल रहे थे। प्रतिहार लोग और निसीको न बाहर निरन्तर देने से और न भीतर घुसने देते थे। तोरण के इपर-उपर बहुत ही नागरिक सेना का यह अकस्मात् प्रस्थान देख रहे थे। एक पुरुष ने पूछा—
क्यों भाई जानते हो यह सेना कहा जा रही है?—उमने कहा—न यह कोई

नहीं जानता। भम्बारोही दल निकल गया। पीछे कई मना नायक धीरे धीरे परामरा करते चले गए।

शकुभर में सम्बान फँस गया। मगध के प्रतापी सम्राट शिशुनागवर्गी बिम्बसार न बशाली पर चढ़ाई की। गंगा के दक्षिण छोर पर दुर्जय भागध सना दृष्टि के उस छोर से इस छोर तक फली हुई थी। इस सना से दस हजार हाथी पचास हजार भम्बारोही और पाँच लाख पदल थे।

बशाली के लिच्छवियों का प्रताप भी माघारण न था। गंगा के उत्तर कोण पर देखते-देखते सैन्य-समूह एकत्रित हो गया। लिच्छवियों के पास आठ हजार हाथी एक लाख भम्बारोही और छह लाख पदल थे।

तान्त्रिक तर्क दोनों दल घामने-घामने टूटे रहें। तीसरे दिन लिच्छवि लोग न देखा उस पार डेरों की सख्या कम हो गई है। निपुण सैनिक सहसा पाठ से पार घाने की तयारी कर रहे हैं यह समझने में देर न लगी। दोपहर होन-होन मगध सेना गंगा पार करने लगी। लिच्छवि-सेना चुपचाप खड़ी रही। ज्यों ही कुछ मना ने भूमि पर पर रखा क्यों ही बशाली की सेना जयजयकार करते बन चली मानो सहस्र उल्कापात हुए हों। मध-मधपण की तरह घोर गबना करके दोनों सेनाएं भिड़ गईं। मगध सेना की गति रुक गई। बाण बरसे और तनवारों की प्रलय मध गई। उन त्रि दिनभर सग्राम रहा। मूर्धास्त देस दोना सेनाएं पीछे की कगी।

दो माम से नगर का घेरा जारी है। बीच-बीच में युद्ध हो जाता है। कोई पक्ष निरस नहीं होता। नगर की तीन दिशाएं मगध गिबिर से घिरी हैं। बीच में जा सबसे बड़ा टरा है उसके ऊपर सोन का गरुडध्वज भ्रमंत होते सूर्य की किरणों में अग्नि की तरह दमक रहा है। उसके भाग एक स्थण पाठ पर गौर धण सम्राट विराजमान हैं। निकट एक-दो विद्याना पापन हैं। सम्राट अति सुन्दर, बलिष्ठ और गम्भीरमूर्ति हैं। नेत्रों में तेज और स्नेह दृष्टि में धीररुध और औदार्य तथा प्रतिभा में अम्य तेज प्रकट हो रहा है। सम्राट घान सेटे हुए कुछ मात्रणा कर रहे हैं। एक कणिक नीचे बटा उनके आदेशानुसार सिस्तता जाता है। एक दण्डधर ने भाग बढ़कर पुकारकर कहा—महानायक युवराज भट्टारकपादीय

गोपालदेव तोरण पर उपस्थित हैं। सम्राट न चौककर उभर देता और भीतर बुलाने का संकेत किया। साथ ही कालिका और मन्त्री को बिना दिया।

गोपालदेव ने तलवार म्यान से खींच ली। स खगाई और फिर विनम्र निवेदन किया—महाराजाधिराज की आज्ञानुसार सब व्यवस्था ठीक है। देव-त्री पधारने का कष्ट करें। सम्राट के नत्रो में उत्कृष्टता उत्पन्न हुई। वे उठकर वस्त्र पहनने के लिए पट मण्डप में घुस गए।

बदाली के राजपथ जनघन्य थे दो प्रहर रात्रि जा चुकी थी गुड के घातक ने नगर के उल्लास को मूर्च्छित कर दिया था। कहीं-कहाँ प्रहरी खड़े उस अंधकारमयी रात्रि में भयानक भूत-सं प्रतीत होते थे। धीरे-धीरे दो मनुष्य-मूर्तियाँ अंधकार का भेदन करती हुई बंगाली के गुप्त द्वार के निकट पहुँची। एक ने द्वार पर आघात किया भीतर प्रपन्न हुआ—संकेत ?

मनुष्य मूर्ति ने कहा—अभिनय !

हल्की सीस्कार करके द्वार खुल गया। दोनों मूर्तियाँ भीतर घुसकर राजपथ छोड़ अंधेरी गलियाँ में अट्टानियाँ की परछाई में छिपती छिपती आगे बढ़ने लगी। एक स्थान पर प्रहरी ने बाधा देकर पूछा—कौन ? एक व्यक्ति ने कहा—भाग बदकर देखो। प्रहरी निकट आया। हठात् दूसरे व्यक्ति ने उसका सिर धड़ से छुदा कर लिया। दोनों फिर आगे बढ़े। अम्बपालिका के द्वार पर अन्ततः उनकी यात्रा समाप्त हुई। द्वार पर एक प्रतिहार मानो उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। सकन करने ही उसने द्वार खोल लिया और आगन्तुवगण का भीतर लेकर द्वार बन्द कर लिया।

आज इस विंगल राजमहल राहस्य भवन में सन्नाटा था। न रंग बिरंगी रोगनी न फव्वारे न दास-दासी गण की दौड़ धूप। दानों व्यक्ति शुभचाप प्रतिहार के साथ जा रहे थे। सातवें अलिन्द को पार करन पर देखा एक और मूर्ति एक तम्ब के सहार खड़ी है। उमने आगे बढ़कर कहा—इधर में पधारण थीमात् ! प्रतिहार बड़ी हन गया। नवीन व्यक्ति स्त्री थी और वह सर्वांग वाते वस्त्र से ढाँप हुए थी। दाना आगन्तुक पर्ये प्राङ्गण और अलिन्द पार करते हुए कुश्र सीटियाँ उतरकर एक छाते में द्वार पर पहुँच जो चाँदी का था और जिसपर अतिरूप मनोहर आसी का काम हो रहा था और उसी जानी में से

छन-छनकर रगिन प्रकाश बाहर पड़ रहा था।

द्वार खालत ही देखा एक बहुत बड़ा कमर भिन्न-भिन्न प्रकार की सुख-नाम धियों से परिपूर्ण था। यद्यपि उनका बड़ा नहीं जहाँ नागरिक जना का प्राय स्वागत होता था परन्तु सजावट की दृष्टि से इस कमरे के सम्मुख उसकी गणना नहीं हो सकती थी। यह समस्त भवन बस और काल परधरो से बना था। और सबत्र ही मुनहरी पच्चीकारी का नाम ही रहा था। उसमें ब-ब-बिल्लौर के झट्टान्नु धम्मूय्य सम्भ सग ५ दिनमें मनुष्य का बूबहू प्रतिविम्ब सहस्रों की संख्याओं में दीखता था। बड़े-बड़े और भिन्न भिन्न भावपूर्ण चित्र टंग थे। सहस्र दाप-गुच्छों में सुगन्धित तल जल रहा था। समस्त दक्ष नाना सुगन्ध से महक रहा था। धरती पर एक महामूय्यवन् रगान विद्यावन था। जिमपर पर पदत ही हाथ भर धम जाना था। बीचोबीच एक विचित्र आशुति की सोनहू पदन्नु सोने की चौकी पड़ी थी जिमपर मोर पक्ष के सम्भा पर मोतिया की झमर सगा एक चन्दोवा तन रहा था। और पीछे रगोन रेगन के परदे लटक रहे थे त्रिसमें ताज पुष्पों का शृंगार बड़ी सुघडाई से किया गया था। निरन् ही एक छाती की रत्न-जटित तिपाइ पर मद्य-पात्र और पल्लव का एक बड़ा-सा पात्र पड़ा हुआ था।

हठान् नामन का परग उठा और उनमें से वह रूप रागि प्रकट हुई जिसके दिना मलिन मूय्य हो रहा था। उस दमन ही भागन्तुकमण में से एक तीधीरे और पीछे हटकर बसा से बाहर हा गया दूसरा व्यक्ति स्थम्भित-स्ता खड़ा रहा। धम्मपालिका धागे बना। वह बहुत महीन रगन रगन की पागाव पहने हुए थी। वह इनकी बारीक धी कि उसका धार-धार सफ दीस पहना था। उनमें से छनकर उभक नुनहर गरीर की रगन धूम्र छटा दिखा रही था। पर वह रग कमर तक ही था। वह चाती या कोई दूसरा वस्त्र नहीं पहन था। इसलिए उसकी कमर के ऊपर से धम्मूय्य सफ दीस पड़त था।

दिधाना ग उन किम क्षण में गया था! हमारी ता यह धारणा है कि कोई चिन्कार न तो बना चित्र ही मन्दिन कर सरता था और न कोई मूर्तिकार बँधी मूर्ति ही बना सकता था।

उस सुवन-नोहिनी की व-छटा भागन्तुक के हृदय का छेवर पार हा गई। गहरे का रग क बन उसका उभयन धार स्निग्ध कर्षों पर लहरा रहे था।

स्फटिक व समान विकने मस्तक पर मातिपां का गुया हुआ धामुपण धनुर्व
सोभा दिखा रहा था। उसकी कात्ती धीरे धटीली भाँवें होते थे समान नुकीली
नाक विम्बाफन जैसे धधर-भोष्ट धीरे धनार-दाने व समान उज्ज्वल दात गोल
धीरे गोल विभुव बिना ही श्रुगार के धनुराग धीरे धानन्द बनेर रहा था। धन
स दाईं हड्ढार वष पूव की बठ वगाभी की बस्या ऐसी ही थी।

माती की कीर लगी हुई सुन्दर मोठनी पीछे की ओर लम्ब रही थी धीरे
इसलिए उसका उमत्त कर देने माला मुण साफ देता जा सकता था। वह
धपनी पतली कमर म एक डीला-मा बहूमूल्य रगीन छाल सपेट हुए थी। हंस
के समान उज्ज्वल गदन म धधुर क धरावर मातिपाँ की माला लटक रही थी
धीरे गारी-गोरी गोल कलाइयो म नीलम की पट्टी पड़ी हुई थी।

उस मन्डी के आले के समान वारीक उज्ज्वल परिधान के नीचे सुनहरे
ठारो की मुनाबट का एक धदमुत धाधरा था जो उस प्रकाश म विजली की
तरह धमक रहा था। परों म धानी छाटी सात रग की उपानव था जो सुनहरी
पीने व बस रही थी।

उस समय बस म गुलाबी रग का प्रकाश हो रहा था। उस प्रकाश म
सम्बपालिका का माना परदा धीरे-धीरे इस रूप रग म प्रकट होता धामुण
भ्यति धी मूर्तिमती मधिरा का धवलरण-मा प्रतीत हुआ। वह अभी तक स्तम्भ
खटा था। धीरे धीरे सम्बपालिका धाग बड़ी। उसके पीछे २६ दासिया एक ही
रूप धीरे रग की मानो पाषाण प्रतिभाए ही धागे बठ रही थी।

सम्बपालिका धीरे धीरे धाग बढ़कर धामुण के निकट धाकर भुवी धीरे
फिर घुटने के बल बठ उमन कहा—परमन्वर परम वधुणव परम मद्धारक
महाराजाधिराज की जय हो ! इसके बाद उसन सम्राट के धरणी म प्रणाम
धरन को सिर भजा दिया। दासिया भी पृथ्वी पर झुक गईं।

धामुण मगप्रतापी मगध-सम्राट विम्बसार थ। उन्होंने हाथ बड़ाकर
सम्बपालिका को ऊपर उठाया। सम्बपालिका ने निवेदन किया—महाराजा
धिराज पीठ पर विराजें। सम्राट न ऊपर का परिच्छ उतार फेंका वे पीठ पर
धिराजमान हुए।

सम्बपालिका ने नीचे धरती पर बैठकर सम्राट का मगध पुष्प धाति वे
सत्कार किया। इसके बाद उसने अपनी मधभरी धालें सम्राट पर डालकर

कहा—महाराजाधिराज न बड़ी अनुकम्पा की दंडा बण्ट लिया ।

सम्राट न क्विचित् मोहक स्वर में कहा—अम्बपाली ! यदि मैं यह बतू कि जत विनो के लिए प्राया हू तो यह यथाप बात नहीं । मैं तुम्हारे रूप-गुण की प्रथमा सुनकर स्थिर नहीं रह सका और हम बठिन युद्ध म ब्यस्त रहन पर त तुम्हें देवन के लिए गन्धुपुरी में पुन प्राया परन्तु तुम्हारा प्रबंध धन्य है ।

अम्बपालिका—(सम्ब्रित्त-भी होकर उठा मुस्कराकर) मैं पहल ही सुन चुकी ! कि देव त्रियों की चाटुकारी में ब प्रवीण हूँ ।

सम्राट—चाटुकारी नहीं अम्बपालिक ! तुम दाम्पत्य म रूप और गुण म प्रतीय हो ।

अम्बपालिका—धीमाद मैं कृपाय हुई ! इनक बात वह अपने मुना विनि त्रित दांतों की छटा निखात हुए सम्राट की सेवा म गयी हुई । सम्राट न प्याला के और उठे खींचकर बाल में बठा लिया । मनेन पात ही दागिया न क्षण पर मैं गादन-बाध का नरजम छुटा दिया । कस मङ्गीन-सहरी में हूब गया और उन गम्भीर निस्तम्भ रात्रि म मगध क प्रतया सम्राट उन एक बेदा पर अपने नाम्नाय की भूत बठ ।

एक बष बीठ गया । प्रगानी निद्ववि राज मगध-नाम्नाय के घात मस्तक नठ करन जो बाध्य हुए । प्रव शगानी म वह उमग न थी । अम्बपालिका का शर सब बन्त खना था । द्वार पर कठा पहरा था । कोई व्यक्ति न उन देश मकता था न उमने मिन मकता था । उनक बरप-म सुवक मिय उन युद्ध में निहत हुए थ । पर जो बष रह थे के अम्बपाली के कम परिवतन पर प्राचर्यन्वित थ । व तिसा नी तरह उनका माभात् न कर सकते थ । दूर-दूर तक थ बात फन गई थी ।

अम्बपालिका के सह्यावाधि बतन भागी दान-दानो मनिर और अनुचरा म स भी कवल दो व्यक्तित थे जो अम्बपाली का दन मवने और उमन धान कर सकन थ । एक प्रधान परिवरित्त सूयिका दूमरा एक वृद्ध दण्डधर जिस मीठर-दहूर सबन धाने की स्वतंत्रता थी । सम्राट का प्रागमन बवन इन्हा दोनों की मालूम था और ये दांतों ही यह रहस्य भा जानन थ कि अम्बपालिका को सम्राट स गम है ।

मपासनय पुन प्रसव हुआ । यह रक्षस भी केवल हाहा दा व्यक्तियों पर प्रकट हुआ । और वह पुन उसी दण्डपर ने मुक्त रूप से राजधानी में जाकर माघ-मम्राट् की गोद में डालकर, अम्बपालिका का अनुरोध सुनावकर कहा— महाराजाधिराज की सेवा में मेरी स्वामिनी न नियेदन किया है कि उनका तुच्छ अंत-म्यरूप माघ ने भावी सम्राट् आपने घरणों में समर्पित है । सम्राट् ने गिणु को सिंहासन पर डालकर वृद्ध दण्डपर से उरतुल्ल नयन से कहा—मगध के भावी सम्राट् को भटपट अभिवादन करो । दण्डपर ने सोच से सलवार निकाल मस्तक पर लगाई और तीन बार जयघोष करके तलवार गिणु के घरणों में रखी । सम्राट् ने सलवार उठाकर वृद्ध को धमर में बांधते-बांधते कहा—अपनी स्वामिनी को मेरी यह तुच्छ भेंट देना । यह कहकर उन्होंने एक वस्तु वृद्ध के हाथ में छुपवाप दे दी । वह वस्तु क्या थी यह ज्ञात होने का कोई उपाय नहीं ।

भगवान् बुद्ध पगाली में पधारे हैं और अम्बपालिका भी बाड़ी में गये हैं । आज हठान् अम्बपालिका के महल में हलचल मच रही है । सभी दास-दासी, प्रतिहार द्वारपाल दौड़ घूम कर खड़े हैं । हाथी घोड़े पालवी रख मच रहे हैं । गवार दस्त्र-मग्नित हा रहे हैं । अम्बपालिका भगवान् बुद्ध के दर्शनार्थ बाड़ी में जा रही है । एक वय बाद आज वह फिर सबसाधारण के सम्मुख निकल रही है । समस्त पगाली में यह समाचार फैल गया है । साग भुण्ड के भुण्ड जैसे दाने रात्रमाय पर डट गए हैं । अम्बपालिका एक दबत हाथी पर सवार होकर धीरे धीरे आगे बढ़ रही है । दानिया का पदन भुण्ड उसके पीछे है उसके पीछे अन्वाराहा दल है और उसके बाएँ हाथिया पर भगवान् की पूजा-सामग्री । उसके पीछे बहुत से बान्ने कमचारी और पौरगण ।

अम्बपालिका एक साधारण पीत-वर्ण परिधान धारण किए अयोमुख बठी है । एक भी अम्बपालिका उनके शरीर पर न । है । बाधा से कुछ दूर ही उसने मगरी रात्रने की आवा दी । वह पदल भगवान् के निवान तक पहुँची पीछे गो दानियों के हाथ में पूजन-सामग्री थी ।

उपासन बुद्ध की अवस्था अस्मि वर्ष की पार कर गई थी । एक गौरवण दीध नाय दक्षकण्ड वृण विन्दु बसिष् महागुरुप पद्मगन से दान्त मुद्रा में एक सधन वृण की आया में चरथ । सन्धावधि निष्पणण दूर तक गुणितधिर और पीत

वस्त्र धारण किए स्तम्भ-स थीमुख क प्रत्येक शब्द का हृत्पटन पर लिख रहे थे। भ्रान्त नामक सिष्य न निवदन किया—प्रभु ! धम्बपालिका दसनाथ भाई ! तयागत न किंचित् हास्य स धपने करण नत्र ऊपर उठाए। धम्बपालिका तत्ती म सोटकर बहन लगी—प्रभो ! त्राहि माम् ! त्राहि माम् !

भगवान् न बहा—कल्याण ! कल्याण !—भ्रान्त न बहा—उठो धम्बपाली ! महाप्रभु प्रसन्न हैं। धम्बपाली न यथाविधि भगवान् का अध्यात्म पाठ श्रुत्वा स पूजन किया और चरण रज नत्रों म लगाई फिर हाथ बाध सम्मुख खड़ी हो गई।

भगवान् न हसकर बहा—ध्रुव और क्या चाहिए धम्बपाली ?

‘प्रभा ! भावन् ! इस धरणाथ का प्रतिष्थ स्वीकार हो इन चरण-कमला की देवभक्त म रज-कण विद्धुरो की कुटिया की प्रणम हो।

प्रभु म बहण स्वर म बहा—नयास्तु !—मिथुण सत्स कण्ठ स जयोत्लान्त में विल्ला उठ। परन्तु यह क्या ? उत नाद को विनीत करता हुआ एक और नाद उठा। भगवान् न पूछा—भ्रान्त ! यह क्या है ?—प्रभो ! लिच्छविराजवम और धनात्मवग धीपा-वष के दसनाथ का रहे हैं।—प्रभु हन पडे। धम्बपालिका हट गई। प्रतापा लिच्छविराजागर राजकुमार धमात्मवग और भद्रपुर न एकहाथ हा भगवान् के चरणों म महान् मस्तक मुका लिए। भगवान् ने बहा—कल्याण ! कल्याण ॥

महाराज न पद धूलि मुकुट पर लगाकर बहा—महाप्रभु ! यह तुच्छ राजधानी इन चरणों के पधारन स कृतकृत्य हुई। परन्तु प्रभो ! यह क्या की बादा है थीचरणों क योग्य नहा। प्रभु क लिए राजभ्रामाद प्रस्तुत है और राजवग प्रभु प्र-सवा को बहुत उत्सुक है। भगवान् न हसकर बहा—तयागत के लिए क्या और राजा में क्या भन्तर है ? तयागत समदृष्टि है।

‘प्रभो ! तब क्या का आतिथ्य राज परिवार को प्रणम कर कृताय करें।

‘वह तो मैं धम्बपाली का स्वीकार कर चुका।

राजा निरन्तर हुए। वे फिर प्रणाम कर सौते। कुछ श्वेत वस्त्र धारण किए वे कुछ लान और कुछ धानुपण पहने थे।

धम्बपालिका रथ में बैठकर सौती। उसने प्रार्थना की—मरा रथ लिच्छवि महाराजाओं क बराबर हानो। उनके पहिए क बराबर मेरा पहिया और उनके

पुरे क बराबर मेरा घुरा रहे तथा उनके छोटे के बराबर मेरा पोडा ।
लिच्छविया न देखकर प्रोवमिधित आशय से पूछा—अम्बपालिका

क्या बात है ? तू हम सागो के बराबर अपना रथ हाक रही है ?
उसने उत्तर दिया—मेरे प्रभु ! मने तयागत और उनके निप्यवग

। भोजन का निमन्त्रण किया है और व० उहाने स्वीकार किया है ।
उन्हाने कहा—हे अम्बपाली ! हमस एव सास स्वर्ण-मुद्रा से और यह

भोजन हम करान दे ।
मेरे प्रभु यह सम्भव ही नहीं है ।
तब सी ग्राम ने और यह निमन्त्रण हमें बच दे ।
‘नहा स्वामी ! क्तापि नही ।

प्राधा राय से और यह निमन्त्रण हम दे दे ।
मेरे प्रभु ! प्राय एव तुष्य भूखण के स्वामी है पर यदि समस्त भूमण्डल
क चक्रवर्ती भी होते और अपना मनस्त साम्राज्य मुक्त देत तो भी मैं एसी कीर्ति
की जयनार को नहीं बच सकती थी ।

लिच्छवि राजाप्रा ने तब अपना हाथ पटनकर कहा—हाय ! अम्बपालिका
ने हम पराजित कर लिया अम्बपालिका हमसे बढ़ गई । अम्बपालिका ! तब
तुम स्वच्छन्दता से हमसे प्राय रथ हावो । अम्बपालिका न रथ बढ़ाया । गद का
एक तूफान पीछे रह गया ।

दस सहस्र भिक्षा के साथ भगवान् बुद्ध न अम्बपालिका क प्रासाद की
आपौरित किया । घणाली के राज-भाग म नगर क प्राण प्रा जूक थ । महा
पुण्य बुद्ध और उनके शीतरागी भिक्षु भूमि पर दृष्टि दिए पदल धीरे धारे प्रागे
रह थे । नगर के थळिगण दूकानों स उठ-उठकर प्राग की भूमि की
मगवान् के कारण रतन स पूव अपने उत्तरीय स माड़ रहे थ । कोई नागरिक
ही स निकलकर पथ पर अपने बहुमूल्य शाल विद्या रहे थ । महाप्रभु बिना कुछ
ह एकरम धीरे धीरे प्राग बढ़ रहे थ । वह महान स-यागी प्रबल शीतरागी महा
ए वृद्धपुरप थळ जय-जयकार की प्रवण घोषणा स जरा भी विचलित
हो रहा था । उसकी दृष्टि मानो पृथ्वी म पाताल तक घुस गई थी । पौर
स भरोसों से शीत और पुण्य-वर्षा कर रही थी । अम्बपालिका का शोरण

घाते ही चार दण्डघरों न दौड़कर पथ पर कौशय विद्या लिया । द्वार म प्रवेश करने पर सबत्र कौशय विद्या था । धनगिनत धमचारी भिक्षुगण क सम्मानाय दौड़ पड़े । पीतवसनधारी मुण्डिन भिक्षु नक्षत्रा की तरह उस विशाल प्रांगण में महाजनममृह म धमप रहे थे ।

अत्रिय गाला म भगवान् क पहुचत ही धम्बपालिका न दासी दामियो के साथ स्वय आकर तयागत के चरणा म सिर झकाया और वही से बह धपन अचल सं पय की धून भावती हुई प्रभु को भीतरी अलिन तक से गई । इम समय प्रभु के साथ केवल धानन्द धन रहे थ ।

प्रांगण के मध्य में एक चन्दन की धौवी पर शुद्ध धामन विद्या था । धम्बपालिका के धनुरोध पर प्रभु बहा विराजमान हुए । धम्बपालिका ने धव्य पाछ दान करके भोजन प्रस्तुत करने की धाना मागी । धाना मिलत ही धम्बपालिका स्वयं स्वण-धान म भोजन ले आई । अतक प्रकार के चावल और राटिया थी । धम्बपालिका सवा में करबद्ध खडी रही । भगवान् न मौन होकर भोजन किया और तृप्त होकर कहा—बस ।

धम्बपालिका क नेत्रो से अश्रुधारा बही । प्रभु ज्यों ही शुद्ध होकर धामन पर विराजे धम्बपालिका न पृथ्वी म गिरकर प्रलाम किया ।

भगवान् न कहा—धम्बपालिका अथ और तरी क्या इच्छा है ?

प्रभु एक शुद्ध मिठा प्रदान हा ?

तयागत ने गम्भीर होकर कहा—वह क्या है ?

प्रभो ! धाना कीजिए कोई भिक्षु धपना उत्तरीय प्रदान करे । धानन न उत्तरीय उतारकर धम्बपालिका को दे दिया । क्षण भर के लिए धम्बपालिका भीतर गई परन्तु दूसर ही क्षण वह उसी वस्त्र से धम नपटे था रही थी । उस बौद्ध भिक्षु क प्रदान किए एकमात्र वस्त्र को छोड़कर उसक पास न कोई और वस्त्र था न धामरण । उसके नत्रो म अचिरल अश्रुधारा बह रही थी । भगवान् विमूढ़ उतका ध्यापार देख रहे थे । वह धापर भगवान् के सम्मुख फिर सोट गई ।

भगवान् ने धुम हस्त स उस स्पश करके कहा—उठो उठो ! हकस्याणी ! तुम्हारी इच्छा क्या है ?

‘महाप्रभु ! अचरित्र दासी की धृष्टता क्षमा हो । यह महानारी-शरीर कस

घुने व बराबर मेरा घुस रहे तथा उनके घोड़े के बराबर मेरा घोड़ा ।
लिच्छविया न देखकर शोचमिथित आश्चय से पूछा—अम्बपालिके य

क्या बात है ? तू हम लागे के बराबर अपना रथ हाव रही है ?
उसने उत्तर दिया—मेरे प्रभु ! मैंने तथागत और उनके शिष्यवग को
मोजन का निमन्त्रण किया है और वह उहाने स्वीकार किया है ।
उन्हाने कहा—हे अम्बपाली ! हमस एक साल स्वर्ण-मुद्रा से और यह
मोजन हम करान दे ।

मेरे प्रभु यह सम्भव ही नहीं है ।

तब सी प्राम ले और यह निमन्त्रण हमें बच दे ।
नहीं स्वामी ! बदापि नहीं ।

आप राय ले और यह निमन्त्रण हम दे दे ।
मेरे प्रभु ! आप एक तुच्छ भूमण्ड के स्वामी है पर यदि समस्त भूमण्ड

व पकड़ती भी होते और अपना समस्त साम्राज्य मुझ देते तो भी मैं ऐसी कीर्ति
की जयनार को नहीं बच सकती थी ।
लिच्छवि राजापो न तब अपना हाथ पटककर कहा—हाय ! अम्बपालिका

ने हम पराजित कर दिया अम्बपालिका हमसे बढ़ गई । अम्बपालिक ! तब
तुम स्वच्छन्दता से हमसे भाग रथ हाका । अम्बपालिका ने रथ बढ़ाया । गद का
एक तूफान पीड़े रह गया ।

दस साल भिक्षुघा के साथ भगवान् बुद्ध ने अम्बपालिका के आश्रम को
अलोकित किया । वशाली के राज-भाग न नगर के प्राण का जूझ था । महा
प बुद्ध और उनके धीतरागी भिक्षु भूमि पर दृष्टि दिए पदल धीरे धीरे भागे
रहे थे । नगर के अष्टिगण दुकानों से उठ-उठकर भाग की भूमि को
भान् के चरण रसन से पूव अपने उत्तरीय से भाव रहे थे । कोई नागरिक
से निकलकर पथ पर अपने बहुमूल्य घाल बिछा रहे थे । महाप्रभु बिना कुछ
करत धीरे धीरे भाग बढ़ रहे थे । वह महान सन्घाती प्रसन्न धीतरागी महा
बुद्धपुरष श्रेष्ठ जय-जयकार की प्रवण घोषणा से जरा भी विचलित
रहा था । उसकी दृष्टि मानो पृथ्वी से पातान तक घुस गई थी ।
करोती से खीन और पुण-वर्षा कर रही थी ।

अत ही चार दण्डपरो न दौडकर पय पर कौशय विद्या लिया । दान म प्रवेग करन पर सबत्र कौशय विद्या था । अनगिनन कमचारी भिन्नगण क सम्मानाय दौड पड । पीतवसनचारी मुण्डिन भिन्नु नभना की तरह उस बिगाल प्राणल में मन्त्रजनमूह म चमक रह थ ।

अत्रिपि गाय म भगवान् क पदुवन हा अम्बपालिका न दासी दानिदा के साथ स्वय आकर तयागत क चरणा म तिर भ्रमाया और वहा स बहु अनन प्रचल स पय की धून नाहती हुई प्रमु का भीतरी अतिन् तक से गई । इस समय प्रनु क साथ केवल धानन् चन रहे थ ।

प्राणल के मध्य म एन चन्त की चौरी पर गुड आमन विद्या था । अम्बपालिका के धनुराय पर प्रमु वहा विराजमान हुए । अम्बपालिका न अथ पाछ दान करके भाजन प्रस्तुत करन की आना मंगी । आना मिलत ही अम्बपालिका स्वय स्वय-भान में भोजन से आई । अतक प्रकार क चावल और रागिया था । अम्बपालिका सवा में करवढ खी रही । भगवान् ने मोन होकर भोजन किया और तृप्त हाकर कहा—वस ।

अम्बपालिका क नत्रा से अयुधारा बही । प्रन ज्यों ही गुड होकर धानन पर विराजे, अम्बपालिका न पृथ्वी म गिरकर प्रलाम किया ।

भगवान् न कहा—अम्बपालिका अर और तरी क्या इच्छा है ?

‘प्रमु एक सुध भिक्षा प्रदान हो ?

तयागत ने सम्भार हाकर कहा—वह क्या है ?

‘प्रभो ! आना काशिए, कोई भिक्ष अपना उत्तराय प्रदान करे । धानन् उत्तरीय उतारकर अम्बपालिका को द दिया । शण भर क लिए अम्बपालिका भीतर गई परन्तु दूतर ही शण वह उनी वस्त्र स अग लपट आ रही थी । उस बौद्ध भिक्ष के प्रदान किए एकमान वस्त्र को छोडकर उसक पास न कोई और वस्त्र था न आभरण । उसके नत्रों म अकिरम अयुधारा बह रही थी । भगवान् विमूढ़ उमका व्यापार देख रह थ । वह आकर भगवान् के सम्मुख फि साट गई ।

भगवान् ने शुभ हस्त स उम स्पश करके कहा—उठो उठो ! हे कल्याणी ! तुम्हारी इच्छा क्या है ?

‘महाप्रभु ! अथवित्र दासी की घृष्टता शमा हो । यह महानासी-उरीर बस

क्रीता

श्रीदशम स्कंध की व्यापकता और महानता की एक मूलक शत कहानी में है।

घन्य स्वभाव का अर्द्धा पुरुष था। उसकी बहुत सम्पत्ति थी। दास-गाली भी अनेक थे परन्तु उसने बमुमती के शील स्नेह और अल्पावस्था होने के कारण उसे उन दास-दासियों को श्रेणी में रखना ठीक नहीं समझा। उसे उसने खास तौर पर अपनी पत्नी भद्रा के सुपुर्द कर दिया। भद्रा देखने में सुन्दर थी। सेठ्ठी अठारह श्रेणियों का जेदूक था उसकी बहुत धन-सम्पत्ति होने पर भी सन्तान नहीं थी। इससे वह अत्यन्त दुःखी था। उसने सन्तान के लिए बहुत प्रयत्न किए नाम भूत यज्ञ इत्यादि स्तुति शिव वक्ष्यन आदि देवी-देवताओं की मनौती की और अनेक व्रत किए पर कोई नतीजा नहीं हुआ। ऐसी अवस्था में उसने दासों की हाट से बमुमती को खरीद लिया।

बमुमती को पाकर उसका शील और रूप देखकर भद्रा ने पहले तो उसे सन्देह में देखा—फिर जब सेठ्ठी ने कहा कि इसे मैंने तेरी ही सेवा के लिए खरीदा है पुत्री की भाँति पालना तब वह प्रमत्त हो गई और बमुमती को स्नेह से देखने लगी। बमुमती ने भी भाग्य-दोष पर सतोष और भय धारण किया और उसने अपने शील-स्वभाव से शीघ्र ही घर के लोगों को यज्ञ में बर लिया। सेठ्ठी भी उसका बहुत ध्यान रखने लगे। भोजन के समय वे उसे अवश उपस्थित रखते। उसके हाथ में परसे भोजन की वे सहायता करते। बहुधा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यत्नवादी रहते।

दास-दासी यह देख बमुमती को कुछ टिपटिप से देखने लगे। समय-समय पर कुछ महलगी दासियों ने भद्रा के कान भर दिए। भद्रा बमुमती से ईर्ष्या कर ली। उसे यह सदेह हो गया कि कहीं उसने नवगात्र पर विमोहित हो सेठ्ठी को गृह-स्वामिनी ही न बना दें। बमुमती से उसका व्यवहार बुरा और अस्वभाविक होने लगा। इसपर भी बमुमती का शील भंग नहीं हुआ। उसने वैधर्म्य रूप से वह सब सहन कर लिया।

एक दिन दोपहर के समय घन्य सेट्टी घर में आयी। उस समय घर में कोई दास-दासी उपस्थित न थी। बसुमती उस समय स्नान कर अपने बाल सुता रही थी। उसके कोमल शिकने धुपराते कुतल पीठ पर एभी तक सटक रहे थे। उनमें गन्धमादन की गन्ध बस रही थी। कुमारी के मुकुमार कौभाय की चम्पक प्रभा पर वं पादचुन्वी केच भसाधारण शोभा विस्तार कर रहे थे। उसने देखा सेट्टी के पर घोने के लिए कोई दास-दासी नहीं है तो वह स्वयं जलपान लेकर आई और सेट्टी के अरणों में बैठकर अपने हाथ स उसके पर घोन लगी। सेट्टी उसके मृदुल स्पर्श और सुगन्धित केच तथा नवीन केच के पत्त के समान नव विवसित यौवन की प्रभातपूण समान घाभा को देखकर विमोहित हो गया। परन्तु हठबडी और काम में अस्त-व्यस्त होन से बसुमती के सब बाल कीचड म खराब होन लग। इसपर सेट्टी ने उन्हें अपना साठी से ऊपर उठा लिया और हंसत-हंसते उन्हें अपने हाथ से बाध दिया। बसुमती लजा से गड गई। वह पर धो उन्हें आचन स पोंछ, रिक्त जल-यात्र स धबराई-सी अपने कक्ष म भाग गई।

भग्न न एक गवाझ से यह सब कृत्य देखा। देखकर वह क्राध से घाग्न-बूला हो गई। ईर्ष्या से उसका सारा शरार जसन लगा। वह रोगी होन का बहाना करके पठ रही। वह सोचन लगी। निश्चय ही मरे पति के मन में इस दासी से प्रेम हो गया है। वह इससे विवाह कर इसीको गृहस्वामिनी बना लेगा और मुझ कोई न पूछेगा। वह बहुत देर तक रोती रही। सेट्टी के पूछन पर उसने रोग का बहाना कर दिया।

जब सेट्टी घर म बाहर चला गया तो भग्न चिन्तित हो उठी। वह सोचने लगी क्यापि बन्त स प्रयम ही उसका इलाज करना चाहिए। उसका सारा क्रोध बसुमती पर उमड घाया। उसकी मुहलगी दासियों ने अनेक कल्पित बातें बना बनाकर उसे और भी उभारा। भग्न ने क्रोध म भरकर नारी को बुलाकर कहा—इस दुष्टा दुष्चरित्रा दासी का सिर मूड दे।

नारी न उस्तरे स बसुमती का सिर मूड लिया। इमने बान् भद्रा ने उसे श्रुसता से बांधकर खूब पीटा। इतने पर भी उमका क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने उसको एक अघेरी कीठरी में बन्कर बाहर से लाता लगा दिया।

भोजन के समय सेट्टी ने घम्यास के अनुसार बसुमती का स्मरण किया।

उसके भय और आश्चय की सीमा न रही जब उसने देखा स्वयं थमए महावीर उसने सम्मुख खड़े अजलि फलाए स्मित वदन भिक्षा की मौन याचना कर रहे हैं ।

चन्द्रमद्रा ने ज्याही थमए महावीर की और प्राप्त उठाकर दखा उन्होंने शांत भाव से भिक्षा के लिए हाथ फला दिए । और मसुमती ने श्रुत्वावद कुलयी से मरी अजलि भगवान् महावीर की हथेलियों पर खाली कर दी । थमए महावीर ने भिक्षाग्रहण कर कहा राजकुमारी तुम्हारा कल्याण हो ।

इसी समय सेट्टी गृहपति ने लुहार के साथ आकर थमए के ये वाक्य सुन । उसे यह देखकर आश्चय हुआ कि चार मास के बाद भगवान् महावीर का अभिग्रह पूरा हुआ । लणभर ही में बहुत-से दास-दासी वहाँ आ एकत्र हुए । सेट्टी ने कहा—भगवद् ! आपने मेरी दासी के हाथ से भिक्षा ग्रहण कर और अपना अभिग्रह पूर्ण कर उसे प्रक्षय पुण्य दिया परन्तु उसे राजकुमारी कसे कहा कृपया यह भूँ बचाइए ।

थमए महावीर ने गम्भीर मुद्रा से कहा—सेट्टी यह महाभागा चम्वाधिपति महाराज दधिवाहन की पुत्री राजकुमारी चन्द्रमद्रा है । अब स चार मास पूर्व चम्वा का पतन हुआ । तभी मैंने यह व्रत मन ही मन लिया था कि यदि कोई दासत्व को प्राप्त श्रुत्वावद मुण्डितशिर राजकुमारी आहार दगी तो मैं ग्रहण करूँगा । मुझ भ्रमण करते चार मास बीत गए । दैव विपाक से आज अभिग्रह पूरा हुआ । राजकुमारी के शील और धर्म से मैं सन्तुष्ट हूँ । आज से मैं उसका नाम रखता हूँ 'शीलचन्दना' ।

इतना कह उन्होंने वहीं बैठकर पारणा की । थमए महावीर की पारणा का समाचार विद्युत् वेग से नगर में फैल गया । सब कोई धन्य सेट्टी के घर की ओर दौड़े । दखते-दखते घर के द्वार पर भीड़ लग गई । थमए महावीर ने वह फुसयी खाकर तीन अजलि जन दिया—फिर स्वस्थ होकर अनुपूर्वी कृपा प्रमग से सबको धर्मोपदेश दिया ।

धन्य ने राजकुमारी की श्रुत्वावद काटकर उम वस्त्र भूषण-सज्जिता कर^६ थमए महावीर की सेवा में उपस्थित किया । भग्न न आकर अपनी अविनय की कुमारी से दामा मांगी । थमए ने कहा—तुम शील तुम्हारा कल्याण हो अभी तुम यहाँ सेट्टी के यहाँ रहो । और मैं धन्य यह महाभागा राजनन्दिनी अब

स अमल महावीर की याती तुम्हारे यहाँ है। इसकी यत्न से रक्षा करना सेट्टी और मुन्ग नग तुम्हें भी अमल का यही आदेश है।

दोनों में नरमस्तर हो अमल महावीर के चरणों में फिर मुका लिया। अमल महावीर ने उन्हें आशीर्वाचन कह नवसिर राजकुमारी की आर कसल नर्वों में दक्षा। फिर कहा—पुत्री शील तू मरी प्रथम सिध्या है। तुम्हें भ्रमणी सघ का नवृत्त करना होगा इसीसे तब कल्याण होगा।

राजकुमारी अमल के चरणों में झुक गई। अमल उस हस्त-स्पर्श से आध्यापित करत हुए धीरे-धीरे चल गए। अमल महावीर की पारणा और अम्बानन्दिनी की शबर नगर में अनेक रूपा में फल गई।

प्रतिदान

बौद्ध धर्म को सदैव राज्याभय प्राप्त होता रहा। अनेक राजसूक्त बौद्ध धर्म में सुनकरे रहे। ऐसे ही एक महत् राजा की मातृकता की रूपरेखा इस कहानी में बर्णित है।

छठी शताब्दी समाप्त हो रहा थी और उसीके साथ परम प्रतापी गुप्त साम्राज्य भी जिसने पाटलिपुत्र के स्वर्ण सिंहासन से गरुडध्वज की छत्रछाया में प्राची पृथ्वी पर शासन किया और धर्म-ज्ञान-संस्कृति का अमर दान किया था। पाटलिपुत्र की सारी थी कन्नौज में आ चुकी थी जहाँ महानुप हयवर्धन मध्यकाल के मूर्ख की भाँति उत्तर भारत पर अशुभ शासन कर रहे थे। उस समय उनके जसा बौद्ध विद्वान् दाना और ग्याय-नरपति पृथ्वी पर नुसरा नहीं था।

उत्तर भारत में सम्राट् हयवर्धन ने केवल मुम्बयस्या का शासन ही नहीं स्थापित किया था वह अपने काल के बौद्ध धर्म को फिर से जागरित करने में भी सन-मन से लगा था। उसकी नीति उदार थी। विद्वाना और धर्मम्यानों के लिए तथा गिशा और संस्कृति के प्रचार के लिए उसने प्रायः का चौपाई भाग अलग निकाल रखा था। इस धन से वह उच्छकोटि के विद्वानों को ग्रन्थकर्ताओं को धार्मिक पुराणों को सुले हाय दान देता था।

सम्राट् की राजसभा जुड़ी थी। प्रमुख मन्त्रापरिषद् महाकवि धाणभट्ट अपने दिग्गज पुत्र भूपण के साथ सम्राट् के दक्षिण पार्श्व में विराजमान थे। उनके निश्च ही महाकवीवर मयूर ऊची गर्जन किए घबल वेग में बैठ थे। समा मण्डप में राजमंत्री राग्य-वरिषद् के सम्य और उच्च मन्त्रिक अधिपतिगण अपने अपने आसना पर बैठे थे। सबसे बीच में मन्त्र के समान तजवान् सम्राट् हयवर्धन श्वेत परिधान पहन उच्च मणिपीठ पर विराजमान थे। सम्राट् के सम्मुख परम बौद्ध विद्या महारथी महापरिषद् जयसेन चन्दन की एक चौकी पर शान्त मुद्रा में बैठे थे। सम्राट् ने मयूर मुस्वान के साथ मयूर स्वर में कहा—
सभापरिषद् महापरिषद् जयसेन की सद्यः सेवा की कीर्ति-वताका

विद्वत्ता और धर्मनिष्ठा मात्र सनस्त बौद्ध धर्म में विरपाठ है। प्राचाय जयसेन का पाण्डित्य प्राणाय है और सद्धर्म सेवा महान् है। मान्यवर पण्डितराज का उत्कार हमारे हृदयों में है धर्म-ज्ञान से वह पूर्ण नहीं होगा तथापि कस्मिन् के अस्सा गावा का कर मात्र से प्राचाय जनसंघ को मिले। इसका यह पट्टा मैं प्राचार्य को भेंट करता हूँ।—सभी धन्य धन्य कह उठे।

पण्डितवर जयसेन क्षणभर मौन मुग्ध में बैठ रह। राजसभा में सन्नाटा छा गया। इस महाज्ञान के प्रत्युत्तर में जयसेन प्राचाय सम्राट को किस प्रकार धन्यवाद देते हैं यह जानने को सभी उत्सुक हो उठ। प्राचाय जयसेन उठ। सभा में एक धीमा जनरव उठकर फिर तुरन्त ही सन्नाटा छा गया।

महापण्डित जयसेन ने दोनों हाथ उठाकर सम्राट का अभिनन्दन किया। इसके बाद गम्भीर स्वर में कहा—सम्राट प्रापकी धर्म में जसी रुचि है और जसा प्रापका यश है वसा ही यह महाज्ञान प्रापने मुझ अविश्वसनीय को मेरी धर्मसेवा एवं अज्ञान के उपलक्ष्य में दिया है। इस उदार दान ने प्राको महान् अशोक का समकक्ष बना दिया है परन्तु सम्राट ! मुझ भिक्षु को इतना धन क्या करना है। मुझे वष में दो बार दो वस्त्र और प्रतिदिन एक बार प्याऊ बंजलि धन चाहिए। इतना तो थोड़ा नागरिक मुझ प्रजापति ही भिक्षा दे देते हैं। फिर प्रापका यह धन निरर्थक क्यों रहे ? धनराशि की प्रावश्यकता तो प्रापके जैसे सम्राट को होती है। जैसे विद्वान् अपनी विद्या द्वारा मनुष्यों का कल्याण करते हैं वही तरह सम्राटों का धन द्वारा करना चाहिए। इसीलिए धर्मान्या सम्राट ! अपने इस धन को अपने पास रखकर मनुष्य-जाति के कल्याण में लगाइए यही मेरा प्रापने अनुरोध है।

प्राचाय जयसेन का दृढ़ अर्थात् त्याग दत्तकर राजसभा स्तम्भित हो गई। बुद्ध नाम तक सन्नाटा रहा परन्तु तुरन्त ही साधु-भाषु की ध्वनि से विगत समाज समादरप मुख उठा।

सम्राट् हठात् रत्नपोष में उठकर खड़े हो गए। सट्टा समाप्त नतमस्तक हो अपने-अपने आसन त्याग उठ खड़े हुए। सम्राट ने प्राग दंडकर प्राचय के चरणों में प्रणाम करके कहा—पण्डितवर प्रापका त्याग भर दान में बहुत बढ़कर है। प्रापकी परणुभूति मेरे मस्तक की रोमा है। अब प्राप ही बताइए कि प्रापके इस त्याग्य धन का क्या उपयोग किया जाए ?

जयसेन ने शान्त मुनि से कहा—सम्राट रत्नपीठ पर विराजमान हो और सब राजसभासद अपने अपने भासन ग्रहण करें। फिर मैं सम्राट को सत्यवाचक बूंगा।

सम्राट रत्नपीठ पर बैठ गए। सब सभासद भी भासनों पर धा बैठे। महात्माजी जयसेन ने कहा

‘सम्राट ! आज पाटलिपुत्र का एकछत्र साम्राज्य नष्ट हो गया है और उसकी राज्यश्री ने आपके शरण सूखे हैं। जिस गुप्त वंश में समुत्पुत्र और चम्पुत्पुत्र जैसे प्रतापी विन्व विजयी बौद्ध और धर्मोक्त जैसे महापुरुष हुए वह गुप्त वंश क्षिप्त भिन्न हो गया है। परन्तु महामाया सरस्वती ने गुप्त सम्राटों की विमल स्वामी की अभी नहीं छोड़ा है। बिहार में नानन्दा विश्वविद्यालय आज भी संसार की अद्वितीय विद्या-संस्था है। नानन्दा विश्वभारती में दस हजार छात्र महाविद्यालयों का अध्ययन करते हैं। ये चीन जापान भोट तिब्बत, कुमावत, यूनान और समस्त संसार के दूर देशों ने अपनी ज्ञान विद्या की कृपण करने और अज्ञानजनित अन्धकार को दूर करने आते हैं। वहाँ के छात्र और नियम पृथ्वीभर में अष्ट और आदेश माने आते हैं। वहाँ के छात्र रात दिन शास्त्र अध्यापन में लगे रहते हैं। वहाँ पर बौद्धधर्म ने महावान तथा दोष अन्तर्ह बौद्ध सम्प्रदायों के परम गोपनीय शास्त्रों का अध्ययन कराया जाता है। इसके सिवा हेतुविद्या वेदविद्या तन्त्रविद्या शक्तिविद्या चिन्तितशास्त्र इन्द्रजाल अथर्ववेद और सांख्यदि दशम ज्योतिष के अलावा अनेक विद्याओं का अध्ययन होता है। इस विश्वभारती का अथर्व छात्रों के बौद्धिक और आत्मिक ज्ञान ज्योतिष को आणवित करना है। वहाँ के स्नातक अथर्वपाल गुणों में स्थिर मति चन्द्रात्मक आदि महादिग्गज अर्थियों के बुद्धि-अभिरुचि और सदाचार पर समस्त बौद्ध संसार गवित है। उन धर्म के महा आचार्य महावीर स्वामी और उनके प्रमुख गिष्य इन्द्रभूति ने वहाँ आतुर्भाव व्यतीत किया था। महाबुद्ध तथ्यागत ने भी संपगादनीय गुप्त के बद्ध गुरुत्व का प्रवर्तन इसी क्षण में किया था। वहाँ ही वह अणुविश्यात अग्रतिम आत्मवाटिका है जिसे पाँच सौ व्यापारियों ने दत्त कराव मुनि ने गरीदकर भगवान् बुद्ध को अणु की भी तथा वहीं तथ्यागत बुद्ध ने सारिपुत्र का समाधान किया था और इसी भूमि पर आज सारिपुत्र और आज मौद्गल्यायन अस्ती हजार अर्थियों के साथ निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे। वहाँ

के निवासियों का जीवन तपस्या ब्रह्मचर्य और श्रद्धा इन तीनों से प्रदीप्त है। महाराज इस समय वहाँ एक सहस्र ऐसे विद्वान् उपस्थित हैं जो दस विद्याओं के पारंगत हैं और पाच सौ ऐसे महापंडित हैं जो तीस विद्याएं जानते हैं। दस आचार्य पचास विद्याभा के ज्ञाता हैं। कुलपति धीतभद्र आचार्य और भगवान् दीपकर तो साक्षात् सभी विद्याभा के सागर हैं। वहाँ सब समान हैं। राजा और रक्त में भेद नहीं है। सभी पर सब नियम समान राति से लागू हैं।

महाराज यह महा विन्वभारती अस्तगत गुप्त सम्राटों की कीर्ति-नीमुदी का एकमात्र अवशेष है। जिसकी ध्वज से पाच सौ वर्ष पूर्व प्रतापी शुक्रादित्य ने स्थापना की थी। महाराज! वही मौखरी राज ने वह अश्रितम बुद्ध प्रतिमा निर्माण की है जो सुद्ध अष्ट धातु से बनी है। और जिसकी ऊंचाई नब्ब हाथ है तथा जिसकी स्थापना छत्र मजिल के श्वेत पत्थरो के भवन पर की गई है। सम्राट्, आज गुप्त वंश की राजसंभूमि आपके घरण-तप्त में है। आप महाविद्या-भ्यसनी और परम धार्मिक महानृप हैं। आप अपनी अक्षय कीर्ति की स्थापना के लिए नालन्दा विन्वभारती के सरक्षक धनिए और दूसरे अंगोक्त वा स्थान पूर्ण कीजिए तथा यह संपत्ति जो आप मुझको ध्यय ही दे रहे हैं नालन्दा विन्वभारती को प्रदान कीजिए।

इतना कहकर परम त्यागी साधुवर जयसेन अपने आसन पर मौन हो बैठ गए। सम्राट जहदत् बड़ी देर तक बठे रहे। सभास्थल में सन्नाटा छा गया।

कुछ काल बाद सम्राट ने आँसों में धामू भरकर महामंत्री की ओर देखा और गद्गद वाली से कहा—आमात्य आज से हम नालन्दा विन्वभारती सरक्षक हुए। अपनी एक सौ आठ गाँवों का पट्टा नालन्दा विन्वभारती के नाम लिख दो और वहाँ एक सौ आठ ऐसे भवनों का तुरन्त निर्माण कराओ जो पृथ्वी भर में अद्वितीय हों। साथ ही विन्वभारती के चारों ओर दृढ़ बोट बनवा दो। नालन्दा के प्रत्येक स्नातक के लिए मेरे कोप को खोल दो। और मरी आजा की प्रतीप्ता किए बिना ही उन्हें महमाणा धन दो।—इतना कहकर सम्राट हृयवर्धन न सठे होकर अपने रत्न-जटित मुकुट को तनिक नीचा करके बढीजति होकर आचार्य जयसेन से कहा—आचार्यवर! नालन्दा विन्वभारती के लिए मैंने अपना सबस्व दिया। आप प्रसन्न होइए।—जयसेन आसन से उठ उन्हने दोनों हाथ ऊँचे करके कहा—साधु राजन् साधु!—राजसभा जयनाद कर उठी!

अमानक हास्य था वह । यह फिर कुछ बड़बड़ात हुए घर से बाहर निकल गए ।
दिवर ही रखा करे । क्या जानू क्या होनेवाला है । मुझ धवला को तो एक
उन्हींका सहारा है ।

या भारताह ! मैं क्या कर गुजरी मुझ यह हिम्मत ही कैसे हुई ? मैं एक
सादीसुदा खानम हू मेरा शौहर है खूबसूरत जवान और दिल से प्यार करने-
वाला । पर मैं धार माम स महू का घूट पीती रही भीतर ही भीतर घुटती
रही । जम दिन जो उसने मज्ज छुई तो जैसे बिजली झू गई हो । सुदा का
घुक है मैं समझ गई यहाँ न जाने क्या राख्य होता ?

वाह क्या बोका जवान है क्या बमोद मन्-बच्चा है क्या लीरीं जवान
है ! धातबीत ब्यवहार म क्या नपासत है ! माना हिंदू है तब हिंदू क्या
इन्सान नहीं होते ? मैं नबी को सिजदा करती हू मगर इंसान से नफरत नहीं
कर सकती । मगर मैं यह सोच क्या रही हू ? इसका धंजाम क्या होगा ?
शिमलत रुसवाई दर्द बर्बादी और न जाने क्या क्या ? क्या बस्त मुमकिन है ?
नहीं, कभी नहीं । मैं सुदा को क्या जवाब दूंगी ? शौहर से फरेब कर रही हूँ
ईमान से बेईमान बन रही हूँ मैं दीने इस्लाम की सौहीन कर रही हूँ मैं गुनाह
कर रही हूँ । हाय ! धरे मैं सतान के पजे में फन गई हूँ । यह खुद शैतान
ही मोहनी मूरत बनाकर मेरे सामने आया है । घाठ ! ओ सतान तू मेरी
घाखों और दिल स दूर हो मैं जान ओ दुंगी । धस्मत मेरी प्यारी धस्मत
पर बारन कर, ओ शैतान ! ओ काफिर ! हाय ! मैं क्या बक रही हूँ ? प्यारे
शतान शिमदवा काफिर, तुम निघर से इन पराये शिम में घर कर बठ ?
धस्मत घाह ! धब मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं किसी भी तरह नहीं । हूबना होगा
हूबंगी मरना होगा मरुंगी । मगर प्यारे क्या तुम भी मेरी तरह परेशान हो ?
क्या तुम्हारे भी बमज मं दर्द उठा है ? वह मुहम्मत ही क्या जहाँ दोनों तरफ
आग न लगी हो ! दोस्तमद क्या तुम मुझे पू सक्ते हो ? तुम्हारा धर्म क्या
इजाजत देगा ? बाघ तुम मुसलमान होने ? मगर क्यों ? मैं ही हिंदू न होती ।
मच्छा, हिंदू होने में क्या करना होता है ? सुतपरससी ठीक । यह तो मैं कर
पुकी लो गो-त भी छोडा और सतवार भी । सम्बी तरकारी क्या नुरी है ?
मैं सादी पहनूंगी ।

दोस्त से इन्क की मेरा हर इतरए-सरक^१
सकमा^२ है मेरी खेब^३ में दुर-यतीम^४ का।

तबियत ख खर खराती है। घासमान घरती में घुसा जाता है। दिमाग में भांधी पस रही है। स्त्री सदा रोती है। बच्चा बल-बेवक्त कभी हसता है कभी रोता है कसा बेहूना है। मरीख हरामजादे हैं मालूम होता है इन्हें पर म ठिकाना नहीं। यही पड़े रहत हैं। डाक्टर साहब यह हूमा डाक्टर साहब यह हूमा। कबस्त न मरते हैं न जीते हैं मुक खाते हैं। मैं दवाखाने को फूक दूंगा। मुक फुसत नहीं। मार-बोस्त मक्खी की मोनाद मालूम होते हैं। जब देखो चारों तरफ भिनभिनाया करते हैं। रिस्तेदार बुखार की तरह सिर पर पड भाते हैं। उफ! कितनी गर्मी है। यह इतना धार क्यों मस रहा है? यह कमरा भी कितना सग है जैसे कद हो। मैं इसकी दीवार तोड डालूंगा।

वह सत ही वह सत भामा है तीन गिन हुए। मगर पूरा पद पाया हू या नहीं याद नहीं आता कितनी बार सौ पदा। पर पूरा भी पढा या नहीं यह नहीं कह सकता। धरे वह पदा ही नहीं जाता। देखा देखा दिल पसलियो मे से निकसा पढता है

बुस्ता^५ है उसके सुरए^६-अबर-गामीम^७ का

खुग्यू है मेरी छाक से शमन नसोम^८ का।

यह अमभव है बीना चांद को छूना चाहता है। मगर उय सत का क्या पकाब दू ? दो महीने से नहीं गया कितनी बार बुनावा भाया है। जाते ही मर जाऊंगा परन्तु बीने म क्या रखा है अब मरना तो पड़ेगा ही पर नतीजा क्या होगा ? टहरो यह बात धीरे धीरे जाएगी पहले उस सत की बात उस प्यारे सत की बात सोचने दो। वह निखती है बिबली जो घासमान से गिरे तो बरखादी ही करे। उससे किसोना कभी क्या मला हूमा ? उसकी पसक भी एसी कि भांधों में कौया मार जाए ! जिसे छुए, वह भूलसकर मर जाए। फिर भी सोग उसीका दम भरते हैं एक बार उस छू सेने का हीससा करते हैं।

१ अय २ हुंड़ी ३ गेबल ४ अन्नोत मोती ५ मार हूमा ६ खुन्द

७ सुगन्धिन = बायु

मांगी दूगी। बखुदा इस दर्द को दूर कर दो। रोज बुखार आता है। दो-दो पहर होय नहीं रहता। कोई भाकर दिस का हान पूछता है तो और मलाल होता है। यह कहानी किससे कहूँ? भाग लगे इस जवानी को। अब इतनी ताप वहाँ कि रज्जोफिराक को उठाऊँ

भगर तू माणगा, तो जाए ऊँ-या भदात—
मैं अपनी भाँखें तेरे खरे-या बिछा दूँगी।

समझ गई। असल भद मुमपर खुल गया। वह सग मीने उनकी जेब में पा लिया। वह कौन प्रभागिनी है उसे दखन की मदी सालसा है। वह मेरी जीवनभर की कमाई हुई सुख भाति विश्वास और आनंद की गृहस्त्री को नूट चुनी। सानत है उसपर। मुना है यह झाली-खानदान है उसके पति हैं पिता हैं परिवार है उन सबपर उसे सतोप नहीं। वह अपना घर फूककर छोरो का भी फूकना चाहती है। वह ईमान के ठिकाने बेईमान होकर बेईमान के ठिकाने ईमानगर होता चाहती है। क्या आवखवाली औरतें ऐसी ही होती हैं? हे परमेस्वर उसने मेरे देवता को पापी कर लिया। जिनपर मुझ गव था जो शालीस वष तक घेर की तरह निभय फिर जिनकी नजर से मेरे बकरियों को नजर भिताने की ताब न थी आज गीदरी ने उन्हें अपना सुकमा बना लिया। हा बना लिया। पर क्या हवन के भाग को कौसा या जाएगा? मेरी रया मे क्या खून नहीं? पानी है? क्या मैं अपने बाप को असल बेटी नहीं? अपने पति की पत्नी नहीं? अपने पुत्र की माता नहीं? फिर क्या मैं मुँ की तरह अपने पति का नष्ट होते देखूँ। हाँ उनकी खेप्टा म अन्तर पढ गया। वह सिंह की भाति निभय चाल और दृष्टि अब नहीं रही। अब वह खोर की भाति चलते फिरते दखते और बात-बात पर खौबने हैं। वह मुझ प्रभागिनी से मय खाने हैं। भीपी बिल्ली की भाति मेरे सामन आते और जाते हैं। उनके हात पठन को दखकर धाँकी फाली है। मैं सदा की उनकी दाणी भासाकारिणी और शिष्य रही उनका पण रज मिर पर धरकर कृताय हुई। अब वह मुझसे मय करें। यह अपनी मात है। पर पाप ऐसी ही गदी भरतु है। मेरे स्वामी पाप म गिरे हैं और उनका पठन हुषा है अब ईदवर ही भातिव है।

मैं क्या करूँ? क्या करूँ? और उन्हें फिर निभय करूँ? उनसे कहे कि

जहाँ तुम्हें सुख है रहा यह काँटा दूर हाँता है ? हाय ! धीरे कुछ दिन पूरा इस लाल के जन्म से प्रथम यह होना तो यह सब कुछ संभव था । बहुत ही आसान था । पर भय नहीं । उनके पाप पर उनकी स्त्री मार सकती है पुत्र नहीं पुत्र की माता भी नहीं । धात्र मेरा बेटा सम्भार होता जवान होता तो मैं उससे कहती—बेटे तेरे बाप ने एक धीरे स्त्री को जो दूसरे की धमपत्नी है सरी माता की जीवनभर की सेवा-भाकरी म सरीदी हुई दौलत बनायास ही दे दी है । प्रम भय उनके हृदय में नहीं आता पर है । इस अव्येक अवस्था में उनकी जवानी नहीं हुई है ।— तब मैं नहीं जानती मेरा बेटा क्या करता ! सुद मरता जँसा कि मैं मरना चाहती हूँ या बाप को ही मार डालता । पर यदि मैं मरूंगी ही तो सब कुछ तिसकर बेटे के ताबोज में रख जाऊंगी मेरे मरने का भय वह जवान धीरे बालिग होकर जानेगा धीरे अपनी वेइरडती धीरे मा की कुर्बानी का बदला लेगा ।

परन्तु माह ! यह मैं क्या सोच रही हूँ ? धीरे क्यों ? कसूर तो मेरा है स्त्री-जाति जीवनभर सुन्दरी क्यों नहीं रहती ? जवान क्यों नहीं रहती ? जवानी धीरे सौन्दर्य ही तो स्त्री का धन है । प्रम सेवा पतिव्रत इनकी पुस्तकों में तारीफ पनी है पर इनके लिखनेवाले या तो झूठ थे या भूख । इन चीजों का कुछ मूल्य नहीं । प्रम तो त्याग है धीरे मानना प्रहण है । वासना की भूख सेवा धीरे प्रम स न मिटेगी उसे चाहिए रूप-यौवन । जिस मद को वह मिलेगा वह उस क्या छोड़ेगा ?

मगर स्त्री वह स्त्री । धरे वह स्त्री क्या कर रही है ? क्या वह भी मेरी जसी नहीं ? मैंने अपने ही संभालने स अब तक धट्टाईस बप गुजार दिए । मैंने किसी मद को मर न जाना । पति को भी मैंने मर जानकर नहीं, दबता जानकर पूरा है । वह स्त्री अपने पति के रहते गर मरने पर सरीर धीरे, आत्मा से भाकमण करती है । दानवी वृत्ति एसी मधुर हो सकती है यह अब समझी । मगर मैं क्या करूँ ? भरे प्यारे बटे मेर साल ! मुझ तुम्हीं सलाह दो मैं तुम्हारी मा हूँ । जिस असाधारण अधिकार ने मुझ भवभूषक मा कहने का अवसर दिया उम अधिकार पर डाका पड़ता है । कहो मर प्यारे अवोध बच्चे ! मैं जूझ मरूँ या मैदान छोड़कर भाग जाऊँ ? हाय ! तुम हंसते हो

तों के तारे इसी भाति नभी हम भी हंमते थे मालूम होगा है वे निन
गए !

त्री मायके घरी गई । शादी का बहाना था पर असल बात में समझ
मुझे दूढ दिया गया था । मैंने बाधा न दी । मोचा था दिल का दद
ने का सुभीता मिलेगा । पुलकर रो और छूटपटा लूगा । परतु मेरी यह
पूरी न हुई । घर म सन्नाटा है भूख-प्यास से हितास साफ है । गर्मी एसी
क इस साल पढकर फिर न पड़ेगी । भीतर-बाहर से जल रहा हूँ । बहान
रात, यह रात रात दिन बह रात म बटती है । जितना ही उस बात को भुलाता
वह सामने आती है । मैंन उसे पुष्पा नहा पूने की भागा भी नहीं
कर भी न जाने क्या हवस दिल म ममाई है । दिन घबराता है दिन रात
कासिद की ओर आँखें लगी रहती हूँ । यह सत किताबत भी कितनी खतरनाक
है पर मैं पागल हो गया हूँ मैं भाग से खल रहा हूँ । नतीजा क्या होगा ? वह
पाजी छोकरा जब सत साता है हसकर सलाम करता है । नौकर-बाकर मुह
केर-फर हसते हैं । ये सब क्या मुझे भावारागदं समझन है ? क्या मैं इस बदर
गिर गया हूँ ? वहाँ जाता हूँ तो घर के लोग की सदिग्य नजरें पडती हैं ।
मगर वह है कि छुनूम म सवार है टस से मस नहीं होती । जान पर खेलने को
तयार है । संजाम बर्बादी है । खूब देख लिया और समझ लिया । नीचे बह
बता जा रहा हूँ । पतन पतन पतन । हर पतन का वही भी ठिकाना नहीं है
क्या कोई भी ऐसा नहीं जो मुझे उबार ?

स्त्री के मोट धान के बाद एक दिन यह सीपी घर चली आई । सुनकर :
रह गया । देखा यह रपीन शरीर रगीन बस्त्रा म छिपकर भी उभर रहा ।
नन्ध क्या देखता ? राग क्या बताता ? उन आँखों म जो रंग था देखकर कांप
उठा । स्त्री सड़ी नीरख दृष्टि से विष-अपणु कर रही थी । उसके होंठ पूणा से
छिद्रुड़ रहे थे । और वह तिरस्कारभरे स्वर म धीरे-धीरे रह रहकर मुछ बह
रही थी । मैं मुछ कर न सका वह भी न सका यह तिरस्कार के तीर टाकर
छुपचाप चली गई । चलती बार उसन एक दृष्टि मुझपर पंकी थी । वह
प्यासी दृष्टि वो जीवनभर याद रहेगी । उसने चलती बार जो साल को एक
बार ओर से छाती स लगाकर पूमा, तो एक ठंडी भाह निकल गई । मेरी स्त्री

क़ुदा मरिणी की भांति खड़ी देखती रही । उधर उसन देसा ही नहीं । यह नीची निगाह किए खली गई ।

यह क़ुदा मरिणी की भांति फुफकारती घर भर म लोटने लगी । भाव तीन तिन हो गए दाना नहीं बना है । साल न नहाया न उसके कपड़े बल्ल गए । घर में झाड़ू नहीं सगी । रुदन का प्रवाह बह रहा है गाप और अभिगाप का मह बरस रहा है सानतों की बोधारे बल रही हैं बाह । क्या ही मैंने पुष्प कमाया । क्या मलम किया । यही मेरी पत्नी है जिसने भूख गिनी न प्यास जीवनभर सवा करती रही । सर्दी-गर्मी सुख-दुःख सब तिर पर उतारे मेरे प्राणों म इसके प्राण भरत रहते थे मर मुख की उदासी देखकर इसके प्राण मूख जाते थे । आज यह मुझ पतित समझकर घृणा करती है । क्या इसपर काय करू ? इसकी यह मजात ! मैं मद हू जो चाहू करूंगा । इसका धपमान मैं नहीं सहूंगा । यह तो धव्य महीनों से भूखी रही है । भर दसो खो इसकी धालें गड म पुन गई हैं । येहरा कसा सफ़द हो गया है । होंठ सूख गए हैं । सीधी खड़ी नहा हा सक्ती । कमर टूट गई या भुज गई है । हे परमेवर क्या यह जान देने पर तुल गई है ? कसे पूछू ? कसे दिलासा दू ? कसे समझाऊं ? हाय ! मरा खोलने का साहस ही नहीं होता । क्या करू ? रोक कपड़े फाड़ मू उहर लाऊ ? माह । मैं किस फेर म फस गया भगवान् !

मेरे घर छोड़ने का यह परिणाम होगा यह तो सोचा भी न था । मैं खली गई थी यह सोचकर कि इनकी धालें खुल जाएगी । साल को पाद करेगे । सीधे रास्ते पर धाएंगे । परन्तु देखता हूँ पाप घर म ही घरकर बटा ! धासिर उसे मेर घर म धाने का साहस कैसे हुआ ? उस मेर सम्भुस राडे होने मेर बन्धे की छून का साहम ही कसे हुआ ? क्या पाप म भी इतना साहस है ? या मेरा सदेह बुधा है ? पर मैं जो कुछ देख चुकी उसमें सदेह क्या ?

उसने मुझमें सखी भाव से बात करने की चेष्टा की । उस सखी को पाने से पहले मैं मर क्यों न जाऊँ ? जिसने मेर जीवन का सार मूटा मेरे धिर का मुकुट उतारा मेरा जीवन धूस में मिताया मेरी सोने की गृहस्थी मिट्टी में मिताई उस में सखी भाव से कसे देखू ? धीर जो भाव मन में नहीं है उहें

मूठ-मूठ मुह पर कसे लाऊ ?

वह धाई रागिणी होकर और वह धाए डाक्टर बनकर मैं बनी तमागई।
याह ! क्या बढिया तमागा देखा ! कसा सच्चा रोगी कसे अच्छे डाक्टर ने
देखा। छूते ही ज्वर उतर गया होगा। दुष्टा मरे बच्चे को छू गई प्यार कर
गई। उसका ऐसा मांस ? हाय ! मेरी हृष्टि म उसे भस्म करने की शक्ति
न हुई मैं उसे भस्म कर दालती।

बच्चा, अब मेरे जीवित रहने में सार नहीं। मैं मरूंगी। पर वह मुझे
क्यों रहें ? चेहरा कसा सूखकर कासा हो गया है। घात उसका गए हैं। न
नहाने की चिन्ता न खाने की। मेरे प्रीते-जी यह दृशा है मरने पर क्या होगा ?
कौन उन्हें खाना बनाकर देगा ? किसीके हाथ का उन्हें खचता नहीं। मैंने ही
तो उनकी मादतें विगाड रखी हैं। बपड़ों तक को भी उन्हें सुष नहीं। हाय !
मरना भी मेरे लिए ऐसा कठिन है ? फिर सात को किसे छोड़ूं ?

जिंदगी तमस होनी थी हो गई। स्वर्वाई होनी थी हुई। गुनहगार क्या
बम हूँ ! मगर दिस को क्योंकर समझाऊँ ? छाती फटी पडती है। जब से दिस
में छुट रही थी उस दिन बहसन सवार हुई और मैं चल दी। धागा-पीछा
भी नहीं सोचा। मुझ मादूम का बहा वह नहीं है मापके गई है। इसीसे
मैंने हिम्मत की थी। वहां वह थी मैंने उसे देखकर हसकर हाथ बढाया। वह
बोली नहीं बैठने को भी न बहा। हाय महा तक मैं जसोस बनी खुदा की
मार मुभपर। इरबल-आवरु का धन्न मैं वहां तक पास करू ? मैंने कहा मैं
मग्ग निसाने धाई हूँ उमने हस दिया टेडा मुह करके। उमम बितनी नफ-
रत थी।

जब वह धाए और देखने लगे तो वह पसती धाँसों से देखती रहीं। मैं
उसकी धोर धाँसों भी तो न उठा सपी। जब मैंने उस प्यारे बच्चे को बेसास्था
छाती से सगाएर प्यार किया तब उसने मुझे सापिन की तरह घूरकर देखा।
उस नजर म जो बुद्ध जहर या उसका न बहना ही अच्छा है। मैंने हंसाकर
टालना चाहा। मगर हाय भरी हृष्टी को वहां जो दुगति हुई वह मुना दुस्मन
की भी न बराए। मेरे बानों में वे सपड गूज रहे हैं और मेरी धाँसों में उस
गुस्से धोर नपरत से भरी धाँसों सास सोहे की सनाई की तरह छुस गई हैं।

में जितना तन सकती थी तनकर रही पर गुनहवार तो मैं ही थी यतोन
 १ होकर सीट धाई । हाथ

जो न देखा था उस वह देखेंगे
 दिल के कहने में धा ग^म धासैं ।
 है दवा इनकी धातिने रखसार
 संकते हैं उस धाग पर धासैं ।
 दिल को तो घोट घोटकर रक्सा
 मानती ही नहीं मगर धासैं ।
 नौहागर कौन है मुकद्दर पर
 रोनेवालों में है मगर धासैं ।
 यही रोना है गर शबे-उम का
 फूट जाएंगी ता सहर धासैं ।
 राग धासैं निकालते हैं वह
 उनको दे दो निकालकर धासैं ।

धागोने सहर^१ मे अब कि सोना होगा
 जुड^२ टाक न सखिया न बिछीना होगा ।
 तनहाई में धाह । कौन होवेगा धनोस^३
 हम होवेगे धौर कब का कोना होगा ।

सोस्तेमन् धासिर जिमका डर था वही हुआ । धकारिब धागाह हा गए ।
 धब मिलने की राह नहीं । मराविर हो रहे हैं । जिते जित प्यार करता है वह
 दस तरह दूना है यह जब जिम तरह इलियार किया जाए । जोग ठिकाने
 नहीं कोई राबदा भी नहीं क्या तुम्हारा कोई राबदा है ? किसीसे जित की
 कहते हो ? कोई तुम्हें वसन्ती देता है या भीतर ही भीतर घुटते हो ? सब ही
 धब करना होगा धौर हम मरना होगा । जबानी हवा का भौंका है धाया धौर
 धया । दुनिया धय फानी है जिते धौर मटलवाले न रहे तब हम क्या रहेंगे ?
 कत जहां धूम य वहां धाव बीचना है । कस जो साहये-हुस्न साहये-हुसम ये धाव वे
 नहीं हैं । मकां है मकीं न रहे । हमारी हस्ती क्या है । जित सपी ही न रही

१ धाग २ कब को गे ३ सिवा

जैसे ही सपुटित हॉठ। वह हसती हुई भाई, घोर डेर-से फूल मेरी गोद में वखेर गई मैं देखती खड़ी रही। पीछे देखा तो वह लंबे जोर से हस रहे हैं बसे ही जैसे पहले हसते थे। गोद में लाल था। उसे वह उसी भांति उछाल रहे थे। बसा ही उनका चमकता हुआ गुलाबी रंग था। मैंने दौड़कर जो लाल को लेने को हाथ उठाया भाख छुल गई। हाय! यह प्यारा स्वप्न भी हाथ से गया। जागकर देखा, पनग खाली पडा है और यह धरती में मरे पलंग के नीचे झोंपे मुह पड़े हैं। मुझमें उठने की ताव न थी। मैंने झुककर उन्हें छुमा सचमुच वह जाग रहे थे। उठ बठे मेरा हाथ पकडा चूमा और भासुओं से तर किया। भगवान् ही जानता है वह बय से रो रहे थे। मैंने उनका हाथ उठाकर छाती पर रखा। बहुत कुछ कहना चाहती थी पर न कह सकी गला भर आया। अंत में मैंने कह ही दिया

‘स्वामी मुझ क्षमा करना मैं जाती हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उस क्षम में फिर तुम्हारी शरण-सेवा मिले। मेरा जीवन खूब सुख से बीता। तुमने इतना सुख दिया अब दुःख के लिए किसे उलाहना दूँ? दुःख यही है कि तुम्हारी कौन मुष लेगा? कौन यत्न करेगा? हाय! मैं ही तुम्हें इस दुःख में डाल रही हूँ। मैं जानती हूँ स्वामी लाल का ध्यान रखना।

वह मुनकर कुद्व न बोने। घुपघाप रोने रहे। मामूम होना था अनुताप से उनका बलेजा फटा पडता है। उनकी भाखें लग्जा से भवनत और शोक से परिपूण थीं। भाह! हम लोग बेचना के मार्ग पर कितनी दूर निकल गए। क्या अब भी सौटना समभव है? इस जर्जर गरीर में प्राण सौट आएंगे? स्वास्थ्य हरा हो जाएगा? जीवन सुश्री होगा? बसे ही हमेंगे? उसी भांति किलोल करेंगे? वह हमारी मुटी हुई सोने की गृहस्त्री फिर हम मिल सकेगी?

हाय! कैंसी सुंदर मुनहरी धूप है कसा प्यारा नीरा भाकाय है कसा प्यारा दिन है कसा सुभावना मधुर यह जगत् है? मह सब यही रहा। मैं जसो इस सबको छोड़कर ताल का भी छाडकर और प्राणों से प्यारे पति को छोड़कर भी। इच्छा नहीं होनी पर जगत् में किस प्राणी की इच्छा पूर्ण हुई है। हे ईश्वर, उन्हें सुखी रखना।

घटी बसो। मैं साहस करके फोन पर गया। तन्गीर ठोड़ी और भागा

हुमा पढ़ा घर में कुहराम मचा था। जईक बाप की हात देखी सिर के बाल नाथ डाने थे। पागल की तरह बच रहे थे। देखेवालों का नसेजा मुह की मा रहा था। या तो बुनिया मरता है पर नीजवान बटी की मौत क्यामत है। सब सिर पीट रहे थे। मेरे हाथ-पाव धरने लग। वृद्ध गृहपति ने मुझे देखत ही कहा—डाक्टर साहब बचाए। मेरी बेटी को बचाए, मेरी इच्छत-भावक को बचाए। अभी दम है शायद बच जाए। पर्दा फिजूल है। जाइए, भीतर जाइए।—मैं सपना हुमा भीतर गया। बुढ़ी मा सिर पीट-पीटकर रो रही थी—हाथ। मेरी शरतगर कमसमुन बेटी दिल पर जो गुजरी वह नित ही म रखा कुछ बयान न किया। हाथ! तुझे किसकी नजर ला गई? जईकी म मा का दिल तोड़ दिया। घर आज मेरा घर बखिराग हुमा जाता है। लोगो! कोई जतन करो अभी तो उसमें सास है। घरे मेरी बेटी सब भरमान छाती म साथ लिए जा रही है उस रोको। मरी मेरी दुसारी होने मा से भी तो कुछ सिद्धमत नहीं ती।

मेरी हात सराब थी पर सडसडा रह थे। धब गिरा धब गिरा यह हाल था। जिर के टुकड़ ही रह थे। भीड़ को हटाकर नन्ड देखी नित की घबन देखी भासों की पुतलियां दसों नाखून धीर दात देखे। दिल में हिम्मत हुई। सपना हुमा फोन पर गया। कप्टन उठ को दो नसों धीर बहरी सामान सहित बुलाया। बाहर धाकर वृद्ध से कहा—बबराइए नही अभी उम्मीद है, जरा मरी मदद कीजिए।

दौड़ पूर होने लगी। कप्टन उठ न आते ही मशविरा दिया धीर मुई लगाई। उपचार होन लगा। नस में धीर कप्टन जी जान स लग रहे। धीरे धीरे नित थदा धीर बीता रात भाई धीर गम्भीर होने लगी। कप्टन ने कहा—डाक्टर मरीज न मरता है न पीता है धबव भमेला है! मरने का बसत ता गुडर गया।—मैं कहा—साहब धब मरने का नाम न लें। मरीज धच्छा हो रहा है।—रात डलने लगी। रोगी ने सासों सों धासों खोलीं धीर धारों सरफ देखा। मरे बेहरे पर उसकी धासों धाकर टहर गई। उसमें से धासुधों की धार बहने लगी। कुछ देर में वह बहोच हो गई। मरी हात सराब हो रही थी मैं होच में न था। कप्टन उठ न मेरा हाथ हिलाकर कहा—डाक्टर, देखो वह सो रही है। नन्ड धीर दिल की हात ठीक है। धब कोई खतर

और जो बचेगा उठाकर ले जाएंगी आप भाजी मारने वाली कौन ?

मेरे ब्राह्मू निकम प्राण । मन में साधा यह भी एक सम्बन्ध है पर पवि
और वासनारहित । यह आत्मा का है शरीर का नहीं । अहा ! इसमें कितना
आनन्द है ! मैंने कहा—अम्मी हमशीरा ठीक हो कहती हैं गरीब भाई प
उनकी इतनी इनायत है ! उन्हें आप झट-झपट न बीजिए ।

बुढ़िया हस दी । बोली—तो और मुनो, सब एक ही पैली के बट्टे-ज
हैं । अच्छा भई भव हम न बोलेंगे ।

दिलभर वे लोग रहे खूब खाना-पीना रहा । पत्नी ने मन से छातिर की
उनके जाने पर देखा कोईदो दजन धास सजे रहे ये । किसीमें बडाऊ खेवर
किसीमें मेवा किसीमें रेणमी कीमती कपड़े, ये सब भात के लिए ये ।

पत्थर में अकुर

पत्थर में भी अकुर गता है। इसका अर्थ यहाँ है कि छोटी और दुर्गम व्यक्ति भी कुसुम सम कोमल-वस्त्र वास्त्रिणा के सम्मुख अपनी मयकरता को त्यागने पर विवरा हो सक्ता है। यह कहानी आचार्य-श्री की कृत्रिम कहानियों में से है।

एक दस वर्ष की बालिका पर्वत की उपत्यका में बसे हुए छोटे से गाँव से हटकर एक भोपड़ के बाहर खड़ी भयाकुल ननों से टरे तिरछे पहाड़ी रास्ते पर दूर तक देख रही थी। संध्या हो गई थी नयानक घटाए छा रही थी बानस गरज रहे थे और बिजली चमक रही थी। मीपण वर्षा के सब आमार निस्तार्ड पड़त थे।

तबनी विलुल धनेली था। भोपड़ी के आसपास गहन जगन था। गाव बाफा फामले पर था। कम से कम इतना तो अवश्य था कि यदि घटनावश सबरी विल्लाए या उसे किसी दुपटना का सामना करना पड़े तो गाव से सहा दता मिलना समवे न था।

बालिका बहुत ही सुन्दर थी—बहुत ही सुन्दर। उसके बाल सुनहरे थे और वे उसके कंधों पर सहारा रहे थे। शरीर पर साधारण पुराना वस्त्र था पर स्वच्छ था। बेग भूषण पर मानूम होता है बालिका का भुछ ध्यान न था। इस समय वह बहुत ध्याकुल भयभीत और श्वसत हो रही थी। सामने मीलों तक छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ थी। उनमें दवेत रेखा की भाँति पहाड़ी भाग चमक रहा था। उनपर दूर तक बालिका चारों ओर देख रही थी। वह विवत भाव से कमी-कमी भोपड़ी के पीछे के भाग में आकर उधर भी देर तक और दूर तक देख लेती थी।

उसका पिता राज को न जाने कहां चुपचाप उठकर चला गया था। ऐसा वह बहुधा करता था पर इस बार राज लौटने में बहुत देर लगी थी। वह प्रायः निमि उगते गत था जाना था। आज निमि बीन चुका था पर उसका पता न था। निमि बहुत सराब था। बालिका प्रातःकाल ही से पिता के लिए भोजन बनाए प्रतीक्षा कर रही थी। बड़ी देर तक उसने भोजन को गम बनाए रखा। वह

घौर जो बचेगा उठाकर ले जाएगी आप भांजी मारने वाली कौन ?

मेरे पास निकल जाए। मन में सोचा यह भी एक सम्बन्ध है पर पवित्र और वासनारहित। यह आत्मा का है शरीर का नहीं। अहा ! इसमें कितना आनन्द है ! मैंने कहा—अम्मो हमशीरा ठीक ही कहती हैं गरीब भाई पर उनकी इतनी इनायत है ! उन्हें आप डांट-धपट न कीजिए।

बुढ़िया हस दी। बोली—ओ घौर सुनो, सब एक ही घंसी के चट्टे-चट्टे हैं। अच्छा भई अब हम न बोलेगे।

दिनभर वे सोग रहे खूब खाना-पीना रहा। पत्नी ने मन से आठिरे की। उनका जाने पर देखा कोई-दो दर्जन घाल सजे रहे ये। किसीमें जटाऊ खबर, किसीमें मेवा किसीमें रेसमी कीमती कपड़े ये सब साम के लिए थे।

पत्थर में अकुर

पत्थर में भी अकुर गता है। इनका धम यह है कि कठोर और दुर्लभ व्यक्ति भी कुमुद सम कोमल-पवित्र बालिका व सम्पुष्ट भवनी मधुकरना को त्यागने पर विव्वा हो सक्ता है। यह कहानी आजाप-भी की बहुचर्चित कहानियों में से है।

एक दस वर्ष की बालिका पर्वत की उपत्यका में बस हुए छोटे से गांव से हटकर एक भोपड़ व बाहर लड़ी भयाकुल नर्तों से टेरे तिरछे पहाड़ी रास्ते पर दूर तक देख रही थी। मध्या हो गई थी मयानक घटाए छा रही थी आत्मन गरज रहे व और बिजली चमक रही था। भोपण वर्षा के सब आमार निश्चार्ई पटते व।

लडकी बिल्कुल अकेली थी। भोपणी के घासपास यहन जगन था। गाव थाफा पानसे पर था। कम से कम इतना तो अवय था कि यदि घटनावच मडरी चित्नाए या उसे किसी दुपटना का सामना करना पडे तो गाव से सहा पठा मिलना सम्भव न था।

बालिका बहुत ही सुन्दर थी—बहुत ही सदर। उसके बास मुनहरे व और वे उसके कर्णों पर सहस रह थे। शरीर पर साधारण पुराना वस्त्र था पर स्वच्छ था। वेग भूषा पर मासूम होता है बालिका का बुद्धिप्यान न था। इस समय वह बहुत ध्याकुल भयभीत और चपल हो रही थी। सामने भीलों गरु छोटी-बड़ी पहाडियां थीं। उनमें स्वेत रेखाकी भाति पहाड़ी माग चमक रहा था। उनपर दूर तक बालिका चारों ओर देख रही थी। वह विचल भाव से कभी-कभी भोपणी के पीछे के भाग म जाकर उपर भी देर तक और दूर तक देख लेती थी।

उमका पिता राज को न जाने कर्ण भुगचाप उठकर पता गया था। एसा यह बहुषा करता था पर इस बार वन लीटन में बहुत देर लगी थी। वह प्राय-ग्नि उग्र-उगने घा जागा था। भावग्नि बीत चुका था पर उमका पता न था। ग्नि बहुत सराब था। बालिका प्रातःकाल ही से पिता के लिए भोजन बनाए प्रतीक्षा कर रही थी। बड़ी देर तक उचने भोजन को गम बनाए रखा। वह

बिया धीरे पिता के गल में लिपट गई। उसने खुरे स्वर से कहा—जा, जरा थोड़े को छप्पर में बांध दे। उसे थोड़ी घास डाल घा।

बालिका जरा भिभनी। उसने बनसिया से पिता की ओर देखा वह खाने में लग गया था। वह चुपचाप झोपड़ी से बाहर भाई। थोड़े को घांघा घास डाली। वह सरणी धीरे मय से बांध रही थी। अब भी बूढ़ें गिर रही थीं।

इसके बाद उमने भीतर आकर देखा उमने जेब से घोटल निकाली है, और उसे मुह से सगा गटागट पी रहा है। बालिका धीस्वार करने दोड़ी धीरे उसने कहा—पिता पिता तुमने उस दिन कहा था यह नहीं इसे न पिघो पिता को पिता।

बालिका रोती हुई पिता पर भपटी। उमने बोतल छीनने की चप्टा की पर उसने बड़बड़कर कहा—ट जा री लडकी!—धीरे बसकर एक सात मारी। बालिका सात खाकर दूर जा गिरी। वह दिनभर की भूखी-प्यासी नन्ही-सी बालिका धरती पर पड़ी-पड़ी देर तक पगु पिता की ओर देखती रही। जिसके लिए वह इतनी ध्याकुल इतनी मधोर इतनी उत्सुक थी और इतना प्यार करती थी उसने इतनी देर बाद आकर एक शब्द भी उसे प्यार का न कहा भूख-प्यास की भीन भूखी। वह बालिका को सात मारकर बिना उसकी ओर देने शराब पीता और बड़बड़ाता रहा। बालिका यह देखकर रो दी। बातल खाती करके उसने एक तरफ फेंक दी और तब वह उठा मारी लबादा मोडा बदूक उठाई और बाहर चल दिया। दरवाजा बन्द करती बार उसने ऊंची धीरे बबब धायाज म कहा—सड़की डरना नहीं तेरा भगवान् तेरे पास है।—इसके बाद उसकी जोर से हसने की धावाज भाई। बालिका द्वार तक दोड़ी पर वही रह गई उस भयानक रात में भकेली।

मुन्दर प्रभात था। गुलाबी सूर्यो थी। धूप चमक रही थी। बालिका घुटनों के बल बठी धीरे-धीरे उस भयानक पिता के पुरों के तलुए सहजा रही थी, और पिता धीरे निद्रा में सरंटे भर रहा था।

बहुत देर बाद वह तनिक हिंसा। बालिका को भाषा हुई कि वह अब जगगा। उसने मंद मुस्वान में कहा—पिता दसो कसा मुन्दर दिन है तनिक भासो तो घासो।

उसने धाँस खोला । ठीक सप के समान धाँस थी । उसने मूकुटी में बल डालकर कहा—घरी प्रमागिनी उरा सोने भी न देगी ? दूर हो कसी नाद था रही थी ।—इसके बाद वह फिर कबल भोड़कर सो रहा । बालिका को फिर साहस न हुआ । वह वहाँ से उठकर भाग के पास जा बठी और एक-एक सक्ठी भाग म डालन लगा । वह न जाने क्या सोच रही थी । सोचते-सोचते उसकी धाँसा से एक बूद धामू टपक गया । धीरे-धीरे वह सिसकिया सेन लगी ।

उसने उठकर घाड़ाई लेते हुए ककग स्वर म पुकारा—सड़की क्या पानी गरम किया है ?

किया तो है । बालिका ने धीमे स्वर म कहा और वही बठी रही । धव भी उसे रोना था रहा था । वह धीरे धीरे उसके पास आया और बठ गया । वह खूब ध्यान से उसके मुख को देख रहा था । उस इस भाँति देखत देख बालिका डर गई । वह कुछ डरकर सिकुड़ गई । उसने धीरे धीरे बड़बड़ाना शुरू किया । फिर कुछ मृदु स्वर म कहा—सड़की इतना बरती क्यों है ?—इसके बाद वह कुछ मुस्करा लिया । बालिका भी मुस्करा दी । उसने साहस करके कहा—पिता आज गाँव में मत्ता है तुमने उस दिन कहा था । क्या आज मुझ से चलोगे ? मैं बहुत-सी चीजें खरीदूंगी ।

उसने ययासमय मृदु स्वर म कहा—प्रच्छा प्रच्छा चली चलना और ओ जी चाहे खरीद लेना । मे ठेरे लिए इतने रुपये हैं ।—यह कहकर उसने जेब से एक छोटी-सी पसी निकालकर बालिका की गोँ में फेंक दी ।

पँसी में कितनी रकम थी यह बालिका ने नहीं समझा । पर आज पिता की प्रसाधारण कृपा एक प्रसन्नता है यह देखकर वह हर्षातिरक से उछलकर पिता के गले से लिपट गई । उस समय वह भड़िया पुरुष बहुत दिन पूष की एक बात सोचकर धाप्यायित हो रहा था । उसकी नीरस धाँसों में धामू धाँसे धाँसे रह गए थे । वह सोच रहा था बीस वष पूर्व एक ऐसी ही मुन्दा, बरल प्रगतिवा इसी भाँति उसकी कठ-मात्ता बनती थी और उसकी माता ? माह ! उसके धामू निकल ही पडे ।

पर क्षण ही भर म वह वसा ही कठोर बन गया । उसने बालिका को परे ठेलकर कहा—हट-हट जा कुछ पाने-पीने का बंदोबस्त कर ले ।

ऐसा साथी पाकर बालिका ध्यानन्द विभोर हो गई। उसने भोपड़े में पहुँचकर युवक को अपने सब चीजें दिखाईं। अपने हाथ से लगाए पीछा के इतिहास सुनाए। अपने जीवन के धरुन दिनचर्या की बातें सुनाईं। सिर्फ एक बात उसने छिपा ली पिता का भोपण स्वभाव भोपण व्यवहार और प्रत्याचार। असल में वह पिता की निन्दा नहीं कर सकती थी।

युवक की धायु उन्नीस-बीस वर्ष के लगभग होगी। वह बालिका को ठीक-ठीक समझ गया था और प्रथम जो दुष्टता उसके मन में थी उसपर उसे धीरे धीरे मनस्ताप हो रहा था। बालिका की सरलता सुन्दरता और भोलेपन पर वह मोहित हो गया था। उसके लिए उस बन्धा को ठगना समझ न था इसलिए वह ज्या-ज्यो उससे प्रेम करता जाता था त्यो-त्यो उसकी उत्कुन्तता नष्ट होती जाती थी और वह धन्यमनस्क सा होता जाता था। अन्त में वह स्वयं ही उम पवित्र मूर्ति बालिका के सम्मुख अपने को पतित और नाब अनुभव करने लगा। वह एक पेड़ की छाह में बैठकर अपने को धिक्कारने लगा। उसकी इच्छा हुई क्या किसी भाति भी इस सुन्दर बालिका के समान पवित्र बन सकना हूँ ? जिस कोई मय नहीं कोई चिन्ता नहीं जिसका छोटा-सा ससार है छोटी सी जिसकी आत्मा है पर कितनी मधुर और कितनी आवश्यक।

बालिका वहाँ न थी। वह भीतर जाकर उसके लिए कुछ खाना तयार करने में जुटी थी। इसी उद्यम में आवश्यकता ने उस गहिरी की भाति कतव्य-भरा यण बना दिया था। सब कुछ ठीक-ठाक करके वह तिनसी की भाति उछलती हुई युवक के पास आई। वह उम समय भी दोनो हाथों में मुह छिपाए बैठा था। बालिका ने एकदम उसके पीछे पहुँचकर कहा

अच्छा बताओ मैं तुम्हें सब क्या-क्या लिखाऊँगी ?

युवक का हसना पडा। उसने कहा—तो कैसे बता सकता हूँ बिना देखे जाए।

वाह सोचकर बताओ।

मुझे हुए धाखू तो खाने ही पढ़ेंगे।

हा ठीक धीरे ?

मवाई के उबले हुए भुट्टे।

‘वाह जो जो मैंने रास्त में बताया था वही यह बता रहे हो।’

'तब नई चाँद क्या बताऊ ?

बताओ बनानी पड़ेगा ।

न भई नहा बता सगता ।

'बताओ बताओ ।

अच्छा मुनो मिठाइ ।

नही भूल गए ।

'तब अब तुम बताओ ।

हार गए ?

'हार गया ।

'तब खसो ।

दोनों गए । दो चार चीजें था । पर जिसका बालिका को गव था वह मीठे

पूटे थे जिस उसकी मा न बडे चाख स बनाना बताया था ।

दोनों खाने बठ । युवक न कहा

'तुम्हारा यहा जी सगता है ?

बालिका हतप्रभ हो गई । उमन कहा—सगता नही तो क्या ?

बल्लू तुम्हें दुस लो नहा दता ?

'दुस क्यों भेडे ? बालिका इस बार युवक को नहा देख सकी ।

पर वह बडा दुष्ट है ।

'दुः, ऐसा न कहो । मर पिता मुझ बहुत प्यार करत हैं । आज ही इनने

खपये लिए, देखो । यह वह वह जब के खपये खनखनाने लगी । पर युवक न

यह देखा नही । वह खूब खोरस हसपडा । बालिका ने विस्मित होकर कहा

'हस क्यों ? पिता क्या पिता बल्लू ? वाह ! वह फिर हसने लगा ।

इतना हसते क्या हो ? पिता की तुम हसी क्यों उभाते हा ?

'तुम कुछ बेवकूफ हो ?

'कसे ?

'अच्छा कहो तुम्हारी माता कहां है ?

देग म है । अब हम घर जातवात हैं । पिता कहत था ।

क्या बल्लू ने तुम्हें यह कहा था ?

भीर नहा लो क्या ?

युवक ने मुख पर कई भाव घाए घौर गए । पर उसने तब बल्लनकर कहा
तब तुम चली जाओगी मुझ छोड़कर ?

तुम भी चलना । मां तुम्हें बहुत प्यार करेगी । मेरा एक भाई है तुम्हारे ।
ही जसा तुम्हारे ही बराबर । वह तुम्हें बहुत मानेगा ।

युवक विचलित हुआ । उसने बात बदलकर कहा
अच्छा तुमको इतना अच्छा खाना बनाना किसने सिखाया ?

बातिका खिल गई । उसने कहा—क्या तुम्हें पसन्द आया ?

‘अब मैं रोऊ एन बार आकर खाऊंगा ।

तुम यही क्या नहीं रहते मैं पिता से वह दूगी । यहीं रहो । युवक एन
टक बातिका को देखता रहा । खाना खतम हो चला था । वह उठने लगा ।
सड़की ने कहा—कहो रहोगे ?

रहूंगा । युवक उठकर बाहर चला गया । बातिका कुछ काम में लग
गई । जब वह बाहर गई सब युवक बेचनी से टहल रहा था । उसे देखते ही
उसने कहा—अब मैं चला बल्लू घाम तक शायद आ जाएगा ।

नहीं उनके जाने तक तुम यहीं रहो ।

‘नहीं नहीं मैं अभी यहाँ नहीं टहर सकता ।

मैं नहीं जाने दूंगी ।

मटकी हठ न कर ।

युवक की हृष्टि में तीव्रता और स्वर में तीव्रतापन था । बातिका देखती रह
गई । युवक चल दिया । बातिका ने परसा पसकर पथर लिया और रुठ गई ।
युवक ने कहा

जाने दो मैं फिर आऊंगा ।

तुम रुठ किस बात पर गए ?

रुठा नहीं ।

रुठे तो हो ।

‘नहीं ।

हां ।

मैं जल्द आऊंगा ।

मैं जान नहीं दूगी । बातिका की भोली म घामू आ गए । युवक बठ

गया । बालिका भी बठ गई । उसने देखा युवक रो रहा है ।

‘धरे रोने क्यों हो ? बालिका ने अपने हाथ से उसके घातू पोंछे । युवक बोला नहीं । बालिका ने धीरे पास खिसककर उसके गले में हाथ डाल दिया ।

युवक ने भर्राए गले से कहा—तड़की मुझसे इतना प्यार न कर ।

वरुगी ।

न ऐसा नहीं ।

‘वरुगी फरुगी ।

तू मुझ जानती नहीं ।

तुम बहुत भच्छ हो ।

मैं भच्छा नहा हू ।

‘तुम बड़ प्यारे लगन हो ।

क्या तू मुझ प्यार करती है ?

करती हूँ । बालिका को घातूँ से टप में घातू टपक पड़

युवक ने कहा—एक घातू कह ?

‘नहीं ।

मैं पार हू ।

‘दुर ।

‘सच ।

‘धीरे क्या ?

धीरे नहीं समझतीं रातने जमते मुसाफिरों के मान को घुरा मनवाला ।

तुम ऐसा काम करते हो ?

‘हा ।

‘नूँ तुम ऐसा नहीं कर सनत ।

‘मरा मही धषा है ।

‘नहीं ।

‘रुँवर जानता है सच कहता हू ।

बालिका धवाक होकर देखन लगी । युवक ने कहा—धीरे नृनी बल्सू तुम्हारा पिता नहीं है ।

पिता नहा है ?

हां।

तब कौन है ?

बाबू।

भरे। बालिका की भास भय से फल गई। उसका शरीर कांपन लगा। वह युवक से सटकर बठ गई। उसने कहा

बाबू ?

'हां वह नित्य आपके हासता है। हम लोग साथ रहते हैं। वह सबका सरदार है। उसका सूट का माल देखोगी ?

देखूगी।

युवक उठा बालिका भी पीछे-पीछे उठी। गुप्त गृह में जाकर युवक ने बल्सू का सारा खजाना दिखा दिया। उसे देखकर उसने कहा

इतने रुपयों को वह लाए कहा से ?

रास्ते चलते मुसाफिरों को मारकर। क्या तुम्हें एक बात याद है ?

बालिका के होठ सफ़द हो रहे थे। भय से वह झपमरी हो रही थी। उसने पू—कौन बात ?

'एक रात की बात। तब तुम पांच छ साल की थी। धपन बच्चा और ई के साथ माता को लेकर भा रही थी पिता के पास।

हां कुछ कुछ याद है। तब रात बड़ी धपेरी थी। खोर का बादल गरज पा। माता बिस्ला रहा थी भाई ने कहा था—खोर ! खोर !!

हां वे खोर हपी थे।

'तुम ?

'हां मैं और बल्सू पाच-सात और।

मेरे पिता।

'वह तुम्हारा पिता नहीं बाबू है।

और पिता ?

'उन्हें बल्सू न मार डाला था। वह तुम लोगों को लेने धकले घा रहे थे।

बालिका मानो मूर्छित होन लगी। उसने धबदब कठ से कहा

'नहीं ऐसा नहीं हो सकता। युवक कहता गया—हम लोगों ने तुम्हें घेर पा। खचः और भाई मारे गए। तुम्हारी माता भी मारी गई। तुम बच रही

थी। तुम्हें बल्लू उठा लाया और पासा।

बातिका पस की माति कांप रही थी। उसे चिरस्मृति का उन्मत्त हो रहा था। अब वह बहुत कुछ समझदार थी। उसने कहा

मेरे भाई और मां गए ?

उन्हें बल्लू ने मार डाला।

'वह कहते हैं वे घर लौट गए।

मूढ़ है।

बातिका रान लगा। युवक चुप बठा रहा।

ज्या ही बातिका को यह पता लगा कि बल्लू अभी एक ऐसा हा मुहिम पर गया है उसमें एक प्रदुल्ल तेज और माहस का उन्मत्त हो गया। उसने कहा— अभी पसो में उह रोखूगी। तुम टहरो में अभी घाती हू।—यह कहकर बातिका भोपड़ी में घुस गई। कुछ क्षण बाद ही युवक हांपडा हुआ भीतर आया। उसने कहा—रानी गजब हो गया। बहुत-से पुनिस के सिपाही इधर ही को घा रहे हैं उन्होंने बल्लू को पकड़ लिया है वे मुझे भी पकड़ लेंगे। अब मैं क्या करू ?

क्षणभर बातिका स्तब्ध रही। फिर उसने उसे रमोई के पीछेवाली कोठरी में धमते हुए कहा—यही बैठ रही मैं मोका पाकर तुम्हें निवान दूगी।

पुनिस के साथ दल-बलतहित बल्लू हांशिर था। बातिका को देखकर वह प्रप्रतिभ हुआ। कुछ देर बातिका ने भी उसकी आर देखा। फिर वह दौडकर उसकी आर झपटी उसकी गदन से लिपट गई। उसने रोते रोते कहा— मुझे सब बातें मालूम हो गई हैं। तुमने मेरे पिता माना और भाई का मार डाला है। तुम मेरे पिता नहीं डाकू हो। तुम ऐसा काम क्या करते हो ? हाय पिता !—धम्पासका उसके मुह से पिता धम्प निकल गया।

पुनिस ने कहा का बयान कतमबद किया। बातिका सब कुछ कह सुनरी। उसने युवक को भी बतला दिया। युवक सब मरदा फोडकर मरफारी गवाह बन गया। मुकद्दमा पसा और बल्लू तथा उसका साधिया को फांसी की सजा हुई। युवक छुट गया।

फांसी पाने के एक दिन प्रथम वह बल्लू के पास मिलन गई। जेतसाने को

यूरोपीय पोगाक पहले विलायत की डाक-सत्परता से देख रही थी। वह जल्दी जल्दी दानियाँ पत्रों को उलट रही थी। उसके नेत्र विचित्र थे और वह घबरा रही थी। हठात् एक स्थान पर उसने नद्व देखा। उसकी दृष्टि कागज़ पर चिपक गई। फ्रांसों में घबेरा छा गया। उसने कई बार उन पत्रियों को पढ़ा। वह मयटवी हुई उठी और दूसरे कमरे में बठ मेरठ-दिवीजन के प्रसिस्टेंट कमिन्तर मि० बलाक के कमरे में घुम गई। उसने मर्राई घावाज में कुछ भग रशी में कहा

पापा सपिटनेट बलबतसिह सस्त घायत हुए हैं। यह देखो पापा उनकी टांग काटनी पड़गी।

कमिन्तर को तार मिल चुका था। उन्होंने प्यार में युवती का पास की कुर्मी पर बटाते हुए कहा—पर भागा है वह प्रच्छा हो जाएगा। मैंने बस ही तार द्वारा उसकी खास बिक्रिता की हिदायत कर दी है।

पापा मैं जाऊगी बर्रर जाऊगी।

नहीं बेटी यह भ्रमभव है।

नहीं बिल्कुल सभव है।

‘रास्ता खतरनाक है। दुश्मनों ने सयत्र टारपीडो भिछाए हैं।

मैं जाऊगी पापा अभी जाऊगी।

युवती का हठ देख प्रगरेज अधिकारी की वृद्ध न बली। उसी सप्ताह में दोनों बंधई की प्रस्थान कर रहे थे

वह फ्रांस के एक प्रस्पताल में पड़ा था। उसकी टांग काट डाली गई थी। अर्कों के भी बचने की कम उम्मीद थी। पट्टा बंधी थी। वही युवती नर्स का उधारण कर उसकी सेवा में तत्परता से हाज़िर थी। रोगी ने क्षीण स्वर में नारा

नम जरा महारा देकर ऊपर तो उठाओ। मैं ताजी हवा में सांस लिया जाता हूँ।

नर्स ने बुपके से ऊपर उठाया। तबिए का सहारा लिया और बटा दिया। मरु बाद वह उसकी कर्मी को खींचकर बाग में ले आई।

नम तुम बितनी प्रच्छी हो! तुम बितनी सदा करती हो तुम्हें धन्यवाद।

नम छुप रही । वह बात न सकी । उसन फिर कहा

'नम तुम्हें साख-नाख धन्यबा' ।

नर्स ने मृदु-मधुर स्वर स कहा—सेप्टिनेट बनवत में केवत कतम्ब पालन कर रही हू । आपकी कुछ चाहिए ?

'नहीं जरा घपना हाय दा हाय ।

नम ने किम्बकत हुए घपना हाय उनके हाय म िया । उनन उस दोना हायों में घामबर कहा—नम तुम्हारा हाय भी तुम्हारे हृम्य की भाति ही कामल घोर मुन्दर है । सम्भवतः तुम्हारा मुल भी एसा ही हागा । पर कसा दुर्भाग्य है मैं लगदा घोर घषा विसा भी स्त्री के प्रम का अधिकारी होन योग्य नहीं रह गया ।

नम ने कहा—यदि कोई स्त्री तुमसे प्रम करे तो क्या तुम उस स्वीकार करोगे ?

'नहीं नम ऐसा मज सोचना । मैं किसी भी स्त्री को प्यार नहीं कर सकता ।

क्यों ? क्या घघे घोर लगदे होने के कारण ?

'नहीं-नहीं नम नाराज न हाना मैं एक बातिका का प्यार करता हू । वह महा स बहुत दूर मेरे देस में है ।

'गायद वह बहुत सुदर है । मस बापते स्वर में बाल रही थी ।

'माह ! वह देवी है देवी । ईंवर उक्तकी रसा करे । पर घव उसे देखना नसीब न होगा ।

मुबन का कठ भर भाय ॥ मुबती न भा घासों पोंछा । उनन कहा—कुछ माऊ क्या ?

'नहीं धन्यबा' । हां घपना हाय वह कीमती हाय । नम मैं तुम्हारा घाजन्य ऋणी रहूंगा ।

'धन्यबा' सेप्टिनेट पर मैं तुमपर कौड़ी भी ऋण बाची न छोडूंगी । खर तुम घपनो उस बातिका की बाल कहा ।

'माह ! नम उरुपर माह न करना ।

'माह तो करूंगी ही पर क्या उक्तने तुम्हारी एसी मवा कना की थी ?

'कभी एसा भवसर ही न घाया । वह मेवा की मूर्ति है ।

'दसकी तुम्हें कीन-कीन बाउं पसद हैं कही ली ।

जाए ? क्या सोहा और सोना की उपमा दी जाए या रात्रि और दिन की ? अथवा राहु द्वारा चन्द्रग्रहण की ? मेरी समझ में किसीकी नहीं । सभी में एक न एक सौन्दर्य था नहीं था इस जोड़े के सम्मिलन में ।

यह नर-पशु और वह स्वर्ण-मुन्दरी थी । वस यही तक बात न थी वह ऐसी पतिव्रता और पति-सेवा की पुखली थी कि इन दो गुणों ही के लिए नारी जाति में उसकी उपमा दी जा सकती है । और यह बात भासपास प्रसिद्ध भी थी ।

यह अद्भुत दम्पति जगत् से दूर भ्रमण करते थे किन्तु जगत् की दृष्टि से बचे न थे । पुलिस और सरकारी अधिकारियों से लेकर साधारण नागरिक तक उस बदमाश को उसके कानून के विरुद्ध कार्यों से तथा उसके द्वारा निरय्य होते हुए अपराधों के द्वारा जानते थे । उसी प्रकार भासपास सबत्र ही यह बात भी प्रसिद्ध थी कि जगत् का कोई भी प्रलोभन उसकी स्त्री को उसके प्रति बिगोही एवं विचलित नहीं कर सकता था । यह बात भी प्रसिद्ध थी कि अनेक उच्च पदस्थ राज-कर्मचारी उसे भ्रष्ट करने और उसके द्वारा उसके पति के रहस्य भद करने की चेष्टा में हर तरह विफल हुए ।

वास्तव में चोरी डकैती अपीम बेचना जाली खपा बनाना आदि कुकर्म ही उस अथम पति का व्यवसाय था । व्यवसाय यही तब रहता तो भी उसमें एक मर्दानगी थी । परन्तु वह नर-पशु अपने व्यवसाय की सहायता में चाहे जब निस्संकोच भाव से अपनी पत्नी के सौन्दर्य का उपयोग कर लेता था ।

किसी भी सुलझणा पतिव्रता के लिए यह कितना कठिन है इस बात पर विचार करना चाहिए । उठती हुई उम्र की युवती परम सुन्दरी जीवन की स्वाभाविक लासलापों और अभिलाषाओं के स्थान पर, जो हृदय की प्रत्येक तरंग के साथ उठती हों उसे अपने पवित्र विश्वास अम्यास और धर्म के विपरीत पति ही की आज्ञा से वह अभिनय भी करना पड़ता था । इसके सिवा वह प्रायः दिन भर और रात तक और बहुधा तीन-तीन, चार-चार दिन तक धकेली बिना किसी पशु-पक्षी के सहयोग के उस एकान्त जगत् में घूम और सुन्नाटे से भरा दिन और अथवार तथा भय से परिपूर्ण रात्रि व्यतीत करती थी । यही कारण था कि हास्य की रेखा अभी उसके सुन्दर रूपों पर नहीं देखी गई । और धीरे धीरे उसके गालों की मुर्छी और भंगों की जुनाई नष्ट होकर

उसपर स्याहा घोर पोसापन फल रहा था।

रामसिंह को बीसवा बप बीत रहा था पर अभी उसकी रेखें नहीं भीगी थी। उसका रंग तपाए कुन्दन-सा और बदन इस्पात का बना था। चौड़ी छाती सम्बी मुजा उठी हुई गर्दन प्रफुल्ल और उमरे हुए नत्र और घोछा से उसके हृत्प की पवित्रता प्रकट होती थी।

यह अपनी बडा घोर दरिद्र विधवा माता का एकमात्र पुत्र था। वह गत वर्ष ही सिपाहिया में भर्ती हुआ था। उस दिन प्रमात के समय जब उसकी माता ने उसकी बिदाई की पूरी तयारी कर दी तब सिर पर पगडी बाधते-बाधते उसने कहा—मा ! इस मुहिम में यदि मुझ विजय प्राप्त हुई तो भगते बप मैं इस पगडी पर सुनहरा म्म्बा सगाऊगा और मैं नायब तो बन ही जाऊगा।

बडा ने मुस की सांस ली उसके होठों पर हास्य भाषों में भासा और घामू एव शरीर म रोमाच का उदय हुआ। वह बोल ही न सकी और चुपचाप बेटे के शरीर पर हाप करने लगी। कुछ ही राण बाद माता और पुत्र दोनों पागबद्ध हो गए।

बडा ने घामू पोछते हुए कहा—रामू ! बेटे ! बाकुभों से तू कस सडेगा ? तू धरेना कभी घर से बाहर नहीं गया था मात्र मुझ भेजते मेरी छाती फटती है। मेरे मात उसे पीठ दिखाता है बस मुस दिसाइयो। दुस्तिपारी महतारी को मुस न जाना।

रामसिंह ने उज्ज्वल नेत्रों की माता के मुस पर गाड़ लिया। वह हसा। उसने कहा—मा ! मैं नीकरी बजाकर शीघ्र भाऊगा डर किस बात का है।

माता को कहते योग्य बात न थी। यह चुपचाप घामू पोछती जाती थी—तयारी कर रही थी। कुछ ही राण बाद रामसिंह मां की घांसों से घोम्न हो गया।

यह पटनासस समय की है जब भारतवष में बीसवीं शताब्दी की सम्यता और भगरेवों के साम्राज्य का विस्तार नहीं हुआ था। नागरिकता और भ्यापार के यतमान सापन देश में न थे। यह उन शिनों की बात है जब बसम ने तल बार पर विजय प्राप्त नहीं की थी और भूधे-नये देहाती भी फे चिपड़ों में शरीर

बहा—तुम आप ही इस मकान की स्वामिनी हैं ? मना न जवाब दिया—
हा नहीं मेर स्वामी बाहर गए हैं ।

‘हृषा कर क्या आप मुझ क्षणभर महा विधाम करने देंगी ? कैसे भाग
बरस रही है ! सरकारी काम से निकलना पडा पर यदि विधाम न मिला तो
मैं और घोडा दोनों ही मर जाएंगे । क्या आप दया करेंगी ?

मना का मन दूर हुआ । उसने कुछ सोचा फिर कहा—भीतर आ जाओ ।
युवक भीतर पुसकर एक दृष्टि भोपड़ी के भीतरी भाग पर कर गया । मना ने
कहा—क्या जल लाऊ ? सकेत पाकर मना जल से आई । युवक न जल पीकर
कहा—भाश्चर्य है आप अनेकी इस जगल में किस तरह रह रही हैं ?

मैं अनेकी नहीं हूँ मेर पति भी हैं । युवक ने तीव्र दृष्टि से मना को देख
कर कहा—आपके पति विचित्र पुरुष मालूम होते हैं । आप एसी सुन्दरी को
यह भोपडा ! यह वन ! इस एकान्त में क्या घाघा करते हैं ? यह प्रश्न करके
युवक न तेज दृष्टि से मना को देखा । मना घबरा गई । वह कुछ न कह सकी ।
युवक ने एक बार घूमकर भोपड़े को फिर दल डाला ।

अब मना धोली—सरकारी आदमियों से मेर पति को पूछा है । अब तुमन
जल पी लिया ठण्डे हो गए, अब तुम चल दो वरना मेर पति भ्रान पर नाराज
होंगे ।

युवक मना के बिल्कुल निकट आ गया । वह कुछ बोला नहीं । वह हस
दिया । मना काप उठी पर वह भी बोली नहीं । युवक न अपने भगदरे का
बटन दिखाकर कहा—क्या आप मुझ जरा सुई-डोरा देंगी ? मेरा बटन टूट
गया है ।

मना न सुई-डोरा निकालकर कहा—भंगरखा उत्तर दो मैं सिए देती हूँ ।

युवक ने जबाब दिया—सरकारी बर्दी उतारी नहीं जा सकती । क्या आप
हृषा करके

‘ठहरो मैं सिए देती हूँ । मना बिल्कुल युवक से सटकर बटन सीने
लगी । सीकर उसने बटन खींचकर लगाया । इतनी सावधानी होन पर भी युवक
का द्वास प्रस्वास और सोहे के समान छाती का स्पर्श उस नारे से भ्रान्त न
रहा । वह समझ ही न सनी कि क्या हो रहा है । उसका सिर धक्कर खाने
लगा । वह सुई का अन्तिम डोरा बटन से निवास ही न सकी और मूर्छित हो

गई ।

युवक न उस सावधानी से विद्योत पर लिटाया और मुख पर पानी का छीटा दिया ।

मना न आँखें खाली देखा भार उठकर बोली—घब तुम जाओ तुम महा मत ठहरो ।

युवक न गम्भीर होकर कहा—मुझे खद है बहुत खद है मैं जा नहीं सकता । तुम्हारे पति न जो अभी बाबा बाला है उसकी जाच का भार मुझी पर है । मैं मकान की तलाशी लूंगा ।

‘तलाशी ! मना की भवें खद गद्—तुम तुम झूठ कपटी लबार—यह और कुछ न कह सकी ।

युवक क्षुपचाप गातियाँ खा गया । मना उसके नश्वरीक धारक बोली—तब तुम हमारे धनु हो ।

मैं आपका मित्र हूँ ।

तुम ?

मैं

तुम ?

मैं

मना ने मुई उगाई और लख से युवक की बाह म धुभो दी ।

मानो कुछ हुआ ही नहीं । वह जाना युवक न बिना जरा-सी चेष्टा करने सह सी । क्षण ही भर म मना विचलित हो गई । वह स्तम्भ सड़ी थी युवक न सहता उसकी बाह अपनी सोह-अंगुलियों से पकड़कर कहा—सुन्दरी मैं धनु नहीं हूँ ।

मना न बेजना से तड़पकर कहा—छोड़ ! छोड़ दे ।

युवक ने छोड़ दिया मना परती में गिर पड़ी ।

युवक न उस उठाया नहीं वह सदा देमता रहा । मना ने पड़े ही पड़े कहा—तुम जाओ भरे मकान से निकल जाओ !

युवक ने मानो सुना हा नहीं वह उसके पास जाकर बोला—ईश्वर साक्षी है मैं तुम्हारा धनु नहीं हूँ । परन्तु कठम्य-वासन से विमुक्त नहीं हो सकता । मैं तलाशी लेता हूँ ।

उसे खोलने को हाथ बढ़ाया ही था कि मना दौड़कर झलमारी से लिपट गई।
उसने कहा—इसे तुम कभी न खोलने पाओगे। यह मरो है इसके भीतर
ना ना तुम देखन न पाओगे।
मना पुटना के बल बठ गई। युवक की झालें चमकने लगी। उसने कहा—
तब इसी झलमारी द्वारा मेरा कतव्य-पासन होगा क्यों ?

भाइ म जाए तुम्हारा कतव्य इसे तुम न खोल सकोगे।
मैं साधार हूँ उसने दायो के साथ ही एक भटका दिया। झलमारी
का पत्ला उखड़ धाया पर युवक की इच्छा पूर्ण न हुई। हकती का मात
उसम न था उसम थे बड़ी सावधानी स बनाए और घरे हुए छोटे-स गिणु।
वस्त्र छोटे से जूते कुछ खिलौने और कुछ मिठाइया। एक भी वस्तु इनमें
काम न आई थी।

नारी हृदय की गम्भीर गुप्त भावना इस तरह प्रकट हुई। युवक ने पीछे
फिरकर देखा तो मना धरती म पड़ी रो रही थी। युवक धीरे से उन वस्तुओं
को लेकर उसके पास बठ गया। उसने कहा—समझ गया तुम झकली जो कुछ
बना सक्ती थी बनाकर बठी हो पर वह प्रेम की पुतली अभी तक नहीं बना
सकी हो नयो ?

मना ने रोकर कहा—तुम्हारे परा पडती हूँ तुम्हारे कतव्य को मैं पूरा
किए देती हूँ तुम मले ही मेरा और मेरे पति का सवनास कर दा मगर मेरी
इस सानसा इस अभिसाया को किसीपर प्रकट न करो। खलो मैं तुम्हें प्योरी
का माल बताती हूँ।

युवक चकित हा गया। वह नम्रतापूर्वक सबा हो गया। मना न वे तमाम
वस्तुए जल्दी से जलाकर खाक कर डाली। इसके बाद उसन युवक की कमर
से उसकी तसवार सीच ली। युवक ने बाधा न की। नङ्गी तलवार हाथ म ले
मना युवक की और बढ़ी युवक निचल खडा रहा। दायमर दोनों की हडि
मिली। मना ने कहा—अबु ! क्या प्रमाण बिना पाए न टलोगे ?
नहीं।

मना तलवार लिए और भागे आई। कुछ देर दोनों के नेत्रा ने मुद किय
धीरे धीरे मना के नत्र गर्दन और सिर कुनने सगे वह खुद भी मुकी। पु
के बल बैठकर उसने तसवार की नोक पृथ्वी पर युवक के पैरा के पास पड

पत्थर की कोर पर गाड़कर कहा—यह लो प्रमाण !

युवक ने शिह की तरह उछलकर तलवार छीन ली। तत्काल पटिया उसाड़ जाती गई और खोरी का प्रायः समस्त मान बराम हो गया।

प्रसन्नतापूर्वक युवक ने गठरी बांधी। उसने प्रफुल्ल नेत्रों से मना की ओर देखा। मना रो रही थी। एव घन्तवेदना युवक के हृदय में उभर हुआ उसने कहा—सुन्दरी इस सहायता के बन्ने तुम क्या इनाम चाहती हो ?

मना न रोना रोकर कहा—मुझ मालूम है कि राज्य का तरफ स भ्राना निकली है कि जो कोई मेरे पति को गिरफ्तार करेगा या खोरी का माल बराम करेगा उसे बड़ा भोहा मितेगा इनाम भी मिलगा। कितने एकसर यहाँ आकर यहाँ स रोते गए हैं पर तुम जाओ भोहा बड़ाओ और इनाम लो। हमारा सबनाग हो कोई चिन्ता नहीं मुझ उसका विरोध कुछ नहीं पर यदि तुम—जोह युवक—मेरा एक अनुरोध मानो मुझ बन्ना ही देना चाहो तो मैं तुमसे कुछ मांगू ?

‘पति की क्षमा प्रापना छाड़कर क्योंकि वह मेरे बस की बात नहीं।

मैं वह नहीं मांगूगी। जब तुम्हारा भोहा स जाए, तब बड़े अकसर की श्रिया पोशाक पहनकर एक बार विवाह से पहले मर सामन हो जाना। मैं अब से तब तक उस रूप में तुम्हें देखने को तरसती रहूंगी। तुम्हें देखकर मैं समझूंगी कि आठ बय तन-मन से त्रिसती सेवा धर्म और ईश्वर के सामन की उनक प्रति विश्वासघात करके कुछ पाया तो।

मना और कुछ न कह सकी भरकर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

युवक ने मुना समझा रना पर घन्त में धीरे-धीरे गठरी लेकर घर से बाहर हो गया।

राज के दस बज नन्दू मूमता भ्रमता और बहवशाता आया। आते ही पारपाई पर पड़ गया। पड़े ही पड़े उसने स्त्री स अपने कपड़े उतारने और पैरों की धूल झाड़ देन क लिए कर्ण स्वर में हुम किया।

मना जब यह सेवा कर चुकी तो उसने नन्दू स साने के लिए पूछा। नन्दू ने साने स इकार करत हुए दो-बार अस्म्य गाली बककर कहा—बाए शप में बड़ा दर्द है बरा तेल की मातिग तो कर ?। मना अचमत्क भाव

भास्वीन ऊँचा कर तेल मलने लगी। बाहू पर हाथ फेरते ही उसे बीली-डानी मली दुग्न्धित देह कुछ अप्रिय-सी प्रतीत हुई। हठात् उसे युवक की वय-बाहु और वय-उंगलियों का स्मरण हो आया। वह मनमने भाव से शिपिल उगलियो से तेल मासित करने लगी।

नन्दू गमा उठा उसने कहा—'भा हायो का दम ही निकल गया है जरा भक्की तरह क्यों नहीं मासित करती ?

मानो मना न चुना ही नहीं। उसका हाथ और भी शिपिल हो गया। नन्दू ने मना को सात जमा दी। मना ने तेल के पात्र में एक ठोकर देकर सिंह की तरह गरज कर कहा—'मपनी इस देह को छुद समालो तुम्हारी बाँधी नहीं हूँ। कभी दर्द कभी राग भाव न आए यह सब मुझसे न होगा।

नन्दू शक्ति हुआ। आज मना का यह बिकल नया साहस कसा ? क्रोध से उसका शरीर रोमांचित हो गया। नन्दू उठा उसने मना से कहा—'तेरा यह साहस क्या तेरी धामतमाई है ?

मना ने नन्दू को ढकेलकर कहा—'दूर रहो मुझे बास घाती है। थका पाकर नन्दू गिरा। वह कुछ समझ ही न सका। क्षणभर बाद उसने बास की साठी उठा ली और रुई की तरह मना को घुन ढाला। मना घरती में गिरकर तड़पने लगी।

नन्दू ने कहा—'तेल मल !

हृगिञ्ज नहीं !

नन्दू ने और मारा—'मना बेहोश हो गई !

युवक तीर की तरह आपस के घर की तरफ चला। द्वार पर भास उसके पर जम गए। मानो वह बेसुध हो रहा हो। वह वही एक और बटव सोचने लगा। वह एक मूर्ति का ध्यान करने लगा। किस तरह पुष्पाप उसे अपनी तसवार निकाल देने दी किस तरह वह धीरे-धीरे मेरी छाती तक बार की नोक से घाई। अगर वह उसे छाती में सुई की तरह ही घुसे देती तो मैं उसे रोकता ? बदावि नहीं। फिर मैं मर्न क्या हुआ। वह पाव तो बार छाता परन्तु घातों के पाव का क्या किया जाए ? वह घातों की कलेजे में पार करती हुई घरती में बठ गई। उसी तसवार की नोक से

परन्तु उल्लास छोटी का मास मुक्त किया। धनु से ही धनु मारा गया। परन्तु यह प्रवृत्ता स्त्री हाथ में तलवार पाकर भी विश्वासघात न कर सकी। धनु को पानी विलाया धनु को चायद प्यार किया उस जीवनदान दिया और प्रवृत्ता वह उसे एक बार दंड हुए मोहते पर नई पाशाक पहन देतन के लिए अपना और अपने पति का सवनाग कर गई। आह र स्त्री !

परन्तु मैं ? अभी क्षणभर बाद मैं नवीन पन्था और बेस धारण कर उठती छात्रों की साथ मिटा सवता हूँ। माता कितन उल्लास से मरी विजय कहानी सुनगी ! परन्तु वह वह कितन क्षण यह देख सकेगी। फिर वह विजय किम धीरता की है ? हे परमेश्वर ! क्या मैं उससे विश्वास, धीरत्व प्रम और स्त्रीत्व के प्रति विश्वासघात नहा कर रहा हूँ। यहा मरा पीरुप है धिक्कार है इमपर !

सुबक गठण को छात्रों स लगाकर राने लगा। वह वही सेट गया।

प्रमान होन लगा था। पिटिया बहक रही था। बुनिया का द्वार धीरे से खिनीने सटवटाया। नन्दू ने धालस्य स उठकर झाँककर देखा—सिपाही द्वार पर खडा है।

नन्दू धवराकर मना के पास जाकर बोला—सरकारी कुत्ता है तू जय उन हस-बोलकर बातों स लगाना मैं तब तक मात इधर-उधर कर दूँ।

मना उठी। उसने झाँककर देखा नन्दू को जन जाने का संकेत किया। नन्दू पीछे के गार से जना गया। मना न द्वार खोला सुबक भीतर धाया।

मना प्रवृत्ता मदी रही। सुबक ने गठरी मना के सामन रखकर कहा—मुन्नी ! मेरे नीचता को क्षमा करना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

सुबक सौने लगा। मना न द्वार रोकर कहा—तुम्हारे सिपाही वहाँ हैं ? मैं सिपाही नहीं रहा।

‘कव मुम प्रफुल्ल हो गए ?

‘मैं साधारण मनुष्य रह गया।

क्या मोहना नहीं मिला ?

‘नहीं !

क्या प्रकृति को विश्वास नहीं धाया ?

'मैंने यह गठरी पेश ही नहीं की मैं बनी ही लौटा लाया हूँ ।'

'क्या ?'

गुम्हारे विश्वास पर विश्वासघात करता दायम न था ।

मना ने एक बार युवक और गठरी को देखकर कहा—बुरा किया, भय ?

मैं गिरफ्तार होने जा रहा हूँ—मैं बलम्ब-मालन नहीं कर सका मैं साफ साफ कह दूँगा ।

युवक दो कदम घुमा ।

मना ने हाथ पकड़ लिया । उसने कहा—देखो ।

यह कहकर अपनी कमर का बन्धन उभेड डाला । कमर चोट से लोह लुहान थी ।

'किस पशु का यह काम है ?'

मेरे पति का ।

कह कहां है ? मैं उसे युवक हीठ बनाने लगा ।

नन्दू मुस्वराता हुआ भीतर घाया और झुककर युवक को सलाम किया ।

युवक ने कहा—नीच कायर पशु, भयम ।

नन्दू तनकर मडा हुआ । उसने कहा—सरकार के भादमी हो तो गानी क्यों दते हो ?

युवक ने मना का दारीर दिखाकर कहा—अरे नीच तेरा यह भत्याचार ?

नन्दू हसकर बोला—घोफ ! यहा तक तुम लोगों की धनिच्छता है । मुझे मासूम न था । तो तुम लोगों की यह पहली ही मुसाकात नहीं है क्यों ? पर महाशय ! यह मेरी स्त्री है तुम स्त्री-गुरूपो के बीच मे क्यों पडने आए हो ? इसके बाद उसने साठ की तरफ डकारते हुए मनाम कहा—पुनधनी भमागिनी ! भीतर जा ।

मना गई नहीं । नन्दू मारने लगा । मना युवक से लिपट गई । युवक ने तनवार निकालकर कहा—एक हाथ भी छुमा तो सिर मुट्टे-सा उतार दूँगा ।

नन्दू हाफना-होपता बठ गया युवक ने कहा—ऐ सुन्दरी क्या तुम मेरा प्रेम स्वीकार करती हो ? मैं तुम्हें धम से परनी बनाना म्बीकार करता हूँ । यह पशु गुम्हारे योग्य नहीं ।

मना बैठ गई, कुछ बाली नहीं। नन्दू ने कहा—परतई स्त्री को कुसलान की तुम्हारी यह बेव्या घृणा के योग्य है। तुम मरे घर स निकल जाओ।

युवक न शोध स कहा—नै इस लिए जाता हू तुम रोक सको सो रोको।

नन्दू उगा। युवक ने मना का हाथ पकड़कर कहा—पत्नी।

नन्दू ने हठान् सानी का एक भरपूर हाथ युवक पर दे मारा। युवक ने हाथ बचाकर तबवार निकाल ला। शरणर ही में नन्दू धरती म गिर गया। तोहू की धार बहु पला। युवक मना का हाथ पकड़कर त पला।

कष्ट से कराह कर नन्दू न कहा—मना ! प्यारा मना ! आज इस तरह मरा भन्त हुआ। तुमन दस बप रात-रिन मरी सवा की जब तुम हाड-भात की बनी ही नहा हो। आज किस जादू ने तुम्हें अपन पति स इतनी दूर कर लिया। मना ! प्यारी हाथ ! मैं तुम्हें बडा दु स लिया। सब में मर रहा हू। पर प्रिय ! तुम जाभा मुखा र्हा। परन्तु एक बू पानी क्या तुम भन्तिम बार अपने पति को अपन प्यारे हाथा से पिलाओगी प्यारी मना ?

मना भाग न बड सवी। वह रुकी-मुडी। वह पति की झोर दौडी झोर रोत रोत उलस लिट गई। उसन जल-भात्र पति का सिर उठाकर मुह से लगाया।

पानी पाकर नन्दू ने कहा—मना ! बिना ! प्यारी मना ! मैं तुम्हें जगत् में इतना प्यार बिना जितना कोई न करेगा। मुनो-मुनो भन्तिम बार पास आओ पास। मना पति पर मुकी और शरणर ही म चीत्कार करके तरप उठी। गर्न रक्त की एक झोर धार उगी युवक न देला—भवसर पाकर नन्दू ने घुरी मना क कतजे में भोंक दा है।

युवकन दौडकर मना को उगाया। मूर्छा खुलने पर मना न अपन को युवक की गो म देला। धीर-धीरे उनने शक्ति-शुबप करके अपनी बाहें युवक के गने में दानकर कहा—मेरे प्यारे दुमन ! आखिर इस तरह ठप गए परन्तु एक प्यार तो दे ही दो। मना न प्याम होंड उपर को उगाए, युवक के धासुषो से भीने मुख की दो-तीन बार चूमा और गो म फिर गई।

नन्दू और मना दोनों निर्जैष पडे थे।

युवक न शरणर के सम्मुख अपने कतप-विमुख होन का प्रमाण देकर एक वर्ष का कठिन कारादार प्राप्त किया।

भव पृथ्वी के सब राजाओं में सर्वप्रथम हो गए ।

राजा ने उन गुटिकाओं की ओर विस्मयपूर्ण दृष्टि से देखकर कहा—हे^१ चतुर शिरोमणि सफेद कौए तेरी तो सभी बातें नई और निराली हैं । इन गुटिकाओं में भला क्या करामात है जो हमसे निवेदन कर ।

कौए ने नम्रतापूर्वक राजा का अभिवादन किया—महाराज पहली गुटिका में घाग पानी और तेल के दैत्य मन्त्रबद्ध हैं । य तीनों परस्पर विरोधी हैं । भव इनके प्रताप से आप ससार में जल-थल और आकाश में वायु की गति से स्वच्छन्द विचरण कर सकेंगे । आपको घोड़ा हाथी बल गधा खच्चर किसी भी सवारी की आवश्यकता नहीं रहेगी । दूसरी गुटिका में इन्द्र का वज्र मन्त्र बद्ध है । महाराज आपके देश में कभी रात्रि का भ्रमकार होगा ही नहीं उज्ज्वल प्रकाश से आपके नगर-द्वार प्रकाशमान रहेगे । यह तद्विदूत क्षणभर में संसार भर के समाचार सत्य-सत्य आपको निवेदन करेगा । तीसरी गुटिका में मृत्यु दूतों के साथ साक्षात् यमराज विराजमान हैं । यह गुटिका उन्मुक्त वायु में छोड़ देने से शत्रु के नगर देश जन-जनपद देखते ही देखते विध्वस्त हो जाएंगे । इस गुटिका में विश्व को विजय करने की शक्ति है । चौथी गुटिका में माता सरस्वती का वास है इसके प्रताप से आपको विविध विद्याओं का ज्ञान हो जाएगा सब ज्ञान विज्ञान आपके हस्तामलक होंगे । दुर्लभ ग्रन्थ सुखम हो जाएंगे । पाचवी गुटिका में सब भूत-पिशाच सिद्ध हैं इसके प्रताप से आप हजारों मीन दूर बड़े देव-दत्त मानव-दानव सबसे उसी प्रकार वार्तालाप कर सकेंगे जिस प्रकार आपका यह दास आपसे बात कर रहा है । छठी गुटिका में महासहस्री मन्त्रबद्ध हैं । इसमें सू-मन्त्र जादू से काण्ड के टुकड़े ही घनरत्न बन जाएंगे । लाखों-करोड़ों की भक्ष्य सम्पदा बिना ही सम्पदा के दीख पड़ेगी । इसके परम प्रताप से स्वर्ण केवल घातु ही रह जाएगा । सातवीं गुटिका में बूटनीति के आचार्य दत्तगुरु शुक्र देव गुरु बृहस्पति और मानव चाणक्य की आत्माएं मन्त्रबद्ध हैं । इसके प्रताप से आपकी वाणी में वह बूटरस उत्पन्न हो जाएगा कि जो कथ रक्त की नयी बहू-कर भी सम्पन्न नहीं हो पाते ये भव बात की बात में ही हो जाएंगे ।

कौए से ऐसी अद्भुत सात निधिया प्राप्त कर और उनका माहात्म्य सुनकर महाराज शूद्रक पुलकित हो गए । उन्होंने कहा—भरे कौए तू तो बड़ा ही विलक्षण जीव है तेरी वाणी भटपटी तो अवश्य है परन्तु बात काम की करता है ।

मैं तुम्हपर प्रसन्न हुआ। मांग क्या मांगता है ?

कौए ने भूमि पर चोच रगड़कर राजा को बारम्बार साष्टांग प्रणाम किया और कहा—महाराज अधिक लोभ से विनाग होता है और विना सेवा स्वामी से पुरस्कार मागने से घृण्य होना है। इसलिये मैं अल्प स ही सन्तुष्ट रहता हूँ। बस मुझ इतना ही चाहिए कि मेरा यह पिजरा राजद्वार में टांग दिया जाए, और इस दास की राजमंत्रियों में गणना की जाए तथा मेरी सेवाभा की वद्व की जाए।

राजा ने उस कौए को तुरन्त राय का प्रधान मन्त्री घोषित कर दिया और आज्ञा दी कि इसका पिजरा सदय राज द्वार में टंगा रहे तथा उसे राजपरिवार से दूध में भिगोकर खने की दास नियम खिसाई जाए।

कौए ने बारम्बार धरती में चोच रगड़कर कहा—बस महाराज बस। अधिक साम्रज्य मत दिलाइए। खने की दास में खाने का नहीं न राजपरिवार का भोजन स्वीकार करूंगा। मेरा कुल चाण्डाल-व्योपित है। यह हमारी कुल परम्परा है अतः मैं चाण्डाल-कुल के ह्राय का ही भोजन करूंगा। इसके अतिरिक्त मेरा विनिष्ट भोजन भी चाण्डाल-कुल से ही प्राप्त हो सकता है। राजा ने कौए का अनुरोध स्वीकार किया और सारे राय में द्विद्वारा पिठवा दिया कि आज्ञा से यही सफ़र कौभा हमारा सब राज-काज देखेगा। हमोका हुनम सबको बजाना होगा। तथा आज्ञा से चाण्डाल-कुल भस्पर्य भी नहीं माना जाएगा।

इतना आदेश दे महाराज सूदक ने धर्मासन त्यागा और अन्त पुर में जा मुससेज पर निश्राम किया। चकर-बाहिनी ने महाराज पर चकर हुलासा और महाराज मुस-नीद में सो गए।

राजा ने धर्मासन त्यागते ही कौए ने चाण्डाल कन्या को हुनम दिया कि हमारा पिजरा धर्मासन पर स्थापित कर अब आज्ञा से हम धर्मासन पर बठकर राय का सब काम देखेंगे। इसके बाद सभी पंडितों को और देय तिरस्कार करने वाली में कौभा बोला—अरे मूर्ख पंडितों अब आज्ञा से यह हमारा अनुशासन चला। तुम्हें उचित है कि यह बड़े-बड़े पण्डितों की गठरियों सिर पर साद कर हमारे सम्मुख न आओ न घोड़ी पहनकर न नगे पाव। हमारे सम्मुख पर ऊंच करके भी नहीं बठने पाओगे। और हमसे हमारी ही भाषा

सीखो । हमारा ज्ञान और हमारी विद्या पढ़ो हम जसा कहें वसा करो नहीं तो तुम्हारी सब जागीर-जायदाद धेतन-मुशाहरा हम जख्त कर लेंगे ।

सभा पण्डित बड़े घबराए । वे कहने लगे—हे काक-मन्त्री भला हम तुम्हारी सी बोली कसे बोल सकते हैं तथा हमें धोतिमां तुम न पहनने दोगे तो हम निलज्ज-नगे कैसे राजद्वार पर आएंगे ।

कौए ने कहा—मूर्खता की बातें मत करो सीखन से सब भ्रा जाण्णा नहीं तो भूखे मरोगे । सबकी पद-युत कर दूंगा । पहला काम तो तुम यह करो चेहरे का घास फूस साफ करो सफाचट करना होगा समझ । और हमारी बोली बहुत मुश्किल नहीं कंस टा-टा करना सीख लो । वेस तुम्हारा हम ठीक कर देंग ।

सारे सभा-पण्डित टा-टा करते हुए अपने-अपने घर गए और दूसरे दिन सब क्लीन शेव किए फोट-पट पहन टाई फर्राते बूट मचमचाते फकाफक सिगरेट का धुमा ज़डाते हुए दरवार में पहुँचकर बोले—हे काक-मन्त्री टा-टा अर्थात् सब ठीकठाक है न ? सब तुम्हारी पसन्द ह न ?

काक ने कहा—टा-टा । ठीक है ठीक है । शय सब शीघ्र ही ठीक हो जाएगा ।

एक पण्डित ने हाथ जोडकर कहा—हे काक-मन्त्री इस पोशाक में हम एक बड़ा कष्ट ह । हम सभुसका को बठ नहीं पाते हैं ।

कौए ने फटकारकर कहा—घरे मूर्ख सभुसका के लिए बठने की क्या आवश्यकता ह खटे-खटे कर ।

और दीपशका ?

कौए ने एक कागज का टुकड़ा देकर कहा—दीपशका के बाद इस कागज से पौछ । खबरदार अगविशेष पर जल का स्पा न करना । नहीं तो मेरे भल्ल दाता चाण्डाल-भुल को कष्ट होगा ।

महाराज ने राज सभा में आकर देखा—यहां का सब नवशा ही बदला हुआ ह । सभा-पण्डितों का नये वेस में फकाफक सिगरेट का धुमा उडाते तथा सफाचट दाड़ी मूछे मठाए देस महाराज खरा गए । इसके बाद ज्योही उन्होंने राजा का स्वागत करते हुए कहा—महाराज टा-टा ।—तो महाराज बोले—हे सभा-पण्डितो क्या तुम सब भांग खा गए हो या कोई नाटक का स्वांग हमारे मनोरजन के लिए भर लाए हो ।—तब सभा-पण्डितो ने पतखून की जेब में हाथ

डामकर कहा—धर्मासन पर टा-टा । बस काक-भन्त्री का भाषा है उन्हींका वेश है जन्हाका बोलबाला है ।

राजा ने देना धर्मासन पर कीए का पिजरा रखा है । उसन धपनी खोज ऊचा करके कहा—टा-टा महाराज ।—महाराज न हसते-हसते कहा—टा-टा । टा-टा । भई बाह यह टा-टा भी खूब भाषा रही । टा-टा ।

धव कौमा भी बारम्बार टा-टा करने लगा । और समा-गण्डितों ने भी टा-टा का समा बाध लिया ।

धनम राजा न कहा—ह चतुर घुममणि काक धव कहो तुम्हारी प्रसन्नता के लिए हम क्या करें ? कीए ने एक सपटीरेखर और ब्लेड तथा शेविप केक देकर कहा—पन्ने प्राप धेव कर बेहरे के इस जगत को साक कीजिए । फिर समा-गण्डितों के जमी पोशाक धारण कीजिए । राजा ने ऋट सेव कर समा-गण्डितों की सहायता स बूट कसे पतसून पहना टाई बाधी हूट लगाया और कीए की घोर देखकर कहा—टा-टा काक राज ।—कीए ने शोष ऊपर कर कहा—टा-टा महाराज ।

राजा ने कहा—प्रच्छा यह तो हुमा । धव मैं बँटू कहाँ ? धर्मासन पर तो तुम बठ गए ।

कीए ने कहा—महाराज जब यह सेवक धव सब राजकाज देखने को बठ ही गया तो धव प्राप धीमानों को धर्मासन के म्मटों में सिरल्ल मोल सन की क्या धाव-यचना है ? प्राप धन-पुर में पधारकर भोग-विलास से जीवन धन्य कीजिए तथा यह मेरे देश का मधु है मधुपान करके धानल के सागर में डबकिया लगाइए । यह कहकर कीए ने एक बोतल बड़िया राम्येन धाराव राजा को देकर कहा—टा-टा महाराज ।

बात राजा के मन को ना गई । उत्तने कहा—टा-टा काक-भन्त्री तो मैं धव पता । राजा हमने हुए धन-पुर में घने गए ।

समा-गण्डितों ने कहा—तो काक राज हम क्या करें ? राज-सभा का काम कैसे चलेगा ?

‘जमे चलेगा वसे हम चलाएंगे तुम सब केवव टा-टा कहो । और डान्य करो ।

गना-गण्डिता ने हाथ जोड़कर कहा—ह काक-भन्त्री डान्य करना तो हम

जानते नहीं बाप-दादों ने हमें सिखाया नहीं ।
 धरे मूर्खों हमारा मेमसाहेब तुम्हें डांस सिखाएगा । यह कहकर बोए ने
 अपनी जोड़ीदार मादा से कहा—डार्लिंग इन जानवरों को डरा डांस तो
 सिखाओ ।

बस बाबू महम नपे-तुले कदम रखती इतराती इटलाती बलसाती कमर
 हिलाती, खोच घुमाती पिंजरे से बाहर भा समापणितों के चारा घोर घूम
 घूमकर टा टा करने लगी । उस बाबू-बघू को इस तरह मटकते देखकर समा
 पणितों के मह में पानी भर आया उनम जवानी का ज्वार उमड़ आया । वे
 भी उसकी देखा देखी लग कूल्हे मटकाने और मुहबन्त कर टा-टा कहने । बाबू
 राज ताल देने के लिए बीच-बीच में पों पों कर अपना वायु छोड़ने लगे । बाबू-
 बघू बाबू-मन्त्री का उत्साह-वर्धन करने के लिए क्लिककारी भरन लगी । समा
 पणितों न खूब डांस किया । बाबू-मन्त्री ने सबको एक एक प्याला अपने देश
 का मधुपान कराया । उस दिन बहुत रात तक यह राजकाज होता रहा । अन्त
 में सबकी टा-टा करके विदा हुए ।

महाराज अन्त पुर पहुँचे-तो राज-महिषी उनका सफाघट चिकना चुपडा
 बुढाप से पिचका हुआ पीला मुख देख अवाक रह गई । राज रानिया दासियों
 चेटियाँ कषुकी वेनवती सब मह आचल से बाप हंसने लगी । महाराज पतलून
 की जेबों में हाथ डाले सिगरेट पीत—खांसते-हंसते अन्त-पुर में इधर-उधर घूमन
 मिला ? यह मुण्डन कसे हुआ ?—राजा ने कहा—हे रानी टा-टा । घोर सब
 दासियों टा-टा । यह मरण-समाचार का मुण्डन नहीं है बाबू-मन्त्री का
 प्रसाद है ।

किन्तु महाराज के मुह में आग लगी है धरी चेटियों, जल-जल । महिषी
 ने महाराज के मुह से सिगरेट का घुमा निकलते देख घबराकर कहा । निन्
 महाराज ने उसके एक कदा लिया और सापरवाही से पुए का एक बादल बन
 कहा—नहीं नहीं देवी आग-ऊग कही नहीं लगी यह हम बाबू मन्त्री के
 परामश से मधुपान कर रहे हैं ।

'हाय हाय सर्वनाग मधुपान ? तब तो हृदय में अपकार ही अन्त

हां जाएगा ।

‘यहा तुमन काक-मन्त्रा की महिमा को देखा नहीं भग्घा टहरो में उन्हें यहीं मगाता हू ।

पट्टरात्रमहिषी ने कहा—यह कसी बात महाराज परपुर्य का भन्त-पुर में प्रवेश होन स मयाग मग होगी ।

‘नहीं होगी । काक-मन्त्री परपुर्य नहीं तियक यानि का जीव है—कौमा है । जस तुम्हारे पाव गुरू-शास्त्रि हैं वस ही मेरा यह काक-मन्त्रा है पर बाज उचकी निपला है । देखो तो तुम । इतना कहकर राजा न एक चेटी को संकेत दिया । और वह साटवी हुई जाकर कौए के दिजरे को उग साई ।

भन्त-पुर में भाज ही कौमों की जोड़ी न शीष रण्ड रण्डकर कहा—टा टा महायना टा-टा महाराज । राजदासिनों न हुहयमा—टा-टा महाराज ! टा-टा काकराज !

महाराज न महिषा स कहा—वहो कहो सब कोई कहो टा-टा टा-टा ।

‘एँ ? यह टा-टा क्या ? इसके क्या अर्थ

‘अप कुच्च नहीं यह काक नाया है सम्म माया बन यही अर्थ है ।

महायनी तथा भन्त-पुर की भन्त सब महिलाए चेटियां, हुसती हुई बीनीं—टा-टा ।

कौए न कहा—धर्मावतार, भन्त-पुर का यह भवरोष तो सवया धर्मावतार एकरम ऐटिकेट के विपरीत है । इसमें उन्मुक्त बाहरी हवा का प्रवेश कहां है ?

‘नहा है मानता हू । भग्घा अभी प्रतिगोध करता हू । समूच भन्त-पुर में सिक्की-दरवाज फुडवाता हू । राजा ने साग्रह क स्वर में कहा ।

कौए ने उत्तर दिया—यह सपेष्ट नहीं है महाराज । समूचे भन्त-पुर को बहा दाजिए । और महायनी तथा महिलाओं की उन्मुक्त वायु में स्वच्छन्द विचरण करन दीजिए ।

‘धरे नहीं काक राज ऐसा करना बहुत खतरनाक होगा । ये स्त्रियां स्वच्छन्द विचरण करन सगेंगी तो हमारे बाज की न रहेंगी भाग जाएगी ।

‘नहीं मागेंगी महाराज इन्हें ये जूते पहना दीजिए, बस काफी है । कौए

ने साढ़े सात घंगुल ऊधी एही के जूतों के एक सौ इक्कीस जोड़े राजा बोदिए।
उन जूता को पहनकर रनिवास की सब स्त्रियां सबसटाती हुई चलन लागी।
महारानी ऊरा राजा की घोर सपकीं ता खट से पर मुचक गया। शीघ्र मुह
गिर पडी। राजा न दोड़कर महारानीको उठाया तो तनाव मे भाकर उनकी
पतलून फट गई।

काक-मन्त्री ने यह दस्ता तो घधीर होकर बहा—नानसेन्स महाराज !
नानसेन्स नानसेन्स । साहस की वृद्धि के लिए महाराज ने दोतल से कौए
के देग का एक पग मयुरम पिया।

परन्तु महारानी ने उठकर सबसटाते हुए दो कदम चलकर हसते हुए
कहा—टा-टा काक राज । महाराज ने फटी हुई पतलून पर हथेलियां रखकर
कहा—टा-टा काक-मन्त्री ।

कौषा खुस हो गया। उमने कहा—प्रब ठीक हुआ महाराज ।
मान गया तुम्हारी खोपठी को काक-मन्त्री । ये जूते बड़े मज के रह इन्हें ।
पहनकर ये स्त्रिया प्रबरोधन रहन पर भी भाग न सकेंगी।
कौए ने कहा—महाराज सम्यता के मध्यबिन्दु दो ही है स्त्रियों के लिए
अधिक से अधिक ऊधी एही का जूता घीर मदीं के लिए पतलून की कीज ।
समझ गया समझ गया। परन्तु एक दिक्कत है। खैर बठने की व्यवस्था
के पर सटकाकर हो जाएगी। परन्तु महल मे सड़े-सड़े सपुसका करन का
ज्यान बनवाना पडेगा ।

सो बन जाएगा। सड़े-सड़े सपुसका करने मे बहुत लाम है महाराज, यह
फिर बहूगा अभी महारानी को हमारी भेटम विभूतियां भेंट करना चाहती है।
'याह वाह देखें कैंसी हैं ये विभूतियां ?
वे य हैं महाराज । काकनी ने नसरे से एक लिपस्टिक एक पफ सने

पाउडर का डिब्बा घीर एक काजल की डिब्बी महारानी के हाथ मे घर दी
घीर उनका उपयोग भी बता दिया ।
यस अन्त पुर की सारी स्त्रियो न होठो पर लिपस्टिक पोत गालो
पाउडर मल घांसा म कान तक काजल घी रेखा खींच दी—एक-एक रेसा
की कोर पर भी बना दी फिर दर्पण में अपना पेष्ट किया हुआ मुख-
देख सब तिलखिलाकर हस पडीं ।

राजा ने खुद होकर कहा—यह तो खूब रहा काक राज राजमहियो तो इन विभूतियां से खिल उठी ।

कौए ने कहा—महाराज ये विभूतियां ऐसी ही हैं इनम सत्तार के सब दानगास्त्रो का निचोड भरा है ।

राजाने कपार पर भौह खडाकर कहा—धरे दानगास्त्रो का निचोड ? क्या कहते हो काक राज ?

सत्य कहता हू महाराज । यह सारा बिन्व त्रिगुणात्मक है । सव रज-तन तीन गुणो को त्रिगुण कहा है । सो मह जो श्वेत पाउडर है सो सतोगुण का प्रतीक है लाल लिपस्टिक है सो रजोगुण का घोर काजल तमोगुण का प्रतीक है इस त्रिगुणात्मक सत्तार को मेकप कहा गया है महाराज । यह मेकप महापरोपकारमूलक है । इसे देखकर देखनेवाले पुरप पुद्गवों के नेत्र तृप्त होते हैं । स्त्रियों को इससे कुछ लाभ नही होता । वे परोपकार ही के लिए यह मेकप करती हैं ।

'तब तो यह धर्म-शाम हुमा काक राज क्या कहने हैं तुम्हारे बुद्धि-सागर । टा-ग ।

'टा-टा महाराज प्रच्छा तो घब घाप इन सब राज महिलाधो के साथ दान्त धीजिए एक बार ।

'किन्तु काक राज इन फूलों से तो मैं चल ही नही सकती राजमहियो ने हताग होकर कहा ।

राजा ने कहा—न हो इसकी एही जरा-सी पिस दी जाए ।

नही महाराज प्रम्यास से चलना धा जाएगा । इनसे केवल यही लाभ नही है कि स्त्रियां भाग न सकेंगी इस तरह चलने पर सौन्दर्य का भी उदय होगा । देखा घापने यह गई पेटी चलती है तो किस घदा से कूस्हे मटकाती है । कौए ने एक युवती दासी की ओर सकेव करने हुए कहा ।

'देख रहा हू—देख रहा हू । मशदार है दिलचस्प है । हां यह लिपस्टिक घोर पाउडर में भी जरा-सा धान होओ घोर गालो पर मल मूं तो कता रहेगा ?

'नही महाराज यह स्त्रियों ही की विभूति है । घाप केवल पतलून की क्रीज का सयाल रसिए । इसके लिए घाप सडे-गडे सगुगारा कीजिए सडे-राडे भेंट मुपागास कामकाज घानि सब कुछ कीजिए सडे-राडे बगिए सडे-गडे

खाइए ।

घोर खड़े-खड़े सोऊं भी ?

नहीं-नहीं सोने के लिए स्लीविंग सूट डूंगा ।

तब ठीक है, टा-टा । धायो रानी डान्स करो ।

‘महाराज महारानी मेरे साथ डान्स करने मेरी प्रतिष्ठा बढाएँ और महा राज मेरी काकनी के साथ टास कर उसे उपवृत्त करें । यही ऐटीबेट है ।

समझ गया । यह बदल-बदल का मामला है । बहुत भ्रष्टा है । इसमें स्वाद बदलता रहता है । तो महारानी जाओ जाओ काक-मन्त्री के साथ दिल खोलकर डान्स करो धुमाधुत सोच-सकोच को गोली मारो ।

महाराज, मुझ तो आज लगती है ।

‘तो काक-मन्त्री के देश का मधुपान करो । साज शर्म सब हूषा हो जाएगी । फिर ताक पिनाधिन ताक पिनाधिन । महाराज हंसते हुए अपना भग विशेष बजाने लगे ।

कौए ने राजमहिषी को झक में भरकर कहा—टा-टा ।

राजा ने काकनी को सीने से लगाकर कहा—टा-टा ।

धन्त पुर की महिराया ने जो जहाँ मिला उसीसे जोश मिलाकर कहा—टा-टा । टा टा ।

देसते ही देसते महाराज दूधक के घम राज्य में, घम-समा में, धन्त पुर में जनपद में घोर परिवर्तन नजर आने लगे । महाराज दूधक भय रात-दिन काक-मन्त्री के देश का मधुपान कर पौर-कामाया के साथ मजे में दिन बिताने लगे । राजकुंज का कर्तापता कौशा ही हो गया । राजमहिषी घोर राज-महि माए बदल-बदल का सार समझ राहवाट औराहीं पर घूमने और जित नये जोड़े छांटने लगी । कौए के देश का मधु प्रसाद सुविधा से सब जनपद को वितरण करने के लिए जगह-जगह मधुघालाएँ खुल गईं । कौए को दी हुई सातों गुटि कार्यों की करामात से देश मोतमोत हो गया । उसका प्रभाव से बड़े-बड़े परिणाम हुए । यज्ञस्तूप अलाकर मिसों की चिमनियाँ बना डाली गईं तपोवनों में बम्प निर्मां क्षुल गढ़ । समाधि के स्थलों पर आफिस बन गए । भयान के समय काम का दौर-दौरा हुआ । गंगा यमुना की कोमल देह दास विलास कर डाली गईं । यज्ञपेनुषों के मोस अण्ड प्रिय खाद्य बन गए । असूयम्पदया महिसाएँ सार्वजनिक

हो गई। स्त्रए नरवरों न प्रथम ताम्र-सण्ड पर, धीर पीछे जीवन की स्वासों पर धम्बुदय धीर निश्रय बेच डाला। प्रबोध यातिकाए बध्म्य का वेस पहनने धीर निबाहने लगीं। घनपूर्णा भीख मागने लगी। इन्द्र दासता के टुकड़े साने सगे। दिग्देदेवा धीर रुद्र-वमु-यम पदच्युत हो गए। मनुष्य घोडों की भाति दौडन भड़ की भाति मरने धीर गधा की भाति पिसने लगे। घनत में एक ऐसा विस्फोट हुआ कि उसीम नीति-धर्म-समाज धीर तत्त्व—सब छिन्न-भिन्न हो गए!

एक सगोटा बाबा राज-द्वार पर धाया। गजी छोपडी बड़े-बड़े बान दूटे हुए दांठ दुबता पतला नगा धीर पाव प्याग। उसन घर्मासन के सम्मुख धाकर पुकार की महाराज शूद्रक क घम राय की जयजयकार की। पर उसन घा-धर्म-धक्ति होकर देखा—घर्मासन पर महाराज शूद्रक हैं ही नहीं। वहाँ कोए का पित्ररा रखा हुआ है। सभा-सण्डित सब मधुपान कर नौद म ऊथ रहे हैं। केवल द्वारपाल द्वार पर बठा हयेली पर तम्बाकू मल रहा है।

सगोटी बाबा को देखकर उसन हसकर कहा—तम्बाकू खाओ बाबा।

तम्बाकू नहीं मैं घर्मासन के सम्मुख पुकार करन धाया हू।

‘तो बाबा पतलून पहनो टा-टा कहो धीर हमको टिप दो। हम सड़े-सड़े तुम्हारा काम करा देंग काक राज हमपर द्रसन है। वे हमारी ही भासों से देखते हैं धीर हमारे ही बानों से सुनत हैं। हाँ करते हैं मनचाहा। मुल हमारी भी बान रखते हैं। बह्सीस दो।

‘यह काक-मन्त्री बान है ?

‘तुम नहीं जानत ? यह कामान्दोलन द्वीप का जीव है।

‘धीर महाराज शूद्रक ?’

वे तो मौज-मजा करते हैं काक राज का दिया मधुपान करते हैं। राजबाज से उन्हें क्या मेना-देना।

सगोटी बाबा ने द्वारपाल की बात सुनकर कहा—तू यहाँ क्यों बठा है ?

‘पेट के लिए।

‘तेरा पेट कहाँ है देखू ?

द्वारपाल ने हसते हुए अपना ढाल-सा मोटा पेट दिखा दिया।

‘भीर दिला ।

द्वारपास न घपने सीने पर हाथ रखा ।

बुद्धि ।

‘बुद्धि देखनी है तो काबू राज मे देयो बाबा हमें बुद्धि से क्या लेना-देना
है टिप दो भीर काम तो नहीं तो ज सीताराम ।

‘ज सीताराम क्या ?

समको यहा से भीर क्या ?

‘तुम्हारा धर्म कहां है भाई ।

मन्दिर म है ।

‘उसकी कौन दखभास करता है ।

एक आदमी है उसे हम राटी दे देत हैं ।

‘तुम कभी घम भी सवा नहीं करत ?

‘न ।

भीर यह साठी ।

मिर फोदन के लिए है ।

‘बिसका ।

बिसका काक मन्त्री कह नमक उसीका खाते हैं ।

‘धपनी मेहनत का नहीं खाते ?

‘गा क्या हुराम का खाते हैं ? दरवान न बोप करने साठी उटाई ।

सगोटी बाबा न हसकर कहा—क्या पीटोग ?

‘जकर पीटोगे ।

‘तब पीटो भाई । बाबा पदपी सगाकर वही बठ गए ।

दरवान ने कहा—बाबा बिना काम मत बटो हुनम नहीं है ।

फिर मत करो तुमने जं सीताराम कहा या न ।

कहा या ।

‘सीताराम को जानते हो ?

जानता हू ।

वा कहो—रघुपति रामक राजा राम पतिव पावन सीताराम ।

दरवान ने ये श्रुत दृष्टा दिए ।

बाबा ने कहा—यों नहीं भाई प्राँसे बन्द करके हृदय क द्वार खोलकर

८- मतिपूर्वक रहो ।

दरबान ने धसा ही किया ।

'दगन हुए ?

किनके ?

'पतिन पावन सीताराम के ।

न'

९- 'तो तुमन हृदय क द्वार नहीं खोले केवल प्राँसे ही मूरी हृदय म साटी का ध्यान था ?

'या तो बाबा ।

'तो बटा साठी फेंक द ।

धीर मौजरी ?

९- 'वह भी छोड दे ।

साऊगा क्या ?

'जोय बो धीर सा ।

'पहनूगा क्या ?

मान-नुन और पहन ।

'करू क्या ?

'कह रघुपति राघव राजा राम—पतिन पावन साताराम ।

दरबान ने ऐसा ही किया । बाबा ने कहा

'दगन हुए ।

'हुए, हुए । दरबान न प्राँसू बहाने हुए लगाटा बाबा क पर पकड लिए ।

दोनों मिलकर गाने लगे—रघुपति राघव राजा राम ।

धीरे धीरे राजगार पर भीड लग गई । सबन उय गान में अपना कण्ठ-स्वर

मिला दिया ।

१- बाब-मन्त्री ने मुजा तो गरजकर कहा

'यह कँसा धीर है पकड़ो इन सबको ।

सब भोग भयभीत होकर भागन लगे । किन्तु बाबा ने कहा—मैं स्वयं घाटा हू ।

सगोटी बाबा कोए के पिजरे के पास जा खड़े हुए । कोए ने कहा
'तेरी पतलून कहाँ है ?

मैं गरीबा का प्रतिनिधि हूँ सगोटीभर पहनता हूँ ।

टा-टा क्यों नहीं बोला ?

'मैं रघुपति राघव बोलता हूँ ।

कोए की मेडम ने कोए के कान में कहा— भरे इसके मुह न लगे यह
बड़ा खतरनाक घादमी है ।

कौन है यह ?

'वही है जिसने कुश द्वीप में साहू की सीक से तुम्हारी एक भाख फोड़ दी
थी । माद है ।

वह यह है ?

'वही है डियर मने इसके टूटे दात देखते ही पहचान लिया ।

'तो इस बार मैं इसे ठीक कर दूंगा । उसने बाबा से कहा—'मैं तुम्हें
जानता हूँ, तू वही होगी बाबा है जिसने कुश द्वीप में मुझे जाना किया था ।'

मैं भी तुम्हें जानता हूँ तुम वही शतान हो जिस मने कुश द्वीप में मनुष्य
सोह पीते देखा था ।

मैं इस बार तुम्हें ठीक कर दूंगा ।

धरुषा होता तुम शैतानी छोड़कर मने जीव बन जाते ।

'बकवाद न कर टा-टा कहता है या नहीं ?

नहीं ।

'तब ठहर कौआ अपनी मादा सहित पिजरे से निकल घाया और सगोटी
वा को पिजरे में ठूस लिया । सगोटी बाबा खिलखिलाकर हसने और लोगों
कहने लगा—'भाभो भाभो यहा हम रघुपति राघव का गीत गाए ।

द्वारपाल ने हाक लगाई । और सब सभा-मण्डित, सब राजसेवक कर्म
री नगर-जनपद जन सभी पिजरे में घुस बठे । और लग रघुपति राघव
धुन बसावने ।

इसके बाद सगोटी बाबा ने कहा खुल जा शमशम । तो खट से पिजरे
का फाटक खुल गया । सब बाहर भाकर रघुपति राघव गाने लगे । कोए ने
गुस्ते में भाकर फिर उन सबको ठूस दिया । वे फिर निकल घाए । फिर ठूसा

फिर निकले फिर ठूसा फिर निकले । कौमा एकदर हाफने लगा । थोंब से अपने पर नोषन लगा । काक-मरनी न कहा—कहती न थी इसके मुह न सगो ।

यह बाबा तो निकल घुस के काम म पूरा उस्ताद निकता ।

देखा दया उसने फिर भाहू की सीक उठाई कही यह तुम्हारी दूसरी भास तो फोड़ देना नहीं चाहता हाय हाय कहे देती हू काने हो गए—यहां तक तो बर्दान कर लिया दोनो फूट गई तो तलाक दे दूगी । धवे हस्बन्ध को जमभर होती न फिर्गी ।

'तो धव में क्या करूं ? पाजी ने सबकी साथ से लिया कोई भी तो टा टा नहीं करता ।

मेरी राय मानो तो मुलह कर लो ।

कौए न घघना-मदनाकर कहा—बाबा भगडा न कर मुलह कर ले जा तुम दो पतनून दूगा सबका एव देता हू । बोल टा-टा बोल ।

बाबा ने कहा—रघुपति राघव राजा राम ।

उनके साथ लामों कच्छ-स्वरों ने गाया—रघुपति राघव राजा राम ।

बाबा न भाहू की एक सीक उठाई धौर कौए का धोर चला । कौमा धवराकर अपनी मेठम के साथ म मुह छिपाकर कहने लगा—बचाया बचायो बानिग । कही यह मरी दूसरी भास भी न फोड़ दे ।

कौए की मडम न कहा—तान पतनून द दो उस तीन ।

कौए न कहा—बाबा मैं तुम्ह तीन पतनून दूगा टोस्ट धौर मखन भी दूगा । घा मुलह कर ले ।

बाबा न भाहू की साक ऊंची करके कहा—भाग रे कौए भाग । चारों धोर स हठारों-लाखों नरनारी भाबाल-बृद्ध उमड़ भाए । किसीके हाय म सबकी किसीके हाय म पत्थर, इट किसीके हाय म बास । महिलाधों में किसीके हाय में भाड़ किसीके हाय में बसन किसीके हाय में सोदा धौर किसीके हाय में पून्हे की सकडी । सबन एक स्वर म पित्लाकर कहा

'भाग रे कौए भाग ।

'भाग रे, कौए भाग ।

'भाग रे कौए भाग ।

कौए ने अपनी कानी घास में भ्रामू भरकर एक चार अपनी मेडम की घोर देखा मेडम के रग-वैद्य देसकर कहा—फिर चलो डिपर जिहें मूकना, सिखाया वे ही काटने धा रहे हैं। बस खरियत इसीम है कि कानी घास भेकर भागो।

कौए ने सफ़द पर फलाकर मुलह का सक्त किया। लगोटी बाबा ने भी लगोटी हिला दी। कौमा बोला

‘मरुदा, हम भाग जात हैं बाबा लेकिन हमारी जान बहानो होगी।

लगोटी बाबा बाले—तुम कौए को मारकर कीई क्या लेगा—जा भाग। घोर कौए ने भागने को पर फडफडाए। इसपर कौए की मेम साहब ने कहा—अब इन गधो से बरना क्या बाबा कह चुका ता जान का खतरा नहीं घास फूटने का भी भय नहीं अब भागने लो ठाट से डास करने हुए, टा-टा’ कहकर।

बस दोना बंदम-बंदम बान्स करते हुए राज-सभा की सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। बाक मेडम ने हस हसकर सब सभा-बडिता से खींच मिलाई। कौए न कहा—बाबा टा-टा।

बाबा ने हाथ मिलाकर घोर हसकर कहा—टा-टा टा ग।

सबने एक स्वर में कहा—टा-टा टा-टा।

घोर कौमा उठ गया।

लम्बग्रोव

रुन कृष्णा ने कनका का कहन काल्य कल्पना से चत्कर कर रहा है। उन चत्कर में ऐश-दैत्य मङ्ग विचलन हो गए हैं। कलाकण्ठ को नियत ही मृग-रसा प्रणितो के मुख धर जीवन क कल्पना के स्वयं रक्षण रक्षा है, जो मन्मथानन्दन का द्रव्य बला हो कि उमका वन्दन का सारा का हाता। रायण हा विरत क विना कनकर ने मरल को विनयन विनयिका पर एता हृदयर किया हाय। कहानी क देखनक का जहाँ मङ्ग सन्ध है, लखक को अतिन विवेक स कल्पना रदन में भरल्ल मरुता मङ्ग पुङ्ग है। कहानी में विगुद मानव प्रेम और मृत-रुप है। रत्नम भी योग्य नहीं है, स्वयं और रतन क चत्कार के ता कहने का क्या है। चन्द्रकला करना का मय है जो विव का शिरोमूय और विमानन के प्रोतिन का उपविद्न है। काना-वमङ्ग की स्वैरुप कालियो में यह कल्पन है।

उत्तुङ्ग हिमकूट पर घुञ्जटि क्रोध स पूरकार कर उठ। उनका हिम धवल शिखर दह धरपरा गया। धनी धना उनकी समाधि मंग हुई थी और उसी समय उन्हें प्रतीत हुआ कि उनके जटाङ्ग स कोई चन्द्रकला को घुरा ले गया। चन्द्रकला की रजत प्रभा स हीन उनकी पाङ्कुर जटा धूमिल और मलिन हो रही थी जाह्नवी का धुप्र रना मूख गई थी। उनके क्राध और चनभाव स उनके मनु धङ्ग के मुखरता स मुक्त सन जागरित हा इधर-उधर सरकने लगे। कमर में विपटा हुआ व्याघ्रवम स्थानित होकर नाच खसक गया। त्रिश हिम-शिखा पर कसाली धनाश्रियो स ध्यानमुक्त स्थिर समाधिहीन तुलपावस्था में उपस्थित स यह विपचकर बहने लगी। उन्होंने एक बार धन्दो तल निरुप करने क लिए जग को आशा बहा चन्द्रकला नहीं था। उस कोई घुरा ले गया था!

उन्होंने आककर मलयोद की ओर देखा।

महाशयों की रात्रधानी शिखी धनन भास्य पर इनका छोटी थी सब मे धव तक इस महामन्दोरी पुञ्जता ने न जाने कितने नर-नाहुरों का रक्षणान किया स जान किउनो बार पनि श्लामों स यह बरी गई मह धानवीवना धन्व दुमहित बना गई 'सत्रधन्व' स सदी लड़ी थी। रण-विरगी ध्वजा पनाता बन्व नशायों स धोउप्रात। विविध वाद्य जन-कोनाहव प्राङ्कुरित काष की भाति

अपचमाती सड़क पर असह्य विजली की दीपावलियों से प्रतिबिम्बित घालनी चौक में नर-नारी आवाज-वृद्ध भरे थे। सातबिंने के सामने दृष्टि के इस घोर से उस घोर तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड दीख पड़ रहे थे। सब कह रहे थे—साठ सौ वर्षों के बाद ! आज सात सौ वर्षों के बाद !—किसी सौभाग्य की सुख भावना से उनके मुखमण्डल आनन्दित थे। उनके उत्सुक हृदय आन्धोमित और मुजदण्ड विप्रयोत्सास से फइक रहे थे। सातकिले के सिंहद्वार पर उनकी दृष्टि केन्द्रित थी। वहाँ एक तपस्कथित एतिहासिक समारोह हो रहा था। जवाहरलाल नेहरू ऊंची मुजा किए किसे के सिंहद्वार के ऊंचे बगूरे पर हाथ में तिरंगा कटा लिए खड़े थे। मूनिपन जंब गतयोचना नारा क योवन की भांति उनके चरणों में मुका हुआ था।

कलाशी की अब और सह्य नहीं हुआ। एक बार दूर तक उस जन-बोला हल और नरमुण्ड-पूरित नगर-नरिमा के ऊपर अनन्त नक्षत्रों से भरे आकाश के नीचे अमन्य अधकार से व्याप्त विश्व पर उहाने भ्रमण मिथित दृष्टि वाली मंत्रा और सब कुछ यथावस्थित था परन्तु चन्द्रकला नहीं थी। अन्तत उनकी सर्वव्यापिनी दृष्टि सुदूर देश प्रात में इधर उधर घूमकर एक अघेर मरस्थल में एक सत सचल कृष्णकाय क्षत्र बिंदु पर केन्द्रित हुई। उग्होन भपुटी कथित करने देखा और पूरवार की निगूज उठा निमा और हमरु हाथ में तकर मजाया

हम हम हम हम

हमर हमर हम

हमर हमर

हमर हमर

हमर हमर

हम हमर-हमर म

हमर हमर।

नन्ही न हुकार भरी गुंझी भृङ्गीगण दीव पद उमा निद्रा से चौक पर्वी हिमकूट हिल उठा कलाश सत विचलित हो गया दव-दानव नाग दरय, जीव भ्रज भय विस्फारित नेत्रा से एक दूसरे की दसने लगे। म्द्यग-भाव में हमरु-ध्वनि पहुची। मय-बोक में हमरु-ध्वनि पहुची। पाताल-लोच में हमरु-ध्वनि पहुची। भरे!

हुआ क्या? क्यागा मात्र कहा सममय में ही रीं भाव था नहीं विचार कर रहे हैं ?

शुद्धी भङ्गी ने भूमि पर फिर प्रगतिपात्र किया उना स्तपाठ ल्याग
 धल-धल पात्र-ध्या ही उठ पाई नना मारन्वार कुकु हितान श्री हुकार
 मरन सग । परन्तु इनक बजता हा पा

डम-डम डम-डम

डमर-डमर डम

डमर-डमर

डमर डमर

डम-डमर डमर डम

डमर-डमर—

वेग स प्रति वा स ध्यन्त वग म । उमन म धमि-धुक्तिग निरनने
 सग वासु दव कांत सग । मनोर में धाधा उन्वापाठ जस प्रनय भूकम्प
 होन से । जड जङ्गम शहि माम शक्ति माम चिन्तान म ॥

उमा ने नय भक्ति स्त-धुरिग मन्स्मिन वाणी स कहा—दव । दह
 क्या । धाफर रमित सौर परलोक नमत्र-मण्डल मव ध्वस हो जाएग । प्रभा ।
 डम-ना बन्द बात्रिए । सब ध्वस हा जाएग ।

‘मो हो जाए । िदन त्रिगून ऊचा करके नोपग वग स डम-ना करते
 हुए कहा ।

‘जय देव ! जय-जय दव ! जय देवाधिपेव ! जय दव-पेव ! यज्ञा
 भुङ्गी नन्ती गिनिमुग मूषामुग मुबुष्णी गुपकग धतिवत्र वधान हिन्ताल
 गागृङ्ग वयनदम नोहिताग धाति गत-महय र-नु धा जुटे । किसीकी
 कमर में ठावा पूना हुई हापी की टान वपी हुई काई ब्याधधम स्त-प पर
 सरे पा । कोई नग धडग कोई कवाध कोई प्रमम्ब काई निरवतम्ब को
 विकटन्त कोई हुतान्त । कोई मीणा मुदङ्ग मुरत्र निए कोई दूत-रक्ति
 उपधरपुल तिए निर्मित्त स धा जुटे । सवने मंत्रकर दगा

पस्थापर के कनकित्त कनेवर पर विद्यु नोसावनिदा र-विरा घामा
 विगर रही थी । शान्तीबीज जगमगा रहा था और िन्ती के धल-धरीसे
 स्त-प मर ‘हा-हा-हू-हू’ करत कबालू के पत पाटने पान कचरते मोड म मरी
 दीवत-मन्मानी सर-सपाटे की गीरीन सेदियों घोर मिशों को जातते धनवातत्र

दबोघते घूरते घमघमकं देते ठिठोली धीर बूहल करत इधर म उधर गवभरी
 धाम से भा-जा रहे थे । मानो इन्होंने अपने स्वतन्त्र-जीवन धीर शौर्य के मूल्य
 पर यह तपस्वित स्वतन्त्र-साम किया है ।

सबन देखा सबन सोचा यही क्या कलाशी के क्षोभ का विषय है ?

परन्तु कलाशी की दृष्टि सुदूर घूने मरस्थल में प्रलय कृष्ण धम धम
 विण्ड पर केन्द्रित थी । सभी का ध्यान दिल्ली के रंगीन दृश्य से हटकर वहाँ
 पहुँच गया । बहुत ध्यान करने से अब सबने देखा—उस शून्य काली रात से
 अपूर्वमाणे रंगिस्तान में एक लम्बरीव धनुष दशन विगलितयौवन किन्तु
 भद्र-वसन नर जन्तु ऊट पर बठा हिलोने खाता अपनी कमखोर भाँसा से
 धम की सहायता से खेप्टा करके देखता मागहीन माग पर दौडा जा रहा है
 धीर कलाशी की धक दृष्टि उसी मागहीन पर केन्द्रित है । उनकी भ्रुवुटी में
 बलि रेखा स्पष्ट होती जा रही है धीर नासिका रध फूल रहे हैं । स्वास वेग
 से भा रहा है त्रिगूल का हाथ ऊँचा उठता ही जा रहा है बमरु का बखनाक
 तीव्रतम होता जा रहा है ।

उमाञ्च दक्षिण भीत हीकर कहा—धरे ! कहीं त्रिगुली तसीय नेत्रो
 नहीं खोल रहे हैं ? प्रलय हो जाएगा प्रसमय हो म विश्व भस्म हा जाणा
 धममय ही म

गण गणपति सब विचलित हुए । वे निम्पाय उमा का मुह ताकने लगे ।
 उन्हाने कातर कण्ठ से कहा—मात ! कलाशी के धमय का निवारण करो
 उन्हें गिब रूप में अवस्थित करो ।

उमा ने दुग्ध स्निग्ध हाथ कलाशी के धधे पर रखकर कहा—पौन है यह
 धधम मानुष दध ?

सम्बन्धीव ।

क्या किया है उस पातकी ने ? एक नगण्य धरा-मानुषास प्रसित मानुष
 पर देवाधिदेव का ऐसा रोप क्या ?

देखो देखो उमकी स्पर्धा ? उन्होंने उगती म सक्त कर उपर कुष
 लिखाया ।

उमा ने भयभीत होकर देखा—चन्द्रकसा उसकी टोपी म संलम्न थी ।
 फिर उन्हाने सन्निध की घूमिन जटाधा को देखा जो चन्द्रकसा के धभाव से

धूमिल और धीमे हो रही थीं।

उमा भय और शर्म से जड़ हो उस झगड़े रविस्तान के मागहान मार्ग में दोड़त हुए ऊँची धीरे उमक सम्बन्धीव धारोही की धीरे देखने लगीं।

कलाशी का मुँहटी कपिन होती जा रही थी झाँक फडक रहे थे, कलाशी नहीं तृतीय नत्र न सोन दें इसीसे भयमान हो उमा न कहा—वया उसने चन्द्रकला का घुरा लिया है ?

दबो ता तस्कर को ? कलाशी ने फिर हिमघबम उगती उगई।

बिन्दु मलयसोक म विनीको भी इस दबकोप का पता न था। साहौर की धनारकनी परिन क मौन्य और मोहन विनाम से स्पघा-मी करती हुई दीस रही थी। मडकें फशनबन प्राह्व प्राहिकाधों म पनी पडी थी और दुकानें विन्नी फान की ममप्रिया मे। जीवन का कटिनाहवा भी यहाँ परवाह न थी। गहू उँध और बना सा-साकर, पचनद की उवरा भूमि म उत्पन्न रूप थी और रम की मुँहटुन कुराक सा-साकर कहावर और स्वस्य माता पितामा न जो युवक-युवतियों की प्राय क युग की अपन जोडिया उत्पन्न की या वे पच्छिमी हवा क भोंकीं म भूम भूमकर अपने विलास और यौवन का उन्मुक्त प्रदर्शन करत। घूम रही थीं। धरती और भासमान पर वे अपने यौवन और विलास को छाडकर दूसरी किसी वस्तु को देख हा न पा रहा थी। अरित्र और जीवन के साथ मलिनष्ट क्रुद्ध गम्भीर दायित्व और भारी रागमय भावनाए भी हैं इनसे वे बिल्कुल बन्बर या। और उनक पिता पितृष्य मोट और बडोन पट पर, जो बरथा अनुन गहू और बना मान और यथावत् परिवम न करन स हो जाना है कामना विषावती मित्त का अप्रती बट मूँ का सान चडाए, गिर पर बलीम पड का एक घान लापरवाही से लपट चारा औरवाडारी हरामसोटी और प्रापायथा म गट्टर क गूट्टर घडडा क लिए वागडा हयों का जवों म भर फिरन थ जिनका स्वच्छन् उपभाग करन में इन युवक-युवतिया को कोई राक-टाक नहा था।

इहा क साथ घडीका का जगन पहरा और तिर पर उगाए और का बाना धारण लिए बरन सोम कोमल धनस्तान का रता राई बहिषार कर कहा प्रयां और मटके का बगटके साम्बाद स रहे थ।

हृदात् कसागी ने हृत्सीम नेत्र सोल लिया । सहस्र उत्कापाठ का बखराद विद्व पर व्याप्त हो गया । अग्नि-स्फुलिंग की एव ज्योतिष्मती पारा हिमकूट स सीधी बनारसली पर भा पड़ी ।

और देखते ही देखते बनारसली भस्म होन लगी । साहीर म भगन्ड मच गई । घातानियों से मुक्त और विरहासना म मग्न विलास लिप्सा और उसके साधन धाय धाय जलने लगे ।

नन्दी शृंगी शृङ्गी शुकुण्डी गितिमुल्ल सूचीमुल्ल विकरातास लम्बाण भतिसवस घादि रौंगण दौड़ पड़े । गली-गली कूचों-कूचों म उर्होनि माटे लौदल निकम्भे लोमुप कापर जनों की मारकर गिराना प्रारम्भ कर लिया रौद्र नेत्र से विस्फारित अग्निशिसा साहीर को घेरकर धारो धोर स भस्म करती ही रही । उसी अग्नि-समुत् में धिर बिरकर भागते-दौड़ते, हाय-हाय करते म भद्र सब पटापट मरने लगे । विलास की लिप्सा ने वासना को घसीटकर साप से लिया और छोट-छाटकर विलास-मुल्लिकाओं का धपहरण किया । देव दस्य दानव भी पिन पड़े । भोग और भोग के साधन व बटोरने लग । इस पकापेल म दल-सहस्र पवित्र कुमारिकाण निर्दोष पचनद की पुत्रिया लाक्षण हुई मग्न की गई और दूपित हुई । यहाँनें ने जान दे दी बहुताने धारमार्यण किया । बहुत जूझ मरी बहुताँ का क्रूर धान हुआ बहुत बढ हुई बहुताँ ने भस्माय मक्षण किया । सम्पूर्ण पचनद पर ए का शृताय नेत्र घूम गया । दाहक षवाला की परिवि बनाकर हरी मरी पचनद मूभि नगर गाव बस्ती जनपद जन सब भस्म होने लगे । मृत्यु और मृत्य स भी कठिन पातलाघो यत्रलाघो के भवणनीय नारकीय अभिनय हुए ।

महानिष्क्रमण धारम्भ हुआ । लज-लज नर-समूह धर-धर खत मर्माति छोड़ बेधन बने पत्नी-मुत्रा मे हाथ भोए राह के भिक्षारी बने बहिष्कृत हुए । घातानियों से परिचिन धर-धर गेठ-शक्तिहान यहीं रहे मग्न प्राण और जंत्र शरीर का ल गठरी-मुटरी गिर पर लाद कोई पाव प्यादे कोई घोड़ा गन्हा कंट खम्बर बसगाडी पर कोई धपने सगत माथी का पीठ पर चले घनाठ यात्रा को असहाय भिगारियों खानाबदोशों की भाति । महिलाओं के परो मे पाव हो गए, मुकुमारियाँ मूर्च्छित हो गई बालक सिसक सिसकर मरने लगे

वृद्धजन आसुमा से अपना धोता दाड़ा धोने चले—बाखते सगदात गिरते-पडत भूख-प्यासे । एक-ओ नही सग-जस सहस-महस गत-शत ।

उत्पात न उह छिन-भिन्न किया । प्रायात न उहें भाहूत किया रोग ने उहें अल्पायु मृत्यु दी भूख न उहें भाबरू बेचने पर साचार किया । न बूढ़ की लाज रही न कुल बधू का मयाग । न बड़ का बढप्पन रहा न छोटे का दील । प्राणा को देन-नेत जीवन और मृत्यु का सामना करते रात को तारा स भरी खुनी रात म बीच राह सोते दिन जलती धूप म भुनसती आखा से जार-जार आसू बहाने थके हुए, गिरे हुए, घायल हुए परिजनों की घसीटत और कथा पर दोते हुए चलते गए । मरती पर आगीर्वाण के अश्विन्दु न्योछावर करते और जीता पर निरागा की गहरी मास मीचते । प्राण-मुक्तिकामो का उन्हाने अपने हासो वध किया—घर म बन् करके प्राग म फूक लिया और घन पडे अपनी समझ से निन्द होकर सब कुछ छोकर केवल प्राणों का भार लेकर ।

उमा न आखा म आसू भरकर कहा—बहुत हुआ दब बहुत हुआ । अघम दुः मत्य प्राणियो पर दया करो नर-सहार रोका । निष्पाप कुमारिया राज सो रही है स्नेहवती मातामा की गो मूनी हो रही है । नर रक्त की नग्ने पवनद की हरी भरी भूमि को सात बना रही है ।

परन्तु त्रिगुली न वान हस्त ऊचा करके डमरू बाध किया ।

डम डम डम डम

डमर डमर डम

डमर डमर

डमर-डमर

डम डमर डमर डम

डमर डमर ।

घोर फिर हुईनि करक एकवारगो हो त्रिप-वमन किया ।

उमा मूर्छित होकर रहा मिहामन स नाचे गिर गए । रोग्यण विगिन हो न्दिला पर दौड पडे ।

घरर-धम

धरर धम

धम धम

अग्नि-स्फुलिंग सोहवपग मृत्यु मूत्र धमर्ष पाप और ताप का सम्पूर्ण विस्फोट हो गया। माझे माली-कूचा में मठने लगीं। खादनाचौक दमगान हो गया। दुर्गम भराजकता, अघेर और पाप के सब रूप प्रकट हुए। सठकर पूनी हुई क्षाणों पर मक्षिया भिन्नभिन्नाने लगीं। कुत्त सिवार घृष्ट लालकिने के चारों ओर घूमने लग। यमराज जैसे पर सवार होकर मृत्यु के आश्रय का लेखा जोया रखने आ पहुँचे। महामाया ने नासचक्र वेग में घुमाया देव-दानव सब भाकुन भीन और घातबिघ हो गए।

देवराज सब देवीं के परामश मे सनीबरी महामाया के मणिमहल की क्योदिया पर पहुँचे। और मस्तक झुकाकर बोल—देवि देवाधिदेव भूजटि एक अघम तस्कर के दोष से मग्यलोक के लस-लदा मानवों का विध्वंस कर रहे हैं! अय भाप ही सहायता फीजिए देवि भाप ही की मह सृष्टि है। भाप ही यदि इसे विध्वंस करेंगी तो कसे होगा। हथा कर कालचक्र को रोकिए देवि महामाया।

महामाया ने हसकर कहा—एक व्यक्ति के दोष से नही देवराज! सभीका दोष है। उहानि अपना जीवन अपने ही मे कर्त्तित कर लिमा है। वे आप पुजारी रुद्रि के दास और वासना के पुजारी हो गए हैं। कसव्य पय को उहाने त्याग दिया है। वे मानव-कुल-कर्त्तक हैं। मरें वे सब देवाधिदेव की आज्ञा से मैं नवीन सृष्टि रखना करुगी।

एक न नतजानु होकर कहा—प्रसन्नमयी एमा नही है। लोक गतानुगतिक है जन जीवन के रथ चक्र को घुमाकर कसव्य के पय पर साने का भगीरथ प्रयत्न कुछ जन कर रहे हैं। आप काल चक्र को रोकिए देवि।

महामाया न भावकर शान्ती शोक की ओर देखा—गन्दी और घर्वाछनीय भीठ मरी थी। मद्र अमर सब जन भीठ म आ-जा रह थे। सठकों पर खाच वासा बचालुवाला और घटवाला का जमपट था। बुन मधान म मुर्गों के घडे पक रहे थे। लोग घंट-घाट ला रहे थे। बहुत लोग दाराव पी-पीकर शान्तील गीत गा रहे थे। बहुत-से म्त्रियों को देख दख टिटोभी कर रहे थे। बहुत-से मूत्र सौदे कर रहे थे। बहुत-से जेब काट रह थे बचाव पक रहे थे

माय के जन्म की चिराय फन रही थी बहुत लोग सड़े-बूढ़ गन्दे साय सा
रह थ सडका पर गन्दगी और बूझा-बकट का सम्बार लगा था। गाइयों में
नाह पचकम पचका गानी-गलीज मूठ बईमानी दगाबाडी सम्भवस्था
सगीर।

महामाया न नाव भी निकोडकर क्या—मैं महामारी की भेजूगी तिल्ली
के स नन्द्य और मूमर पटापट भरेंगे। ये क्या सम्भना सम्बस्था त्यय गिप्टा
थार और मयम मीसोंगे ही नहीं? इतना साकर भी इतना भोगकर भी।

शोध न महामाया का मुह विवण हो गया।

दवराज न हाय जोडकर कहा—नहीं नहीं देवि अभी धान तिण्ड न
करे देखिए इधर क्या हो रहा है?—वराज न एक ओर उगली उठाई।

महामाया न दवा

एक हिम-धवल दाय्या पर एक हाणुकाय कृष्ण वज्र वज्र चुपचाप मटा
था और दाय्या की पेरे कुछ नखन धाखा न धानू और धनुनय भरे उचकी
भार नाच रह थे। एक लम्ब का क नकेमी छरहरे तरण न कहा

बापू हम सब कुछ करेंगे आप धवन जीवन की रसा कीजिए।

बापू न कहा—भद्र मरा जीवन ता मेर लिए है ही नहीं जिनक लिए
है थ ही हम नष्ट भी कर नकत हैं। परन्तु मैं मानुष-व्यय सह नहीं मक्ता।
नब भाई हैं एक भाई इष कर तो दूसरा क्षमा कर द तनी उसके दीप का
निवारण हो मक्ता है।

एसा हम कर रह हैं बापू! एक बूढ़ मुमवमान न धागे धाकर कहा।

बापू न मुम्बराकर उगहा हाय प्रम स पकड लिया। फिर कहा—कीजिए
धोनाता कीजिए, और जब आप मफज हागे ता मैं उपवास त्याग दूंगा। मैं
घातना हू विन्वगान्ति धनू प्रम हू विन्वास और हात्कि सहाय। इमीके
लिए मैं जीवन धारण किया और मीके लिए मैं जीवन की बलि दूंगा।

महामाया न मुहुहास्य न कहा—यह कौन देवमक्त है दवराज?

‘गाधी हैं प्रनन्मना! य मानवता का रसा करन के लिए धपने प्राणा
का साहनि दे रह हैं और ये इनक माया जवाहर, प्रमा धावा करार,
राजा और परिवन।

‘साधु देवराज साधु ता तुम गांधी की पवर दवापित्व की सवा म

आमो । आज अपराह्न म मैं उनकी आत्मा को निव्य प्रकाश दूगी ।

देवराज ने महामाया को प्रणाम किया और मत्स्यलोक को प्रस्थान किया ।

उसी दिन अपराह्न म नई निली म बिरला भवन के मुक्त उद्यान में जब सत-सहस्र जन भावाल-वृद्ध श्रद्धा आचन म भरे विनयावनत-तपादस्य त्रितीया की क्षीण चञ्चला की भाति उस जीवित सत्त्व का अभिनन्दन कर रहे थे जो उनके बीच हास्य की ज्योत्स्ना बखेरता हुआ हिम घवल पीठ की ओर देव-वन्दना के लिए जा रहा था—तीन बार ज्योति किरण पटी और तीन ही बार महानाट हुआ । उस महानाट म एक स्वरघोष भाग्यगतियों ने सुना के राम !

महामाया न माया विस्तार की ओर नखर भविनखर का हठात् विश्वेद हो गया कीटि कीटि मरयं प्राणी विमूढ हा धाकुल हो उठ । मत्स्य-लोक नयन-नीर स प्रच्छालित हुआ । महामाया के प्रसाद स गांधी हिमकूट पर कलास के हीरक द्वार पर देवराज हृत् के साथ जा पहुँचे । हीरक द्वार खुल गया कुमार कार्तिक घानन्द से नत्य करके झूमने लगे । कौनाग उज्वल आभा से आलोकित दिम्भ-योनि स आपूरित हो गया ।

कसाशी न शुभदृष्टि डालो कहा—कौन है यह हिम घवल शुभ केशी ?
गांधी है दव ।

देवापिदव मुस्करा उठे आपही आप उनका तृतीय नेत्र निमीलित हो गया उच्च हिमकूट पर वासन्ती वायु बहने लगी विविध वर्ण पुष्प क्षिल गए मवरत्न लोभी भ्रमर गुँजने लगे कोपल कवन लगी मलय-मासत का सुखस्पर्श पा कलागी घानन्द विभोर हो गए । बादलो को छिन्न भिन्न करती हुई उमा रत्नशृंगार किए भा उपस्थित हुए ।

कसाशी ने घीरे स त्रिशूल नीच रख दिया । डमरू घपने स्वान पर भवस्थित हुआ । शुद्ध गिव रूप होकर धूर्जटि न कहा

हे कायपुरय तू जयो हो । आ मेरे शीपस्थान पर आसीन रह ओर वही से अनन्त विन्व पर जब तक भूलाक म काल का आयु-दण्ड है तू ही चञ्चला के स्थान पर शीतल स्निग्ध शुभ दिव ज्योत्स्ना की मरयं प्राणिया पर वर्षा करता रह ! मरय प्राणिया पर वर्षा करता रह !

मुखविर

वह युवक किसी प्रेम में एक कम्पोजिबल के आदलत गरीब सीधा और दयालु ।
 दमन में दुःखा-दयना भ्रमट-भ्रमम्भना । बनवीन में भय, बंदन में
 लारवह । निली की बननीकरा के उद्घाटन का उन्तस तो भरणय विसर
 के इन्धाम में एक मन्त्ररूप बल है—दरन्तु इन दुःखाना को शापन किम्बने
 जाना ना नहीं । उमके लयिन्प ने भय और प्रनोभना ही को नहीं बड़ी से बड़ी
 ईशा को भी अब कर पिदा था । कशानी बहुत सरस बन परी है ।

एक आईम बय का मुन्तर-मुगन्ति युवक सिफ एक स्वच्छ खहर की धोती
 पहन घाम पर पुन्नों के बस धौधा पडा था और उसका पीठ पर एक गौरवण
 मुकुमार बालन जिसकी धायु पांश बय की होगी सवार था । बालक युवक के
 कान पकठवर उम घोडा बनाए हुए था और तात मारकर अपन घोडे को
 चलान का प्रयत्न कर रहा था । पर घोडा वहीं मडा खडा था ।

गरद श्शु का मुन्तर प्रमान था । मुनहचे धून चारों ओर फली हुई थी ।
 बालक और युवक दोनों मानी समारभर के प्राणिया की अपेणा सर्वाधिक
 प्रसन्न थे ।

गाव छोटा-सा था और सामने हरे नर शेतसहस्य रहे थे । उमुक वायु
 इन प्रष्ट विनोन्पियों से सानन्त विनान्त कर रही थी । धारे-धारे एक और दुबला
 पतला युवक वहीं आ खडा हुआ । वह इन दोनों से कुछ दूर एक कृष के नीचे खडा
 इनका वेस देखने मया । घोड़े का अभिनय करनेवाने युवक न उस दखानहीं ।
 वह जार से हम और बदन हिना-हितकर सवार का गिराने की सेष्टा कर
 रहा था । हनान् बालक का ध्यान निवट सडे उस प्रागन्तुक की ओर चला गया ।
 उसका उत्सास प्रवाह रच गया । उसने कहा—'बाबू' ।

युवक ने घास उटाकर देसा और चौक उठा । फिर उसने बच्चे को धारे
 से पाठ से उतारकर उस पर चले जान का आदेश किया और सबउ में युवक
 को दिवट मुत्ताकर पूछा—'सब टीक है ?

'नहीं ।

पर निकट भा गया और बालक न चिल्लाकर कहा—छोटे चाचा, देखो यह मेरा नया बुरता !

'यह वहाँ पाया र पाजी इसे ता मैं पहनूंगा। युवक न बच्च को गोद में उठा लिया। इसके बाद तीनों प्रमी मिलकर एक साथ भाजन करने बठ।

युवक का नाम और व्यवसाय बताने की आवश्यकता नहीं। उसने भिन्न का नाम था हरसरनदास। इसकी आयु थी लगभग पत्तीस वर्ष। एकाध बाल पकने लगा था शरीर का दुबला-पतला महा-सा भादमी था। चाचा इसी व्यक्ति का एकमात्र पुत्र था। बच्चे की माता हरसरनदास की दूसरी पत्नी थी वह सुन्दरी पुस्त और अत्यन्त विनोदी स्वभाव की स्त्री थी। युवक न इसकी जाति का था न विरादरी का। वह एक अनाथ बालक के तौर पर इस गाव में भ्रष्टाचर्या से भया और मही बड़ा हुआ था। बीच के मात माठ वर्ष उमने दिल्ली में ध्यतीत किए थे। इन सात माठ वर्षों का उसका गोपनीय इतिहास कोई नहीं जानता। लोग तरह-तरह के अज्ञान लगाया करते थे। कोई कहता था—वह कालेज तक की पढाई पास कर चुका। कोई कहता वह बड़ा कारवागी हो गया है। पर युवक सिवा दस पाँच दिनों के लिए बीच-बीच में गरहादिर हा जाने के अपन परिवार के सम्बन्ध में कुछ प्रमाण नहीं रखता था। भलबत्ता वह गाव भर में प्रिय और आरणीय अव्य माना जाता था। वह सबकी सब प्रकार की सेवा करता। उसका चरित्र निमल और उच्च था। उसकी भाषा सयत विनम्र और स्वभाव अत्यन्त सरल था। गाववाले उस मानते प्यार करते और आश्चर्य उसीस सलाह मसबिरा भी करते थे।

हरसरन पर उसकी योग्यता दग भक्ति त्याग और चरित्र का काफी प्रभाव था। हरसरन के बच्च और इन युवक का प्राण तो एक ही था। वह और उसकी स्त्री दोनों ही युवक की मानो पूजा करते थे। युवक का घर नहीं, कुटुम्ब नहीं सगे-सम्बन्धी नहीं वह हरसरन के ही घर रहता बही खाता सोता था। मानो वह उसी घर का ध्यवित है। गरीब हरसरन तन मन से युवक के सुख-दुख का ध्याल रखता था।

भोजन के बाद युवक ने कहा

देखो भाई हरसरन आज मेरा सहर जाने का इरादा है।

'क्यों ?

'एक नौकरी लग रही है अब शायद वहाँ रहना हो ।

'कितने की नौकरी है ?

'पचास-साठ तो मिल ही जाएंगे ।'

'बस इतने ही ?

'नौकरी पाराम की भी तो है ।

• क्या सरकारी है ?

'राम राम ! क्या मैं सरकारी नौकरी करूँगा ।

'वही तो फिर चलो हम भी घहर चलो वहाँ कुछ काम-बन्धा देख भान लेंगे ।

'तुम जता वहाँ क्या बन्धा करोगे ?

'हम तुम्हें, जरा भी कष्ट न दोंगे । अपने लिए कोई काम ढूँढ लेंगे । क्या कोई नौकरी नहीं मिल जाएगी ?

नहीं ऐसा न होना । तुम भ्रष्ट में पड़ जाओगे । तुम यहीं मौज करो, मैं बराबर घाटा रूँगा ।

परन्तु हरसरलगास की पत्नी ने धाकर धाग्रह मरे स्वर में कहा—वहाँ कहां साओगे ? वहाँ रहोगे ? फिर सल्लू तुम्हारे बिना वहाँ कैसे रहेगा ?

बहुत बाद विवाद के बाद दूसरे दिन चारों प्राणियों ने कूब कर लिया और तिल्ली के एब मुहल्ले में साबारण-सा मकान किराये पर लेकर रहने लगे । हरसरलगास सिमी बपड़े की दुकान में बीस रुपये मासिक का नौकर हो गया । यहां रहते इन लोगों को दो मास ब्यतीठ हो गए । हम नहीं कह सकते कि युवक ने कुछ वेतन साकर हरसरल के हाथ पर धरया नहीं । हां इतना हम जानते हैं कि अब भी हरसरल ही युवक को छिनाता और अपने घर में रखता है ।

घापी रात ब्यतीठ हो रही थी । चारों ओर धंधेध धाया हुआ था थोड़ी बर्षा हो जाने के कारण ठण्णी हुआ बन रही थी । आज युवक घापी तक नहीं आया था बन्धा उसकी राह देखते-देखते सो गया था और दोनों स्त्री-मुहलब बिना साए युवक की प्रतीशा कर रहे थे । इमर कई तिनों से युवक का सम्य

जब वृत्त-रचना पर है वह एक जाहज़ी रत्न है। वह भाँका इतनीठा देव है उसी उन्नत प्रकृत धर्म की है। इन सोम बुद्ध भगवत के प्रयोग रहे व कि एक वन प्लट बना और एक वीर इस देवा को प्राप्त हुआ। इसके शक्तों की रक्षा समझ नहीं दीवता। किसी बाहर को वो हज़ार बना समझे।

‘क्या करन चाहिए न बतलाओ। हरसरल ने बख़री से कहा।

इन्ने में ही मुक्ति मुक्क ने जोर-जोर से साव लेनी गुरू की। एक बुझना—धर बुद्ध नहीं हो सकना भाइयो हमार यह वीर सापी बाँर है देखो हूबकिन् धाने नहीं।—वह मुक्क दुटनों के बल बठकर रोपी। प्लो पर जिर रख बरक की भाँति फूट-भूट कर रोने लगा। सभी के ने मीन दे। इधर बरी न तीन बजाए और उपर मुक्क का प्राण-मक्क बना !!!

एक मुक्क न कहा—उत्तर, धर रने से क्या होगा ? सभी तीन बर है सभी बहूत जान करना है। साहस कीजिए।

‘धर बन करना होना हरसरल ने कहा।

‘इसमें बल साध को हटाना है साह-बिना तो समझ ही नहीं।’

‘धर कहा जिन जाए ?’

‘जही होना पर अनुनायी तक साध जाएगी कसे ?’

‘साध को बल में बर करना होगा।

‘इस समय बल लेकर जाता भी निरार नहीं।

हरसरल बोला—यह जान जिन में होगा और वह में कर सुना। जिन में कोई भी न देख पाएगा। धान लोग धर मुक्ति स्थानों में बने जाएँ।

‘धर और मुक्ति स्थान इस समय नहीं है। बल सम्पा तक हमें नहीं एना होगा। मेरे इन मित्रों को सम्पा की कीर्ति में भाषण देना है।

‘बाब तो समाबन्दी है भाषण कसे होगा ?’

‘समा धरान होनी और गोविदा भी धरान बरेंगी।

‘पुम्हें एक काम करना होगा हरसरल नाई।

‘कहो।

‘डुबह ही भाभी को बुद्ध जिन के लिए भाषके भजना होगा।’

‘मह हो जाएगा। उसके साथ असबाब में मैं साथ को भी बनाया ही ले जाऊंगा।

‘घात और कल निमर हम यहीं रहेंगे। कोई गर भाभी न भाने पाएगा हमारे साथ बहुत-सा सामान भी होगा।

मैं उस कमरे को छाती किए देता हू।

इसके बाद साथ की उपयुक्त व्यवस्था की गई और छ बजत-बजते तीनों युवक घर से बाहर निकले। इसके आगे घण्टे बाद ही हरसरन एक बड़ा-सा दूध और कुछ सामान तागे पर लाए स्त्री और पुत्रसहित एक घर को चले गये।

‘तुम्हारा नाम क्या है ?

हरसरन दास।

‘इसी मकान में रहते हो ?

‘जी हाँ।

‘क्या काम करते हो ?

‘एक छम में नौकर हू।

‘तुम्हारे साथ और कौन है ?

‘मैं अकेला हू। मेरी स्त्री अपने पिता के घर गई है।

‘सुन तुमसे कुछ बातें करनी हैं।

कहिए।

‘तुम्हारे दोस्त कहा है जो तुम्हारे साथ रहते हैं अन्नी वही गोरे-गोरे बाबू। अन्नी बाग यह है कि मैं तुम्हारे उन दोस्त का सहपाठी हू। वे और मैं साहीर में बी. ए. बी० आने में एक साथ पढ़े हैं। मैं दिल्ली आया था, आचा—मिलता चनु।

हरसरन को विश्वास नहीं हुआ। उसने अन्यमनस्क होकर कहा—‘मुझे कुछ भी मासूम नहीं व कहां है।

‘यह ठा बड़े ता-तुव की बात है क्या उनके जल्दी सौटने की उम्मीद भी नहीं है ?

‘नहीं’ इतना कहकर हरसरनदास उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—‘सुन

‘घरे पार सिगरेट बीड़ी बीघो, सो !’

हरसरन का बही पवाब था । अब एक ने खोर से ठोकर लगाकर कहा—
सासे बुरा तेरा होगा फांसी पर सब पड़ेगा सड़ा हो ।—दूसरे कांस्टेबिल ने
उसकी गदन पकड़कर धनायास ही उसे उठा लिया और कहा—किसका बुरा
हो ? सीपा बँठ और पवाब दे कि पार लोग वहाँ-वहाँ हैं और कौन
कौन है ?

हरसरन चुपचाप बैठ गया । दोनों कांस्टेबिलों ने उसे भरपूर मार दी ।
इस मार उसने अपना वह ‘पेटेस्ट’ शब्द भी उच्चारण करना त्याग दिया । वह
निर्जीव मांस के लोपड़े की भाँति लमाम मार चुपचाप सह गया । इसके
बाद उसके दोनों हाथ भारपाई के नीचे दबाकर दोनों कांस्टेबिल उसपर बैठ
गए और भाँति भाँति के प्रन्न पूछने लगे । वेदना से उसकी आँसू निकलने लगीं
प्यास से कण्ठ सन्पटा गया । धीरे-धीरे छाय दिन व्यतीत हो गया । मुख प्यास
नींद और वेदना सभी ने उसके साधारण स्तु शरीर पर पूरा वेग से आक्रमण
किया । पर क्या शरक की आत्मा उसपर भवतीएँ हुई या कोई पितामह उसे
सिद्ध या वह निर्दोष निर्विकार उस वेदना को बिना एक बार उफ किए सहन
कर रहा था । जब नींद के मँडि पाठे वे दोनों राक्षस उसके कान या गदन
पकड़कर भ्रुकभ्रोर दासते उसके नासुनों में पिन चुभोते उसके मलद्वार में
सकटिया ठूसते और साधारण मार की सी चर्चा करने की आवश्यकता ही
नहीं ।

एक रात भी बीड़ी और एक दिन भी । कांस्टेबिल बदलते गए । जो छाठे
वे सोड़ा चाय ब्रक मिटाई उठाते और घट्टहास व साथ उनका उपहास
करते ।

अन्ततः पुत्रिष हार गई । उसे जो कुछ भी प्रमाण मिल सके उन्हें ही
लेकर केस का खानान कर दिया । इक्कीस दिन तक गयानक यत्रणा और
पीडा को भोगकर उस शरीर नरक के समान हवानात से वह अघमूर्च्छिता
वस्था में बाहर निकाला गया । उसका शरीर गिरा पड़ता था पर उसे पकड़कर
मोटर सारी में बठाया गया और वह बिला-मविस्टुट के सामने पेश किया गया ।
मार से उसका हौठ सूब गया था और आँसू के पास थाव हो गया था । छापी
और पीठ पर मार के अनमिन्न निशान और सूजन थी । दो कांस्टेबिलों ने उसे

घसीटकर मजिस्ट्रेट के सामने खड़ा किया।

मजिस्ट्रेट ने पूछा—तुम्हारा नाम ?

‘घरे तुम्हारा नाम क्या है ?

‘क्या यह गुगा है मा धोमार है ? मजिस्ट्रेट ने इन्स्पेक्टर से पूछा।

‘हज़ूर, यह पूरा मन्वार और मगरा है।

मजिस्ट्रेट ने उसे फिर पूछा

‘तुम्हें कुछ कहना है कुछ सिनायत है ?

हरसरन ने एक बार मजिस्ट्रेट की धार सिर उठाकर देखा और चिल्ला कर कहा—बुरा हो तुम्हारा।

मजिस्ट्रेट ने गभीरतापूर्वक कुछ सिल्ला और उसे जेल में भज्र देने की धाना प्रदान की। हरसरन एक नरक से दूसरे नरक में गया।

‘टिक टिक टिक !

टिक टिक टिक !

हरसरन ने कालकोठरी में पड़े-पड़े सुना—बगल की किसी कोठरी से शब्द आ रहा है।

‘टिक टिक टिक !

‘टिक टिक टिक !

वह उत्तर बठ गया। कालकोठरी में बन्द हुए उस धान सातवां दिन था इस बीच में उसे निमर में बवल एक बार मनुष्य की मूलन दखन को मिलता है जब वह चौबानि के लिए बास मिनट के लिए कोठरी से बाहर निवाना जाता है। पर मनुष्य का कठ-स्वर उसन सुना ही नहीं। यह शब्द धान से मुनकर हरसरन ने भी उगती से ठोका

‘टिक टिक टिक !

उपर से आवाज़ आई—क्या तुम भी कोई दुखिया बनी हो ?

हरसरन के मुख पर उसके स्वाभाविक शब्द आए होंठ फडके पर उन्हें रोकर दखने कहा—हां और तुन ?

मैं भी, मुझे खड़ी बेबी दी गई है। क्या तुम किसी राजनीतिक मामले में हो ?

✓ >

हां और तुम ?

मैं भी तुम्हारा नम्बर ।

तीस, और तुम्हारा ?

भट्टारह क्या तुम्हें बाहर का कुछ समाचार मिलता है ?

नहीं और तम्हें ?

‘मुझे मिलता है मैंने घालाजी से काम लिया है तुम क्या से इस कोठी में हो ?

नौ दिन से और तुम ?

मुझे बीया दिन है चुप कोई आठा है ।

तुम्हारा भला हो ।

हरसरन चुप हा गया ।

भापी रात बीत गई । जेल में सन्नाटा था हरसरन मखरों और छुमों एक सील और दुगाय से तग होकर छटपटा रहा था । शब्द हुआ टिक टिक टिक ।

तुम्हारा नम्बर ?

भट्टारह और तुम्हारा ?

‘तीस क्या अभी तक जागते हो ?

हां कोई नहीं खबर है ?

मुझ तुम्हारा नाम मालूम हो गया है क्या तुम्हें पीटा भी जा रहा है ?

हां !

कल जेल-सुपरिण्टेण्डेंट जेल का मुझायना करेंगे उनसे शिकायत करना शिकायत करना मैं अपमान समझता हू ।

फिर छुपचाप क्या तक सहोगे ?

जब तक वे बचट देंगे ।

एक और खबर है ।

क्या ?

तुम्हारी स्त्री आई है ।

'हैं ? क्या ?

'नन । वह तुम्हें जमानत पर छुड़ाने की चिन्ता में है ।

'सच ?

'हो सुनो ।

'कहो ।

मुताजात करोगे

बिसस ?

'अपनी स्त्री स ।

'कसे होगी ?

मैं करा दूंगा ।

'तुम ?

'अस्तर-जेल को मैन चांदी के टुकड़ों से बरा में कर लिया है ।

'छो एम थ तो जल क्यों धाए ?

सब लोग तुम्हारी तरह सोहे के कसे बनेंगे दोस्त ?

मैं मुताजात नहीं करूंगा ।

सुनो ।

'कहो ।

नन विनायत जरूर करना ।

'हरगिज नहीं ।

इसके बाद हरसरन न कहा—सुनो ।

उपर से जवाब नहीं आया । हरसरन ने सकेत किया—टिक-टिक-टिक ।

उसका भी उत्तर नहीं आया । वह धुपचाप धाकर फिर कमल पर पड़ गया ।

ग्नि निकस आया । जेल-बाइर गन्त सगाकर पसा गया ।

'टिक टिक टिक !

हरसरन न दोहराए धा किया—टिक टिक टिक !

धट्टाट्ट ?

'हां क्या तीम ?

'हां ।

क्या तुम्हें बोर्ड नई मूबना मिननी है ?

नहीं तुमन कुछ मुना है ?

बहुत कुछ मगर साहस न खोना ।

कहो मैं मुनने को तयार हू ।

तुम्हारी स्त्री ने सब बता लिया है ।

क्या ???

उत्सहित न हो—क्या तुम उस भेद को नहीं जानते ?

कौन-सा भेद ?

मैं उस भेद की बात नहीं कहूँ जिस मामले में हम यहाँ आए हैं ।

जिस भेद की बात कहते हो ? बालते क्या नहीं ?

तुम्हारी स्त्री और दोस्त के गुप्त प्रेम का भेद ।

'दुष्ट कुत्ता ।

गाली बकने से क्या होगा ? बहुत-सी बातें मालूम हुई हैं ।

कौन बातें ?

एक तुम्हारे बच्चे की बात ।

उसकी क्या बात मालूम हुई ?

उसे तुम्हारा दोस्त क्यों इतना प्यार करता है जानत हो ?

क्यों नहीं वह उसे अपने बच्चे के समान ही समझता है ।

'समझता नहीं वह उसीका बच्चा है ।

झूठा बेईमान पाजी ! दूर हो । मैं तुमसे बात न करूँगा ।

फिर सब बातें कैसे जानोगे मैंने कहा था भापे से बाहर न होना ।

'तुम घूत भूटे और बेईमान हो ।

'क्या सबूत दसोगे ?

तुम्हारा घुरा हो । दूर हो तुम ।

हरमरन दीवार के पास स हट आया । कई बार खट-खट हुई पर व्यथ ।
रमरन ने फिर उपर ध्यान नहीं दिया । उसके बदन में धाग भी लग गई । हे
'वर ! क्या यह मय है ? वह सीधा साग युवक तेज और त्याग का मूर्तिमान
भवतार पवित्र जीवन और तपस्या की मूर्ति क्या ऐसा बुधम करेगा ? मैंने
अपनी जायदाद मिट्टी में मिलाई घर-द्वार धावा उसके लिए अपना नौकरी की
इसलिए कि मैं उसके त्याग पर देण प्रेम पर मोहित हूँ ? वह देवदूत की भांति

बोसता है। स्वर्गीय प्रभा उसके नेत्रों में है। मैं मूख क्या उसके लिए इतना भी न करता। वह देण की सबा में सलमन है मैंने अपने को उसकी सेवा में सलमन किया। वह देण के लिए सबस्व त्याग चुका था और मैंने उसके लिए सबस्व त्यागा। सो क्या इसीलिए ? नहीं नहीं ऐसी बातें साचना भी पाप है। सप देवता हो सकता है पर देवता सप नहीं हो सकता। उसका पुत्र ? राम राम क्या मेरी स्त्री व्यभिचारिणी है ? व्यभिचारिणी का भावें एसी होती हैं ? व्यभिचारिणी क्या इस तरह हसा करती है ? एसी तत्पर और निःशकोच होती है ? हे ईश्वर ! मैं क्या सोच रहा हूँ। आज मैंने समझा कि मेरी आत्मा कितनी पापी है। हाँ यह हो सकता है कि वह मुझसे हजार गुना अधिक उस प्यार करती हो। परन्तु वह इस योग्य है। पर वह प्यार क्या अपवित्र ही हो सकता है ? उसका पुत्र ? उसका पुत्र ? हरसरन ने अपने तिर में पाब-नाउ घुसे मारे। उसने कपड़े फाट डाले और वह भूमि पर सौटन और तड़फने लगा। इसके बाद वह सीवार के पास गया। टिक टिक-टिक गण किया। एक बार, दो बार, तीन बार, पर कुछ भी उत्तर नहीं आया। वह तड़पती हुई मछली की भाँति भूमि में पड़ा झिलझला रहा। उसने आघातों से शरीर को क्षण विभ्रत कर लिया। इसी भाँति ममवेदना में उसकी शक्ति व्यतीत हुई। जिन आघात और गदा। खाना-पीना भी उसने छोड़ दिया। वह सड़कों बार दावार के पास गया टिक टिक किया पर कुछ भी उत्तर न प्राप्त हुआ। अब वह सीवार से फिर टकराने और जोर जोर से चिन्सान लगा। तीन जिन बोठ गए। हरसरन घुपघाप घरती पर पड़ा था। धम्म हुआ—टिक-टिक-टिक !

मूखाभ्याता हरसरन सिंह की भाँति झपटा। उसने तनिक उत्तजित स्वर से कहा

‘तुम हो घटारह नम्बर ?’

‘हां।’

‘ईश्वर का मन्ववाद है तुम यहाँ हो। क्या तुम्हें भी कोई सजा मिली ?’

‘नहीं तुम कहाँ थे ?’

‘शरी बेरी पर सटका दिया गया था।’

‘क्यों ?’

‘तुमसे बातें करन और सबर मगाने के अनुरोध में।’

'पर तुम कूठे हो।

'भ्रमागे भाई मासूम हाता है तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।

तब सबूत दो।

'सबूत पीछे उना पहले नई खबर सुन लो।

'नई खबर क्या है ?

वे दोनों आज रात पकड़े गए हैं।

कौन दोनों ?

तुम्हारी स्त्री और मित्र।

'फिर वही बात ? दुष्ट !

वे दोनों रात को एक ही कमरे में थे।

'तुम्हारा नाम ही तुम गारत हो जाओ।

'तुम्हारी स्त्री ने पुलिस को संकेत करने मुला लिया।

'झूठे बेईमान।

'वह पुलिस से मिथ गई है। पुलिस ने उसे बन्दी रखम दी है।

नीच पाजी धूप रहू।

'भ्रमागे भाई ! शोक है तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। तुम्हें बन्दी मर्मवेदना हो रही है।

सूभर मैं तुम्हें देखते ही जान से मार दानूगा।

कुछ चाहते हो ?

'कुछ नहीं।

'कुछ मांगना चाहते हो ?

'कुछ नहीं।

'अब धायद हमारी मुलाकात नहीं होगी।

क्यों ?

मैं आज ही रात को दूसरी जगह भेज दिया जाऊंगा, ऐसा प्रतीत होता है।

और सबूत ?

'सबूत देखना चाहते हो ?

'नहीं कदापि नहीं जाओ मुलाकात की कुछ जरूरत नहीं है।

हरसरन वहाँ से हट भाग। दो-तीन बार टिक-टिक रात हुआ। हरसरन

ने बहा कान नहीं दिया। वह दोनों हाथों पर सिर रखकर भींचे मुह पटा रहा। वह कुछ सोच रहा था। उसके अस्तिष्क में सारे शरीर का खून इकट्ठा हो गया था। वह मानो जल की छत आकाश स्वर्ग सूय-भङ्गल ब्रह्माण्ड सभी को भेदन करके ऊंचा और ऊंचा उड़ा चला जा रहा था। दिन निकल आया। पर हर सरन उती दशा में पड़ा रहा। उसने कपड़े फट गए थे और शरीर दंत विसत हो गया था। उसन तीन दिन से कुछ खाया न था।

वह दिन भर योंही पड़ा रहा। बीस म डाक्टर और जेल के अधिकारी उसे देखने आए। वह किसीसे कुछ नहीं बोला। धीरे-धीरे रात हुई और वह क्रम-गम्भीर होती गई। फिर ध्वनि आई—टिक टिक टिक!

हरसरन झपटकर बहा पहुँचा।

'तुम झूठे सवार दुष्ट !

भाह क्या तुम्हारा सिर विलुप्त फिर गया है शान्त हो आई बहुत बुरी खबर है क्या तुम्हें दसन डाक्टर नहीं आया ?

कौन-सी खबर है कहो कहो !

वह कहने योग्य नहीं।

कह धरे 'दुष्ट ! कह।

मैं तुम्हारी गालियों का बुरा नहीं मानूँगा। ईश्वर तुम्हें पान्ति दे क्या तुम उस खबर को सुन सकते हो।

कह, धरे पामी कह।

'उसने स्वीकार कर लिया !

चिसने ?

'तुम्हारे मित्र ने।

'क्या ?

'कि वह तुम्हारी पत्नी का चार है और वह उसकी रखेसी है।

'उसका नाम हो भव बुप रही।

'मुनो एक बात कहता हूँ।

कुछ कहने की जरूरत नहीं है भागो यहाँ से।

मुनो भाई मैंने एक निश्चय किया है, भय मैं नहीं सहन कर सकता मैं सभी चला जाऊँगा। फिर भय मुलाकात नहीं होगी।

तुम लोग क्या चाहते हो ?

हम लोग तुम्हारा बयान लेना चाहते हैं ।

क्या तुम उसे फासी दे दोगे ?

यह बात तो कानून के हाथ में है ।

'उसे फासी न दो ।

तुम जो कुछ जानत हो सब सच-सच बयान पर दा ।

'मुझ क्या मिलेगा ?

'धमा तुम्हें धमा कर दिया जाएगा ।

हरसरन के हाँठों पर हसी आई । उसने कहा—मरे पास एक सबूत है उससे सब काम सिद्ध हो जाएगे । मुझ घर ले चलो । मैं तुम्हें एक एमी चीज दिखाऊंगा जो कभी किसीने न देखी होगी ।

अधिकारीगण ने परामर्श किया । पुलिस का दल तयार किया गया । सभी उच्चाधिकारी साथ चले । मोट्ले में सन्नाह छा गया । लोग भीत चकित दृष्टि से इस प्रबल दल को देखने लगे । घर में ताना लगा था । उसे तोड़ डाला गया । घर के भीतर जाकर हरसरन पागल की भाँति जल्दी-जल्दी घर में घूमने लगा । एक बार वह पलक के ऊपर फेंककर हसने लगा । दूसरी बार उसने भलमारी की दरवाज़ खोलकर उसमें से एक बटिया बोट निकाल कर पहन लिया पर तत्काल ही उसे फेंक दिया ।

अधिकारी सतक होकर उसकी चेष्टा देख रहे थे । पर किसीने भी उसकी चेष्टा में कोई बाधा नहीं दी । वह इधर उधर घूम घूमकर हंसता कभी बड़बडाता और कभी इधर कौ चीज़ें उधर फेंकता रहा । इसके बाद वह अपनी पत्नी और पुत्र की तस्वीर के सामने जा खड़ा हुआ । इस बार वह फूट-फूटकर रोने लगा । उसने तस्वीर को छाती से लगा लिया । वह बहुत रोया ।

अन्त में एक अधिकारी ने कहा—जिम काम के लिए भाए हो उसका भी तो ब्याप्त रखो । वह सबूत ?

'हाँ वह सबूत ! उसने तस्वीर दूर फेंक दी और बड़ दृष्टि से बड़ी देर तक अधिकारी को घूरता और बड़बडाता रहा । फिर उसने कहा—अच्छी बात है तब तुम उस फासी दोगे ? भव मैं तुम्हें एसा सबूत देता हूँ जो किसी में नहीं दिया होगा । मैं भव मुसबिर हूँ ।

इसके बाद उसने एक झलकारी का ताला तोड़ डाला और उसमें से एक छोटी-सी सन्दूकची निकाली। अधिकारी सनक हो गए। क्या आश्चर्य है पिस्तौल या बम से हमला कर दे। बक्स को तोड़कर हरसरन ने एक छोटी सी घोंघी निकाली और उस अधिकारिया को दिखाते हुए कहा

‘यह बड़ा भारी सबूत है। मैं अभी जिंदा दूंगा कि इसमें क्या परामात है। तुम लोग अपनी अपनी जगह पर खड़े रहो। इतना कहकर देखते ही देखते उसने घोंघी को मुह में उड़ेल लिया और घोंघी फेंक दी।

अधिकारीगण घब समझ और एक दूसरे का मुह ताकने लगे। हरसरन हसन लगा। हसते-हसते उसने कहा—बुरा ही तुम्हारा तुम क्या मुझ यह विश्वास दिवाना चाहते थे कि उसने मरी स्त्री को कुमागगामिनी बनाया? यह असम्भव है। पर यदि उसने ऐसा किया भी हो तो मैं उस क्षमा करता हूँ। वह देग का प्यारा पुत्र है। मैंने सब कुछ उसे दिया तो स्त्री-पुत्र भी सही।—‘सने बा’ उसका सर्वांग कांपन लगा और वह वहीं धरती पर गिर पड़ा। अभी तक उसे हींग बाकी था। एक अधिकारी ने आगे बढ़कर कहा—यह तुमने क्या किया?

प्रायश्चित्त! क्योंकि बस रात से मैं उसे विश्वासघाती समझन लगा था। जाओ तुम्हारा बुरा ही।

इसने कुछ क्षण बाद हा उसके प्राण पमेरू उड़ गए।

मुहव्वत

राजा-रईसों के जीवन बितने बिलासमय, वातनापूष और भरपूर होने हैं और बहुधा वे खरनाक फटनाओं के शिकार हो जाते हैं—इसका एक तथ्यपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कहानी में है। आचार्य का राजा-रजवारी से गहरा सम्पर्क रहा है मत इस कहानी में उनकी अनुमति की स्पष्ट छाप है।

राजा साहब की भाखें हंस रही थी। उन्ही भाखों से उन्होंने मेरी ओर देखा मुस्कराए और मसनद पर उठग बटकर मेरी ओर झुककर धीमे स्वर में कहा—देखी मुद्रबधत !—मतलब न समझ सवन पर मैंने भाखों में ही प्रश्न किया। राजा साहब ने चार बीठा पान मुह में ठूसते हुए कहा—प्राप भाखवाने हैं देखिए साहब।

राजा साहब बहुत खुश थे। रियासती भदव और शिष्टाचार वातावरण में भर रहा था। कुवर साहब भी एक कोने में सजे धजे बठे थे। जरबफकी घेर बानी मिर पर मधीस उसपर हीरो की कलगी गले में पन्ने का भारी बण्डा। मगर भाखें नीचे झुकी हुईं। राजा साहब की एक एक बात पर कहकहे पड़ रहे थे बीच-बीच में मुस्करा बी साहबा भी फिर रा बस देती थीं। जिसपर कहकहा तो साजिमी था मगर क्या मजान कि कुवर की मूछों का बाल भी मुस्करा जाए। महफिल में बैठना उनके लिए दरबारी भदव के लिए जितना जरूरी था उससे अधिक महाराज के भदव से भाखें नीची रखना भी जरूरी था। सरगियों की उगलियाँ चिसवायी भर रही थी और तबला तबपकर हाय-हाय कर रहा था। मुझ यह सब १८वीं सताब्दी का सामन्तगाही दृश्य बिस्फुल ही भोंड़ा जब रहा था। सगीत के नाम पर यह केवल पीछ थी और नुरप के नाम पर उछल बूद। मगर सोग थे कि छिन छिन पर बाह-बाह के मारे लगा रहे थे। कह कहो की धूम मची थी और बेश्याओं पर बाहवाही के साथ इनाम न्यौछाबजे की वर्षा हो रही थी। मुस्कराना तो मुझे भी पड रहा था। क्या बरुं राजा साहब का इतना लिहाज तो जरूरी था। मगर बाह' तो मेरे फूटे मुह से एक बार भी नहीं निकलती थी। भब जो राजा साहब न मेरी भाखों को एक चुनीती

दो तो मैं चाने स धूर धूरकर झूमकर की तरह इधर-उधर देखते लगा । राजा आन्व मेरी बेवकूफी पर खम खाकर मुस्कराकर रह गए ।

सेबिन कुछ साण बाद ही राजा साहब न हुकम दिया—मुहम्बत खड़ी हो ।— और तब मैं मुहम्बत को देखा कुछ समझा भी । कम से कम राजा साहब का जिस तो समझ ही गया । लम्बा छरहरा नपातुला बदन शमकत सान का रंग, बड़ी-बड़ा मम्मरी घाँसे चाँगी का सा साफ माथा भीरे-सी गजनभरी लट्टे हुए के बाद के समान पतला भीहँ और बिल्कुल सोनह भगुल की कमर । पर की ठोकर दी तो घुघरू बजे छम फिर ठोकरें दीं फिर दी ठोकरों की झड़ी मगाई घुघरू बजे छम छम छमाछम छमाछम । छम छमाछम । और फिर देखा वह सोनह भगुलवासी कमर बल पाती इठनाती नागिन-सा सह राती और समपर तरता वह झूना योवन । मम्मरा घाँसे तिरछी भीहँ । यहीं पर बम नहीं । कोयल की कुहू । पषम की तान ।

मत्तन पर झुनकर मैं राजा साहब के बान के पास मुह से जाकर रहा— देखा महाराज अब देखा ।

राजा साहब ने भीहँ तररकर कहा—अब क्या देखा ? छाक । अब तो पुनिये जुलाहे सब दग चुके । सबकी नजर पढ चुकी खूटी हो चुकी ।—उन्होंने फिर अपना चाने का पानपान साल चार बीड पान के हलक म ठूस लिए और मेरी तरफ से मुह पर लिया ।

क्या कहूँ ? दहाना दहाना ठहरा । राजा साहब को चुग करने का कोई हग ही नहीं नजर आया । मन मारकर मुहम्बत का नृत्य देखन लगा ।

दोनों गालों में पान ठूमे उसे पेग करते हमते हुए एक न कहा—गजल गयो ।—बनारस के बनुषा साहब ने एक मुट्ठी इलायिया पेग करते हुए कहा— जी नहीं कोई दुमरी ।—मुसीजी तटपकर बोले—नहीं सरकार कोई पककी बीड होन दीजिए ।—राजा साहब न मरी और मुह करके कहा—घाप फर्नाइय कीजिए ।—मैंने झेंपत हुए कहा—बाई एमी बीड मुनाइए जिसम मुहम्बत का दरिया बह जाए ।

राजा साहब गिंसखिसाकर हम पडे । हमी का फव्वारा फूट गया । भसा राजा साहब हमें घोर महफिन चुप रह जाए ? वा साब्बा ने भी फिररा जहा— तो हुडर, इम मुहम्बत के दरिया से प्याम किसकी बुझगी ?

मैंने कहा—प्यास पछियो की बुझगी मगर कोई मद डब्बा डुबकी लगा बैठे तो भ्रजव नहीं।
 राजा साहब दुस्तुड जाघो पर मारकर उछल पड़े—खुब कहा खूब क्या।—
 मुहब्बत मोंपकर मुक गई। कुछ देर म बहकहा का तूफान घमा और मुहब्बत ने एक गजल गाई।

जान बची साखों पाए। राजा साहब खुश हो गए। मैंने समझा ठीक मुसाहिबी हुई।

दूधरे दिन रात को राजा साहब ने बुलावा भजा। जाकर देखा दीवान खाने में राजा साहब और मुहब्बत दोनो ही हैं। पाम मे राजा साहब के मुह लगे पेगवार राजा साहब का बडा-सा चादी का पानदान गोद में लिए बठे हैं। मुहब्बत न चाधी साजीम दी और सनाम किया। मैंने कहा—मुबारकबा देता हू। आप एक ही कमाल हैं।

जो हां कल आप नहीं बना सके सो भव बनाइए मुहब्बत ने देड़ी नजरें देखकर कहा।

नही नही ऐसा नहीं है आपका फन ही ऐसा है कि जो देखगा मिर घुनने सगगा।

भारया। सो इसीम हुजूर बन इस बदर मिर घुन रहे थे। मुहब्बत ने खास तीखा तीर चलाया था। मैंने मोंप मिताने को कहा—जी मैं दहकानी न सही सारो महफिल ही सिर घुन रही थी।

शुक्रिया तो इस बात के हुजूर एक मातबर गवाह हैं। राजा साहब ने नकली गम्भीरता से कहा—वे सब मिर घुननवाले सही लामत तो हैं न ?

मुहब्बत न कहा—एक वे मुनीजी तो बल ही मर रहे थे।

राजा साहब पचाम को पार कर गए थे। डुबल-मलले कोई डाई माने लखनवी आत्मी थे। रग पक्का सौपही गजी आखों में मोटे शीशे का धरा खाने-पीने और कपड़े-नसों से प्रसावधान मगर पक्के पिपरकड। घुन ने प और सनकी।

दो रातिया डिल्ला हाडिर थी। एक सही मानों म घमरली। जो

महनों में धरी रहनी था। दूसरी तीला ममामोचक विदुषी और डिप्टेर।

सर राजा साहब स अनक नाम थ। मैं उनका चिन्तित तो था ही मित्र भी था। वे मरा विवाम करत थ जित खोलकर बात करत थ। अनक बार मैं उनके प्राणों की रक्षा की थी प्रतिष्ठा की भा। बहुत बार राजा साहब के घामू मैं दये थ। मेरे सम्मुख राजा साहब वास्तव म एक निरीह व्यक्ति थ। राजा नहीं।

साम म दो-तीन दौरे मेरे रिवासत में लग ही जाते थ। परन्तु इत बार व्यस्त रहने से कुछ देर में जाना हुआ। जाकर देखा सों स बचने के लिए राजा साहब रजाई म लिपट हुए धगीठी साप रह हैं—पास बठी है मुहब्बत। वह मुहब्बत नहीं जा पिछन साल दखी थी—दूबूर बहकर पुकारनवासा भुङ्ककर ससाम करनवाली। यह तो रानी की गुरा-रिमा स पूण स्था थी। उसकी भासों म गव और बातचीत में रानीपन की साफ झनक थी। मैं सुन चुका था कि महाराज के भाण्ड स कूबर साहबान उसकी ताबीम करत हैं राजबधु उस धम्मुत्पान देती हैं। सुनकर ही मरा मन विगोह स सुलम उठा। और जब मेरे बहा पहचने पर उमन मुक्त ताबीम नहीं दी उल्टे मुन्दीसे ताबीम चाही तो मैंन उस औरत की तरफ से एकबारगी ही मुह कर लिया। मैं उसकी भार बिना ही देष राजा साहब स बातें करने लगा।

राजा साहब ने देता। दखकर मुस्कराए। मुस्कराकर कहा—पहचाना नहीं ?

मैंने धाण्ड का नाट्य करत हुए कहा—नहीं महाराज !

'मुहब्बत है सरत धाखा से उसकी और साकते हुए उन्हींने कहा।

मैंन कहा—धोक, बिल्कुल ही मूमकर चुक हा गईं !

राजा साहब न धाखें मेरी और उगकर कहा—जीन ?

'मुहब्बत महाराज ! मैंन थोड़े द- स कहा। महाराज एकम खितखिपा कर हस पड बाणे—इतनी मांगी तो हो रहो है। धाप बहते हैं मूस गई ?

मैंने धाखें नापा करक म्पे स्वर में कहा—महाराज साहब साजून ना बिक्र कर रहे हैं ? परन्तु मैंन महाराज से मुहब्बत की बाबत धाखें की।

गुब है धाप ! राजा साहब हसकर बोने—मुहब्बत को मुहब्बत से जुग करत है धाप। सर, धब यह देखिए कि इनका मिजाज क्या है ? इस बार तो

मैंने कभीके लिए आपकी कल्प दिया है।

आपनी अग्रसन्नता को मैंने छिपाया नहीं। सोदा कुछे स्वयं मैंने कहा— महाराज ने इतनी सी बात के लिए नाटक तकलीफ की। गियासत के डाक्टर और नस क्या इतना भी नहीं कर सकते ?

मेरा जवाब राजा साहब को पसन्द नहीं आया। उनका चेहरा उदास हो गया परन्तु प्रथम इसक के कुछ बहने मैं उठ खड़ा हुआ। मैंने मुहम्मद से कहा— दूसरे कमरे में चलते देखू क्या बात है।

स्पष्ट था कि वह मेरी भावना को ताठ गई। उसकी खोरिया में बल पड़ गए। जब मैं उनकी परीक्षा कर चुका और बसने लगा तो उनसे कहा— कडवी दवा मत दीजिए। नहीं खा सकूगी।

मैंने उठकर दखा। मेरी आँखें जलन लगीं।

मैंने कहा— क्यों ?

मैं कडवी दवा नहीं खा सकूगी।

मैंने जवाब नहीं दिया। गहरी विरक्ति और क्रुत्ता से मेरा मन भर गया।

आप स्थानीय डाक्टर को जरा बुला लीजिए, मैं उन्हें समझा दूंगा। इनकी चिकित्सा-व्यवस्था हो जाएगी।

और इस प्रकार डाक्टर साहब का धरण अन्त-पुर में पडा। नवमुक्क के। गौर बग भा गोल मुह और गोल ही आँखें। हर समय हसकर बातें करना उनका स्वभाव था। जब मेरे ही सामने उन्होंने उस औरत को 'टूजूर' कहकर पुकारा तो उस औरत ने साभिप्राय मेरी ओर ताका। उस लालन का अभिप्राय यह था देखा इस तरह मोसना चाहिए।

रियासती व्यवस्था बड़ी विचित्र होती है। अन्त-पुर के उस द्वार पर रात दिन सगीन का पहरा रहता था। कोई पक्षी भी वहाँ पर नहीं मार सकता था। परन्तु डाक्टर के लिए रोष न थी। डाक्टर को देखते ही सतरी बन्दूक नीचे करके द्वार छोड़ हटकर खड़ा हो जाता था और डाक्टर एक मुस्कान उसपर फेंककर ऊपर चढ़ जाने। क्या मैं अनेकी मुहम्मद और राजा साहब। तबीयत दोनों की खराब।

मर्ग के दिन य। राजा साहब मुकह ही म धूप तापने की तिमजिनी दल

पर आरामकुर्सी पर जा पढ़ते। वही बे पान रुचते रहते। तेल की मालिगानी होती रहनी। कभी कभी सो भी जाते। मुहम्बत बहुत कम ऊपर चढ़ती थी। टांगा म दब पा। मोठियां षड नहीं सकती थी। राजा साहब प्राय दिन दिन भर छत पर पड़े रहते और मुहम्बत दिन दिनभर अपने कमर में घबेली।

डाक्टर नित्य आते। पहले देखत मुहम्बत को फिर ऊपर जाकर राजा साहब को। नीचे उतरकर फिर मुहम्बत से बात करते। बात किस ढंग पर, किस मजमून की होती थी इसका छीसरा साक्षी या शारदीय वातावरण एकांत एकाकी मिलन बेग्या और बेग्या की पुत्रा। राजा बूढ़ शराबी सनकी और रोगी तथा गरहाडिर। डाक्टर को प्रवेश की स्वतंत्रता ग्वान्त सहवास की स्वतंत्रता और पाहे जब तक भीतर रहन की स्वतंत्रता एक घमड़े का हैंड बग हाथ म से जान और स भान की स्वतंत्रता। इन सबन घुसमिलकर उस पेरोपन्थी डाक्टर और उन पेरोबर बेग्या को एकमूत्र में बाप दिया। पहले प्रमोन्थ हुमा फिर प्रमानाप।

अब दोनों एक बे पाप और नमकहरामी से भरपूर। निरीह मालिक से विन्वासघात करन को तयार। कुछ दिन सनतवार्ता खली। फिर एक दिन खुल कर बातचीत हुई।

डाक्टर न कहा—मुहम्बत इस तरह कब तक चलेगा ?

‘यही मैं कहती हूँ।’

‘तब ?’

‘अता वहीं भाग चनें।’

एक दिन अक्सर पाकर मुहम्बत न कहा—एक बात कहती हूँ
कही।

‘किसीसे कहोगे तो महीं ?’

‘नहीं।’

‘बिना न रहने पाओगे।’

‘तो साथ ही मरेंगे। तुम बात कहा।’

‘बह गेफ दस रहे हो ?’

‘देस रहा हूँ।’

उसमें नाटों के गट्टर भर पड़े हैं।

अच्छा तुमने क्या ?

देखा।

लेकिन सबाना तो नीचे पहरे में है।

यह महाराज का प्राइवेट पक्ष है।

अच्छा कितना खर्चा है ?

‘कल गिना था पाच लाख के मोटे हैं।

सच ?

एक मोतियों की माला है कहते थे एक लाख का है।

अच्छा !

‘एक हीरे की बसंगी है डेढ़ लाख की है।

घर !

घीर मुटठीभर जवाहर-हीरे-मोती हैं।

‘मई राजा का घर है राजा के घर में मोतियों का अकास ?

मुनो।

क्या ?

‘मैं वह सफ खाल सकती हूँ।

‘घरे ! किस तरह ?

‘एक तरकीब है। मुझ मालूम है। उसमें दर-उदर देखा। डाक्टर ने कहा—क्या चाबी हमिया की है ?

नहीं हर्फ उलट-मुलट होते हैं। कल राजा साहब ने मुझ बताया।

डाक्टर ने अपने को सयत करके कहा

मुहम्मद तुम जानती हो मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ।

खुब जानती हूँ ! मुहम्मद ने मुझ-साकर कहा।

किर यह दीनत अपनी होनी चाहिए। अभी उम्र बहुत बानी है और तुम तो बिल्कुल नोजवान हो। इस मुर्दे राजा के पास जैसे कर में अपना दी गद्द। इस दीनत को हथियाकर तो तुम राना बन सकती हो सच्ची राना !

ऐसा करना खतरे से खाली नहीं है।

लेकिन इस दीनत को यही छोड़ जाओगी ?

तो क्या जेल काटूगी ?
 जेल बंबकूफ काटते हैं ।
 मैं पक्की बंबकूफ हूँ ।
 लेकिन मैं ज़रा भी बंबकूफ नहीं ।
 तो तुम यह दौनख लूट लेना चाहते हो ?
 'पहले एक बात बताओ ।

क्या ?

इस सेफ की बात किसीका मासूम है ?

सेफ को तो सभी ने देखा है ।

नहां । रकम ?

न । किसीको नहीं मासूम ।

क्या कवर साहब को भी नहीं ?

नहीं । जन्हीसे छिपाकर तो यह रकम और जवाहरात रख गए हैं ।

किसलिए ?

'हविध । जवाहरात तो सब रानी साहबा के हैं ।

'उन्हें मासूम है ?

'नहीं ।

'ठीक कहती हो ?

परती स्वयं राजा साहब न बटा था । इस रकम की कभी किसीके सामन चर्चा भी न करना ।

'और तुम्हें उहाने माला सोलना बन्द करना भी बता गिया ?

'दो-एक बार देखा मैं समझ गई ।

क्या राजा जानता है कि तम इसे खाल सकती हो ।

नहीं । मैं न कल ज्योही मज्बार स हाथ लगाया था सफ खुल गया ।

तो यह हमारा-तुम्हारा भाग्य है मुहब्बत मेरे-तुम्हारे बीच ईमान है । मेरी गंगा, तुम्हारा कुरान ।

'कस्म खाया ।

साईं भई ।

'कस से चारपाई पर पढ जाओ मैं रोड झाऊंगा खाली बग सेकर । और

निया । मुहम्मद न कहा—और गंगा और कुरान ?

हां हा वह भी । मो आज की खुराक डाक्टर ने एक छोटी-सी पुडिया उसकी टण्डी बफ-सी उगलिया म फकड़ा दी । डाक्टर बसा गया और मुहम्मद मूर्च्छित-सी हावर जमीन पर गिर गई ।

राजा साहब की हालत बहुत बदतर हो गई । उनमें सबका भान का सोप हो गया । धन्हासी मे व घटशंट बबने लगे । होठ उनके बाने और आखें सान्न हो गइ । अपने दोना हाथों की उगलियों से वे कुछ साने-साने-से कुनने लगे । साना-भीना समाप्त हो गया । गर्म पानी मे घोसकर मीठी शराब देने से उन्हें कुछ शतन्य भाता था । मुहम्मद और डाक्टर ने राजा साहब की सेवा मे दिन रात एक कर दिया । शियासतमर मे मुहम्मद एक घादश सती स्त्री की माति प्रगसित हो गई—कलिकाल में मुसलमान बना होकर ऐसी सेवा-गरायण स्त्री भना कहा भिल सवती है ? और डाक्टर न तो सत्ययुग का उदाहरण उपस्थित कर दिया ।

रात रातभर जब सब नीकर धाकर परिजन एक जात ये दोनो ही राजा की सेवा म जागते रहते—उन्हें निबिघ्न-सदेहरहित मृत्यु के द्वार तक अत्यन्त असफलता से पहुंचाते जाते थे ।

सक पाली हो चुका था । और भन्न मुमूषु रोगी के पास आखों और इगिलों म इन दोना व्यवितयों की जो घातघीत हाता उसका मूल विषय होता यह मन जो चुरा भिया गया था और सब डाक्टर क पेट म पहुंच चुका था । मुहम्मद घबराकर मुझे हाठा स कहती—दखना दगा न करना तुम्हारे विश्वास पर यह सब किया है । डाक्टर आखों म ही जवाब दते—इस्मीनान रखा मब ठीक ही पाग्या ।

परन्तु राजा साहब की भवस्था एक साधारण रूप धारण कर गई तो डाक्टर ने कुरर साहब से कहा—अब तो मरे वृते की बात रही नहीं है किसी बड़े डाक्टर की म्हायना की आवश्यकता है । बल न जान क्या हा जाए तो मरा मुह बाला हागा । मैं तो जो सेवा करनी थी कर चुना ।

भला डाक्टर की संधा म सदेह किमे था ?

राजा साहब का मदर साहूर के अस्पताल से जाया गया । वहां अनेक पुरं धर डाक्टर उनकी देखभाल करने लग । परन्तु रोग का कारण किसीकी समझ

में नहीं था खा था। रोग बढ़ता जा रहा था। और जब राजा साहब की किताब भा साए बहोती की हानत में मृत्यु हो सकता थी। बाबा की पण्डित-मच्छली वि मन्त्रि में तर्जुब क समुद्र से मृत्युवय मात्र का पाठ कर रही थी। देव दग क ज्योतिषी साए-साए पर क्रूर द्रवों की गतिविधि दस्त रहे थ। गतिविधि टोक-टोक नहीं देना जा सकी थी तो बेचन डाक्टर और मुहब्बत की जो इस निमम हत्या विवासघात और उनके प्रधान अभियुक्त थ।

डाक्टर हताश हुए तो एक दिन पचात् कवर साहब ने मरा ध्यान किया। जबकी ही बाल पर राजा साहब मुक्त बुला भवत थ। अब इतना बटा काट हो गा और मुक्त नहीं बनाया गया। कवर साहब के प्रस्ताव का डाक्टर और मुहब्बत दोनों ने ही विरोध किया। डाक्टर ने कहा—इतने बड़े विद्वान हार बठे वे घाबर घब क्या करें?—कवर साहब ने कहा—मानो बुद्ध न करो। हानहार होकर रहगा। पर अपने मित्र का दंत तो लेंगे। मुक्त मूषना भेज दी गई।

घाबर देखा भभादा राजा बिद्धीन पर अत्रहावावस्था म पठा है। घातें घापी बल। घातकाजन गस में स्वाय तत्रा हृषा दोनों हाथों की उगति। जैसे किसी मून क घाग की लपेट रही थी। घातों का रण सात घण्टा टेम्बर दिक्कत नहीं गुर्ने का काम बल गित की बढवन किता भी साए घोखा देन वाली।

सब कुछ दखकर मैं घाबययक्ति रह गया। और जब मैं मुता कि पूरे ग्याह गिन थ एसा है तब ता मय मन सदेर और घातकाघों सं भर गया।

हर दूसरे घंटे पर डाक्टर रोगे की सनात रह थे। मेरी घनाई सुनते ही वे दोरे भाए और गुरु से घाखिर सक रोग का इतिहास सुनान सा। एक-दो सम्बधी राजा उपस्थित थे। बहुत पुत्र परिवन सभी थ। डाक्टर रोग-विषरत मुता रहा था। बीच-बीच में घनाव-जह हास्य उनके होंने पर भा जाता था। मरा सनेह निबन म बन रहा था। बीच म रोकर मैंने पूछा—दरिए, टेम्बर-बाट कहा है देसू?

डाक्टर का मट मूय था। जमन कहा—टेम्बर-बाट ता हमने बनाया ही नहीं।

क्यों? मैंने कूर कनाई से प्रान किया।

डाक्टर म हकमात हुए कहा—टेम्बर राइड हा नहीं हुआ

तो बिना ही टेम्पलर के ये इतिहास के सांघानिक आसार उत्पन्न हो गए ?

जी हा जी हा डाक्टर न धूक सटककर हसने लगे बोधिस की ।

मैंने कहा—मीर आपन इधर ध्यान नहीं दिया ?

शिया साहब मैंने

मैं समय न रह सका । गरज कर मैंने कहा—डाक्टर यह सारा धून का किस है मुझे मुतासिब है कि मैं तुमिह को इतला दू । मैं तेजी से कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ । मुहम्मद खीस मारकर बेहोश हो गई । डाक्टर मुर्दे की भांति बच पठ गया । जूड़ीग्रस्त पुन्य की भांति यह आपने लगा ।

इसी समय राजा ने आलें खोली । उनकी वह दृष्टि स्वामात्रिक थी । मैं सपककर उनके पास गया । दोनों हाथों में उनका हाथ सकर कहा—महाराज साहब मत मोड़ण आपकी जो इच्छा हो कहिए । उन्होंने उधर-उधर आंखें पुमाई । क्षीण स्वर में कहा—बड़े

तुरन्त ही बड़ कुबर न उनकी गोले में सिर डाल दिया । राजा की आंखों से आंसूधो की धारा बह खली । मैं नाडी देखी दिस की घड़कन देखी । मीर को तुरन्त हटाया । राजा साहब ने मह खोल शिया । मैंने कहा—गगात्रल कीटिए । दो तुलसीदल दानकर एक घूट गगात्रल उनके मुह में डाल दिया गया । जल बण्ठ में गया और प्राण नहर धरीर से वृषक हुआ ।

उस रियामत में मेरा काम और मेरे सम्बन्ध सब समाप्त हो चुके थे । फिर भी जिस दिन नये राजा को पगडी बंधी मुझे हाजिर होना पडा । नये राजा नव मुवक भाबुक और दुबले-नतले सजीले-स थे । सब कृत्य समाप्त होने पर जब मैं एकान्त में मिमा लो बातें हुई । मैंने कहा

उस मामले में आपने कुछ किया ?

क्या आपको कुछ मासूम था ?

मैं निदिचन रूप से सिद्ध कर सकता हू कि यह आपन सावधानीपूर्वक किया गया छून था ।

‘परन्तु किसी भी डाक्टर न ऐसा नहीं कहा ।

नसे कहा जा सकता था सूनी डाक्टर है । सब कार्य बहुत वैज्ञानिक रीति से हुआ । सदेह की कोई भी गुजाइश न थी । मुझे लो केवल एक गूब मिल

‘या नहीं तो मैं भी न जान सकता ।

पर अब तो उन्होंने सब कुछ बचा दिया है । उनका मतलब मुहब्बत था ।

‘अब कुछ ?’

‘जो, हाके का हाल आप सुन चुके होंगे ।

‘नहीं तो हाका क्या ?

इसपर नये राजा ने सारा विवरण बताया । मुहब्बत ने राई रत्ती सब ता दिया था ।

मैंने कहा—आपने मामला पुलिस म नहीं लिया ?

कैसे दे सकता था । वे बेव्याभव्य हैं पर मरे पिता न उन्हें मरी माता के स्थान पर रखा था । उनके विरुद्ध कुछ भी करना मेरे लिए असम्भव था । यह मेरे सानदान की प्रतिष्ठा और मयादा का प्रश्न था ।

‘किन्तु दस लाख का हाका और राजपुरुष की जान ? मैंने घीरे से कहा ।

युवक राजा ने मासों की कार से घामू पोंछ । बहुत देर हम चुप बठे रहे । फिर मैंने कहा—रुपया मिलने की वृद्ध उम्मीद है ?

‘नहीं ।

सब क्या बाजार मूट ले गया ? मुहब्बत को कुछ नहीं लिया ?

‘नहीं ।

‘बाजार कहाँ है ?

‘छुड़ी सी है घायद ठवादला भी करा रहा है ।

‘और मुहब्बत ?

‘वे यहीं हैं ।

‘क्या मैं मिल सकता हूँ ?

नये राजा ने दसहर कहा—सना कीजिए । वे बाहर नहीं आती हैं मुहब्बत राजा की सामीनता धरमुठ थीं ।

मैंने कहा—राजा मर गया आप चिरजीव रहे ।

और मैं उठकर चला आया ।

अकस्मात्

प्रेम राजपरिवार को मर्यादा को खींचार नहीं करता । फिर राजकुमारी का प्रेम ही क्यों राजकुमारों तक सीमित रहे । इस कहानी में एक राजकुमारी की गुप्त प्रेम की श्रेणी ही भागी प्रणुन की गई है जो अत्यन्त सजीव हो उठी है ।

दो व्यक्ति सरपट घोड़ा दौड़ाए उड़े खले जाते थे । भयानक दोपहरी हवा यम घोर धरती ऊबड़-खाबड़ पर सवारों को इसकी चिंता न थी । घोड़े पल जगम रहे थे सवार भी पसीने से तर थे । दोनों के हाथों में बढ़िया मार्टिन बंदूकें थी और दोनों ही मौन थे । चारों तरफ सघन झाड़ी थी सामने बिकट वन घोड़ों के लिए ठीक रास्ता न था ।

सवार ने घोड़े की रास खींचते हुए कहा—ठहरो राजकुमारी बह सुप्रभावे नहीं गया है यहीं किसी भाठी में छिपा है ।

किस झाड़ी में ? राजकुमारी ने भीहे मरोठकर और हाँठ चबाकर कहा । उसका मुँह लाल भगारा हाँ रहा था हाथ बंदूक के घोंच पर था । वह घोड़े की रास अस्वामाविक रीति से खींचकर इधर-उधर देलन लगी । घोड़ा वहीं रुककर खूद करन लगा ।

उस घदनसाब की जान अब बरग दो कुमारी वह कामर की भाति सुम्हारे भागे से भाग गया है । वह देखो सामने वृत्तों का मुरमुट है पानी भी निकट ही कहीं होगा महा बलकर कुछ विधाम बगो घूप म मुलसकर प्राण निकले पड़ते हैं । साथी ने विनम्र स्वर में निकट आवर कहा ।

वह कायर की भाति भाग गया है इसलिए उसे छोड़ देती हूँ परन्तु तुम्हें न छोड़ती । राजकुमारी ने एक कटास साथी पर किया और हंस पड़ी ।

दोनों ही शिकारी उन ध्यादादर वृत्तों की घोर बढ़ । इस-भ-इह घाम जामुन के घने पत्तों में एक पुराना कुम्भा भी था । वह अभी पुराना बाग रहा होगा उसकी परकी चहारदीवारी के ध्वंसयत्र-तत्र दिखाई पड़ते थे । वहाँ जाकर युवक उतर पडा और सहाग केर कुमारी को भी उतारा । एक सघन वृत्त

के नीचे दोनों बैठ गए, पाठे बागडोर से बांध दिए गए। वे हरी-हरी घास चरने लगे।

राजकुमारी की भवस्या भटा रहूँ वष की थी। उसका रंग तपाए हुए स्वण की भाँति था। उसका उज्ज्वल दाँत मोती की धाभा की भाँति चमकते थे। बड़ी-बड़ी पानीपार घाँसों में आनन्द मस्ती और गौरव का समुद्र लहरा रहा था। प्रसन्न सलाह उसे राजनग्नि साक्षित कर रहा था। फूले हुए सरस होठ और गढ़दार गोल ठोड़ी उसकी वृद्धितथा का परिचय दे रही थी। उसका शरीर पुरुष की भाँति दृष्टि किन्तु अत्यन्त मुषट और वणस्पल साह के समान पुष्ट था। वह भद्रजी काट के बहूभूत्य किन्तु साँचे शिकारी मन्नि वस्त्र पहन थी। त्रिबेज के ऊपर सुस्त जाकेट और उसपर शिकारी बोट जिसकी जर्बों में कारतूस भरी थी उसके घाँसे की धाभा की अलौकिक कर रहा था। वह कीमती रत्न की मन्नि कट की बमोद पहने थी और उसपर मच करनी हुई टाई फहरा रही थी। सिर पर भद्रजी टोपी थी। उसके बाल भी भद्रजी कट के थे। पंरों में पुसवूट बसा था जिसमें घाँसी के सुन्दर काटे लग थे।

बदूक और बोट की एक तरफ सापरवाही से फँकर वह कृष्ण के नीचे फुर्ती से लट गई। वह निस्संदेह बहुत ही चक गई थी धूप और मूस-प्यास से वह बेचन हा गई थी उसका सारा शरीर पसीने में लथपथ था और जोर से साँस लेने से उसके नपुने फूँक रहे थे तथा छाँड़ी धौवनो की भाँति उठ-बठ रही थी। उमने चिन्ताकर कहा—कष्टन प्यास के मारे प्राण निकलते हैं कृष्ण सितामो तिताभा। मुषक इसी सटपट में था। वह छोटे के धारबाम से जल पान की सामग्री जल और दूध का परमस निवाल रहा था। उसने हसकर कहा—अभा साया कुमारी!

उसने सब सामग्री उसके पास लाकर सजा दी। राजकुमारी ने अस्त-व्यस्त रीति से उसे चट करना आरम्भ कर लिया। यह देखकर मुषक ने हसकर कहा—भाप तो भूखी बापिन की भाँति सा रही हैं राजकुमारी!

‘और तुम क्या समझते हो—मैं बिज्जी की भाँति छाऊनी?’ मैं भूखी बापिन सा हूँ ही। यह फिर हस दा। हसते-हसते वह सोट गई। मुषक उस अद्भुत बाला को देखकर किसी सोच में डूब गया। कोई बेचना उसके हृदय में उठी। एक ठंडी घास लेकर उसने कुमारी की ओर निराग दृष्टि से देखा और

उसकी मुस्मान घस्त हुई। कपटन ने भुक्तवर कुमारी को सलाम किया दो कदम पीछे हटा और तेजी से महल में पुस गया।

कुछ देर कुमारी ने प्रतीक्षा की। इसके बाद उसन मोटर को तीर की भांति छोड दिया।

'योगेन्द्र मुझ सब कुछ मालूम हो गया है। हमारे कुन की नाज तुम्हारे हाथ में है। मैं तुमसे कबाई नहीं कर सकती। तुम्हारी माता मेरी सगी है तुम पर भी महाराज का पुत्रवत् स्नेह रहा है मेरा भी तुमपर वही भाव है अब तुम हमारी इच्छत की रणा करो। महारानी की भाँखों में धामू धा गए।

योगेन्द्र खडा था। वह घुटनों के बल रानी के घरणों में बठ गया। उसन नामर स्वर से कहा—माता मैं क्षमा मांगने का अधिकारी नहीं ?

क्षमा से क्या साम होगा ? यदि यह बात प्रकट हो गई तो कुमारी की सगाई मोट भाणगी। फिर हम कही मह दिखाने योग्य न रहेंगी। तुम्हें क्या करना होगा योगेन्द्र मैं तुम्हें पचास लाख रुपये दूंगी। तुम अभी राज त्याग कर यूरोप चले जाओ। अभी मैं तुम्हें एक घंटे का भवसर भी नहीं देना चाहती। रानी के मुख पर बठोरता छा रही थी।

योगेन्द्र ने अधुपूर्ण सोचन ही कहा—माता दया करो तनिक भवसर दो केवल कुछ घण्टे।

'नहीं यदि तुम मुझे बस प्रयोग करने पर विश्वास करोगे तो तुम्ही उमके लिए जिम्मेदार हो। मैं रानी की भाँति नहीं अपनी पुत्री की माता की भाँति बहती हूँ तुम अभी राज्य त्याग दो। सब प्रबन्ध याना का प्रस्तुत है जहाब बस सध्या की पाँच बजे छटेगा तुम चार बजे बन्दई पहन जाओगे। तुम्हारी सीट रिडब है। सब आवश्यक सामग्री तयार है।

योगेन्द्र क्षणभर सोचने लगा। वह उठकर खडा हो गया। धीरे धीरे वह तनकर मोथा खडा हो गया। उसने कहा—महारानी मैं आपकी आज्ञा पालन नहीं कर सकता। आप मुक्तवर राजपाति का उपयोग कीजिए। मैं मरुपु का भोजनग करने को प्रस्तुत हूँ।—वह उसजित हो रहा था।

राजमाता ने संयत स्वर में कहा—य तो ठीक है मैं तुम्हें सब भाँति का दंड दे सकती हूँ। तुम्हारी छुपचाप हरवा भी की जा सकती है परन्तु तुम क्या

राजकुमारी की प्रतिष्ठा की तनिका भी परवाह नहीं करत ? एसा करत से तो राजकुमारी के नाम पर धरु सगा ।

सायन्द्र न दीन भाव न गिर नीचा कर निपा । उन्नत दोनों हाथों त मुह धान निपा । धर्मियों के बच स उमके धामू बह निकले । उन्नत कहा—माता में कुमारी का जीत जी नहीं छोड़ सकता । आप मुक्त पुत्रचाप मरवा बानिए ।

‘मैंन तुमन कहा कि महायना की भाठि नहा निपट बन्दा की माता की हैनियत स तुमन में प्रापना करता ह । उन्नत होठ बाप ।

सायन्द्र चुपचाप सडा रहा । महारानी ने कहा—सायन्द्र मैं विधवा हूँ धर्मिणा विधवा मा की बटी का भावरू बचाओ ।

सायन्द्र तक्षप उठा । वह उठ सडा हुआ । सायन्द्र वह चुपचाप सडा रहा । उन्नत कहा—बहुत धरुसा । मा मुक्त धर्मिणा दा मैं जा रहा हू ।

‘बन्दा पुत्र इतर तुम्हाय मान करण तुमने राखण की प्रतिष्ठा बवाई है ।

‘क्या मैं माता न तिन मू ?

‘सायन्द्र तुम्हें आप जाना है उन का तमन हा रहा है क्या वह तुम्हार लिए सडी रहेग तुम्हाय बन्दा तमार है ।

‘उठ मैं मन्व को दण दण तपाना हू मा ।

‘मन्व को प्रतिष्ठा करो । वह मानन दवस्तान है उन्नत मह करके । दोदण न प्रतिष्ठा की । इनक बन् उन्नत धूमकर राना न कहा—मा मैं आपका दान न मे सकूग ।

‘क्यों बन्

‘मैंने कुमारी का प्रेम बपा नहीं बसि निपा है । कुमारा न कह देना आपका जान दबिए । व चाह जो कुल नी कमने । बन् रानी का धोर देगधर मुम्हाय निपा ।

‘रानी ने कुल बहना चाहा पर वह न करी । सायन्द्र सप निपा । वह धरुसा में धामू भर सडी रही ।

उन्नते धरुमी की भाति महारानी के बरन में प्रवेश किया । उन्नते दूते

कीचड़ में भरे थे और कपड़ों पर उसके छोटे थे। उसके मुख पर पसीने की बूँद झमझमा रही थी। वह सीधी महारानी के पास पहुँची। महारानी टबिल पकड़ी कुछ आवश्यक बातों की जाँच कर रही थीं। कुमारी ने कहा—माँ भाग बड़ी भौंड़ रही मौदर एक जगह कीचड़ में फँस गई। शीफर उसे न निकार सका पहिया रिसप करने लगा। सब मैंने एक ही घबरे में उसे निकाला कष्टन कहा है माँ वे देखते तो कहते कि हा! उसने इधर-उधर दसा।

रानी की मुख-मुग्ग बठोर और हठ थी। उसने कहा—मैं तुम्हें भाग देती हूँ

कुमारी ने माता का मुख धपने हाथा ने बन्द कर दिया। वह गिरा कर् भाँति उसकी गोग म बँठ गई और गले में बाहें डालकर कहा—तही माँ भाग न दो जो कुछ कहना है बसे ही कहो।—कुमारी की धाँथो म धासू धा गए वह रानी की मुख मुग्ग से सगुकिठ हो रही थी और कष्टन की गरहाजिर का मसतब्र समझने को व्यग्र थी।

प्राणो से प्यारी पुथी के नेत्रों में धासू देखकर महारानी विचलित हो गई कुमारी की धासू में धासू कभी निसीने देखे ही न थे। महारानी ने कहा—बेटी क्या मैं बहुत बड़ी बात कह गई ?

उसने उसका मुँह धूमा और स्निग्ध स्वर में कहा—बेटी वे लोग धा हुए हैं विवाह की बात पक्की हो गई है। तुम्हें इस प्रकार निश्चक हो बाह मना न चाहिए।

कुमारी ने जन्दी से कहा—बिन्तु कष्टन कहा है ?

वह धावश्यक राजकार्य के लिए कहीं गया है।

कहाँ ?

बेटी क्या राजकार्य की सभी बातें तुम्हें जाननी चाहिए ? वू सुगीला टी की भाँति रह।

कष्टन कब तक धाएगा मा ?

'नहीं कहा जा सकता। रानी ने रुसे स्वर में कहा। इसके साथ ही उसने कहा—धब तुम्हें धूमन की भी इतनी स्वतंत्रता न मिलेगी बिना मेरी अनुमति न जा सकेगी।

मैं नहीं जाऊँगी माँ। कुमारी के होंठ काँप। उयन हसना धाहा पर

उसका धावा से घांमू डरक गए । फिर भी वह मां को देखकर हस दी । महाराणी ने पुत्री को खींचकर छाती से सगाया—फिर उसने कहा—बेटी तू सयानी है सब कुछ समझती है तू बटी नहीं बेग है । महाराज त सम्ब तुम्ह बेटा समझा धीर माना । परन्तु वास्तव में तू बेटी तो है ही । मैं रानी महाराणी या जो कुछ भी होऊ एक बेटी की मा हू । ऐसी बटी की जिसके पिता नहीं हैं । इसलिए सब आगा-पीछा सोचना अपने कुल-गौरव प्रतिष्ठा इज्जत धारण का खयाल रखना मेरा कतव्य है—धीर तेरा भी । यदि तेरे किसी काम से इस राजवंश का सिर नीचा हुआ लोगों को उंगली उठाने का मौका मिला तो बेटी यह बृद्धा विधवा मा तो जीवित ही मर गई । योगेन्द्र के लिए तेरे मन में क्या भाव है यह मैं जानती हू परबेटी यह बात तो हो नहीं सकती । धन होनी माता की मन में न माना ही अच्छा है । ऐसी दशा में योगेन्द्र से ऐसी अनिष्टता से मिलना भी ठीक नहीं । उसके मन की बात भी मैं जानती हू परन्तु मर्यादा धीर कुल-गौरव प्रथम वस्तु है ।

कुमारी ने बीच ही में बात काटकर कहा—मां तुम क्या पाहती हो ? मैं वही करूंगी ।

यही तो चाहिए बेटी ! योगेन्द्र को कुछ दिन के लिए बाहर भजना आवश्यक था इसीसे भज दिया गया है । बाल-बाल के सम्बन्ध सदा स्थिर नहीं रहते नये जीवन में प्रवेश करो । रायगढ़ के राजकुमार सब भाति योग्य हैं इसी वर्ष उन्हें गद्दी के अधिकार मिलनेवाले हैं सब बातें तय हो गई हैं आज ये सौग जा रहे हैं । आगामी मास में विवाह की तिथि निश्चित हो गई है । धन बेटी वही करो जिससे कुल-मर्यादा रहे ।

मैं वही करूंगी मां ! कुमारी इतना कहकर माता की धीर देखकर हस दी धीरतेजी से कदम उठाकर धन दी । यह अपने कमरे में जा द्वार बन्द कर के एक तर्बिया छाती के नीचे सगा कौच पर पड़ गई ।

वह चुपचाप दिस भरकर रोई ।

राजमहल में तिस धरन को जगह न थी । विवाह की बड़ी धूमधाम थी । द्वार पर पचासों हाथी घोड़े व्यादे इपर-उपर धूम रहे थे । बड़े-बड़े दरबारी इपर-उपर दौड़ धूप कर रहे थे । मदान बनायों-झोलगरियों धीर डेरे

तन्मुखों से भरा हुआ था। सैकड़ों प्रकार के लोग सबको काय कर रहे थे। सारा नगर सजावट से जगमगा रहा था। राज्यभर के नमचारी वहाँ हाज़िर थे। प्रधान मंत्री और अन्य अमाल्यगण अपने अपने सुपुत्र कामों को यत्न से कर रहे थे। महल के भीतर प्राणल म महारानी म महिलाओं से घिरी भाति भाति की आशाएँ द रही थीं। पल-पल पर संदेश आते थे—भाति भाति के प्रश्न हो रहे थे। आज ही कुमारी का विवाह था।

सध्या हो खनी थी। विवाह मङ्गल सजाया जा रहा था। सौ वेदपाठी ब्राह्मण वहाँ बड़े वेदपाठ और मंगल स्तवन कर रहे थे। चारों तरफ भाति भाति के बाजे बज रहे थे। राजपुरोहित विवाह-सामग्री याद करके मागते और संग्रह करते जाते थे। उनकी पाँचों थी म थी। सेवकगण बहबहाते और काम करते जाते थे।

कुमारी अपने कमरे में अपनी सखियों से घिरी बठी थी। उसका फूलों से शृंगार हो रहा था। उसका शरीर हल्दी चढ़ने से कले के पल्ल की भांति शोभित हो रहा था। आज वह साज को समेट रही थी पर वही चिर अम्यस्त हास्य उमने होठों पर था। वह हसती थी अवश्य पर उस हसी में कुछ और ही बात थी। हसते ही उमक भोठ-सपुटित होकर बाप आते थे पर उमने लज्जित करनेवाला कोई न था। उसे कष्टन का पत्र मिल गया था। उसने उमका उत्तर भी दे दिया था। योगे न केवल एक सारन पत्र में लिखी थी

चिरविदा राजकुमारी !

कुमारी ने भी एक पत्र म उत्तर दिया था

अभी नहीं रायगढ़ में।

कुमारी रायगढ़ जाने के मुख-स्वप्न देख रही थी। उसे समुराल जाने की उतावला थी। उसके मन म जो कुछ था उसे बसपूयक छिगा न सकने पर वह अकारण ही हस देती थी। सखिया और दासिया इस हास्य पर उग बनाकर कहती—यह समुराल जाने की हसी है।—कुमारिया बहती—सच ही तो।—इसके बाप वृ भी हसती थी पर उस हसी के बाप वह क्या करती थी यह वहाँ कोई देख न पाता था।

विवाह हो गया। महारानी ने गाठ गाँवों का इलाका दस हाथी सौ घोड़े पाच मोटर और बहुत-सा सामान दहज में लिया। रायगढ़ की छोटी रियासत

ने जिन फिर गए यह तिगुनी हो गई। विना की धारी भाई। कुमारी रत्न जड़े धामरणों और बस्तों स मुसज्जित बत्तन को तयार हुई, तो महारानी ने रोकर उन छाती से लगाया। कुमारी की भाखों म भी धामू धा गए पर वह हम दी। रानी न उसे छाती से लगाकर बर से कहा—कुमार मैंने इसे बटा मममन की चप्टा की पर यह बेटी ही निकली। यह सदा हसती ही रही पर हमें रना बली। इसके बिना यह राजमहल गूय हुआ। पर कुमार तुम्हें इस का हाप पकड़ाकर मैं निर्चित हू। तुम पड़े लिखे हो बुद्धिमान हो राज्य भार तुम्हारे ऊपर धानवाना है इने और उसे समालना। मैं समझूगी बेटी देकर देटा पाया। मैं तुम्हें कुछ नहीं गिया सिफ बेटी ही है।—रानी की भाखों से धामू टपक पड़े।

राजकुमार रानी के परो में झुके। उनकी भाखों में कृतपता की बूदें थी वह खेप्टा करके भी क्रुध न बोल सके। महारानी न फिर कुमारी से कहा—जामो बेटी धपन पर सौभाग्यवती रही पर देसा चचलता म करना भकेले झाइव न करना तुम धाधी की तरह मोटर चलाती हो। सवरदार रहना।

राजकुमारी ने एक बार माता से भाखें मिलाई। उनके होंनों में हास्य मन्हा और धाखों से टपटप धामू गिर पड़े।

बर-बधू दोनों सीडिया पार करके मोटर में धा बटे। मोटर धीरे धीरे पमी। धाग धाध निशान थे। गिन्निषा बरसाई जा रही थी। जय-जयकार ध्वनि बर रही थी।

धीरे धीरे वह मन्गमायाबडी बरान चली गई। यह समारोह स्वप्न-सागर में विनीन-सा हो गया।

‘कुमारी रायगड की महारानी कुननक्षमी मैं तुम्हें धमाई देता हू। रायगड मैं तुम्हारा स्वागत है। राजकुमार न पत्नी के निबट धाकर कहा।

कुमारी न निस्सबोच मुन्करानर कहा—मैं धापको धन्यवान् बेटी हू महाराजकुमार।

कुमार न धागे बन्कर कुमारी का हाप पकड़ना धाहा परन्तु कुमारी हसकर तनिष पीछे सिंसक गई। कुमार न हनकर कहा—राजकुमारी धापकी प्रजा

र सरद राणु भापको धमिवात्न देने तथा बघाइयां दन घाए हैं वे सब महल प्रागग में हैं ।

राजकुमारी हंसती हुई घागे बड़ी । राज्य के सनी प्रमुख व्यक्ति वहां थे । जन घागे बढ-बढकर सलाम वीं नजरें गजारी और बघाइयां दीं । कुमारी न मन्द मुस्कान स सबका स्वागत किया ।

राजकुमार ने भाग बढकर कहा—मोटर तमार है सुन्दर सध्या है धूमन घसना है ?

‘घनिए ।

कुमारी चल दी । प्रम्यास के अनुसार वह ड्राइव करन घा बठी । कुमार ने हसकर कहा—यह क्या ? क्या तुम स्वय ड्राइव करोगी ? माता ने क्या कहा है मूल गई ?

क्या घाप भी माताजी की भाति भय स्यात हैं ? कुमारी न टेडी गदन करके कहा ।

राजकुमार हसते हुए बराबर बठ गए । पीछे दो उच्च अधिकारी घा बठ । साथ म एक महिला थी ।

राजकुमारी के लिए माग घपरिचित थे । राजकुमार उन्हें दायां-बायां बताते खाते थे । कुमारी का शरीर माना कुछ बेकाबू-सा हो रहा था । वह मोटर घला रही थी पर उसका ध्यान वही घन्यत्र ही था ।

कुमार न उस सहराते देखकर कहा—‘क्या मैं ड्राइव करू ? नही घन्य बाद ! उसने मोटर की गति बढाई । नगर छूट गया था । मदान की सानी त के घपेघों से उसकी घसकावतियां खेल रही थीं । वह घालें फाइ-फाइकर घ सोज रही थी । गाडी वायु-गति स बढ रही थी । कुमार न भयभीत होकर हा—धीरे राजकुमारी घीरे । परन्तु राजकुमारी की उन्मा-सा घद रहा था वह हम रही थी उसकी घालें मटक रही थीं वह गाडी उभाए लिए जा रही थी ।

दूर एक मोड़ के पास उसने देला—योगेद्र एक वृदा के सहारे सदा है । उसके मुग से घसफुट स्वर में निकला—कप्टन ! वह मुस्कराई । गाडी घली जा रही थी उसकी गति घीमी करके उसने कहा—मैं घापको घमत्तार निघाती हूँ महाराज !

उसके मनों में कुछ विचित्र चमक थी। कुमार देखकर पबरा गए। उन्होंने एक बार फिर उसके हाथ से पहिया लेना चाहा पर उसने हसकर कहा—क्षण भर ठहरिए राजकुमार !—उसने उमत्त की भांति इधर-उधर देखा—सौ गज के घनार पर सामन एक वृक्ष से सटकर योगेन्द्र खड़ा था। उसने ध्याकुल दृष्टि से कुमार और पीछे बड़े व्यक्तियों को देखा। मोटर तीर की भांति जा रही थी। वह वृक्ष मानो टटकर निकट आ रहा था। सूर्य छिप गया था। पश्चिम में खान-लाल बादल पते थे। राजकुमार ने धक्का कर कहा—‘सावधान ! दूसरे ही क्षण मे एक बख्त-भर्जन हुआ। मोटर वृक्ष से टकराई और उलट गई। राजकुमार उद्बनकर छेठ म जा पड़। राजकुमारी इजिन के नीचे दब गई। मोटर भक भक करके चलन लगी। घ्राहृत सवारियां धील्कार कर उठा।

राजकुमार को बहुत कम घोट घाई थी। उन्होंने चारों तरफ देखा और सहायता की पुकार परन्तु वहाँ कोई न था। राजकुमारी होंग में थी उसने चिल्माकर कहा—कुमार आपकी यादा चोट तो नहीं लगी ? वे दौडकर आए। कुमारी न डोर किया और मोटर से भपन को निवाला। इसके बाद ही उन्होंने दूसरी सवारियों को निकलवाया। योगेन्द्र मयानक रूप से कुचल गया था बट मुह से रक्त पॉट रहा था। कुमारी नरब्रह्मती हुई उसके निकट जाकर मूर्छित हो गई।

होंग में घान पर उसने चारों तरफ दृष्टि डालकर देखा—सभी परिवजन उपस्थित थे डानटर सोन चितित होकर उपचार में लगे थे। चारों तरफ डोन कर उसकी दृष्टि माता के मुख पर जाकर अटक गई। उसने मुस्करा दिया। माता निबट बटकर रोने लगी। कुमारी ने धीरे से मां का हाथ अपने हाथ में लिया। उसने कहा—कष्टन वहाँ है मां ?

‘वह दूसरे कमरे में है।

‘वह होंग में तो है ?

राजकुमार ने आगे बढ़कर कहा—वह होंग म है।

‘उसे अभी यहाँ से आया जाए।

योगेन्द्र स्टूडर पर लाया गया। उसकी पसलियां धक्काचूर हो गई थीं और उसके मुह से धब भी खून आ रहा था। वह कष्ट से सांस ले रहा था।

उत्ते देखकर राजकुमारी मुस्कराई। योगे भी मुस्कराया। इसके बाद कुमारी ने धीमे स्वर में कहा—कण्टन यह हमारा पालित्री शिकार रहा।

महाराना वहा से हट गई। कुमारी ने सबको हट जाने का सकेत किया फिर कुमार से कहा—राजकुमार मुझ भाप दामा करें। मैं आपकी पति रूप में नहीं ग्रहण कर सकी। मेरी दुर्बलताएं आप दामा करें। मेरे जाल-स्वभाव ने मुझे यहां तक पहुंचाया परंतु मर्यादा का मुझे पालन करना था। यह घटना भक्तस्मात् कहकर ही विख्यात होनी चाहिए। राजकुमार आपकी बहुत बधू मिल जाएगी। इस मूर्खा के लिए दुखी न होना।

राजकुमारी शकित होकर चुप हो गई। योगेन्द्र उल्टी साम ले रहा था। कुमार ने कहा—शमा करना कुमारी मुझ यदि यह प्रथम से ज्ञात होता ।

कुमारी ने बीष ही में चौंकर कहा—घरे। कण्टन ने तो तपारी कर दी। राजकुमारी के चेहरे पर एक साली भाई। वह अन्तिम उत्तजना थी। दूसरे ही क्षण उसकी द्वास बन्द हो गई।
दोनों प्रमी अनन्त नीद में थे।

ठकुरानी

एक तेजस्वी और स्त्री-अधिकारी के लिए लड़नेवाली विवाहिता रानी का एक स्पष्ट चित्र हम कहानी में है। राजबाहों के अधिपति अपनी काम-लिप्ता की पूर्ति के लिए पाप और अत्याचारों की कोई परवाह नहीं करते थे। यहाँ एक पत्नी तेजस्वी शिबिना का चरित्र-वर्णन है जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए अपने लपट पति राम से भरपूर टक्कर ली और अंत में उसे सीधी राह पर आने को विवरा किया।

घनदाता ! मैं गरीब ब्राह्मणी हूँ ।

चुप सञ्ची हा रे भूरासिंह क्या है ?

'सरकार ! यही है वह ।

तू प्याऊँ पिलाती है ?

'जी हाँ सरकार !

तय गाव बौन-सा है ?

गौराड़ा, महाराज प्याऊँ से बांस भर दूर है ।

तेरे कोई है ?

सरकार मैं एकसी दुसिया हूँ ।

तेरा नाम क्या है ?

'रामप्यारी !

'अच्छा जरा भाग को सरकार बर बठ जा । इतना कहकर ठाकुर साहब ने अपना एक पर उसकी छाती पर धर लिया ।

ज्येष्ठ की दुपहरी जस रही थी । गम नू चस रही थी । मारवाड के ठिकाने के ठाकुर साहब अपने मुनसान बठकसाने म कुर्सी पर बठे प्याले प प्याले शराब उबेल रहे थे ।

— उस गर्मी म उस भयानक मस्जिद न उनके माथ की नसों को तान दिव या बेहरा और घाँसों लास हो गई थी घावाड फटे बांस के समान निव रही थी ।

स्त्री की अवस्था बाईस बष के सगभग थी । साधारण मुन्दरता की भङ

उसे देखकर राजकुमारी मुस्कराई। योगेन्द्र भी मुस्कराया। इसके बाद कुमारी ने धीमे स्वर में कहा—कप्टन यह हमारा आशिरी शिकार रहा।

श्री कुमारी। योगेन्द्र ने दूबते स्वर में कहा।
महारानी वहाँ से हट गई। कुमारी ने सबको हट जाने का संकेत किया फिर कुमार से कहा—राजकुमार मुझे आप क्षमा करें। मैं आपको पति रूप में नहीं ग्रहण कर सकी। मेरी दुबसताएँ आप क्षमा करें। मैं आपको पति रूप में यहाँ तक पहुँचाया परन्तु मर्यादा का मुझे पालन करना था। यह घटना भक्तस्मात् कहकर ही विख्यात होनी चाहिए। राजकुमार आपको बहुत धन मिल जाएगी। इस मूर्खा के लिए दुखी न होना।

राजकुमारी वकित होकर चुप हो गई। योगेन्द्र उल्टी सास से रहा था। कुमार ने कहा—क्षमा करना कुमारी मुझ यदि यह प्रथम से शात होना।

कुमारी ने धीब ही में चौंकर कहा—प्ररे ! कप्टन ने तो तपारी कर दी। राजकुमारी के बेहरे पर एक साली आई। वह अन्तिम उत्तजना थी। दूसरे ही दण उसकी श्वास बन्द हो गई।
दोनों प्रमी अनन्त नोद में थे।

उसे देखकर राजकुमारी मुस्कराई। योगेन्द्र भी मुस्कराया। इसके बाद कुमारी ने धीमे स्वर में कहा—कप्टन यह हमारा घासिरी शिकार रहा।

हां कुमारी! योगेन्द्र ने दूबते स्वर में कहा।

महारानी यहां से हट गई। कुमारी न सबको हट जाने का संकेत किया फिर कुमार से कहा—राजकुमार मुझे धाप क्षमा करें। मैं आपकी पति रूप में नहीं ग्रहण कर सकी। मेरी दुर्बलताएं धाप क्षमा करें। मेरे बाल-स्वभाव ने मुझ यहां तक पहुंचाया परंतु मर्यादा का मुझे पालन करना था। यह घटना भक्तस्मात् कहकर ही विख्यात होनी चाहिए। राजकुमार आपकी बहुत बखू मिल जाएगी। इस मूर्खों के लिए दुखी न होना।

राजकुमारी थकित होकर चुप हो गई। योगेन्द्र उठो सास ले रहा था। कुमार ने कहा—क्षमा करना कुमारी मुझे यदि यह प्रथम से भात होता ।

कुमारी न दीख ही मे चौंककर कहा—प्ररे! कप्टन ने तो तयारी कर दी। राजकुमारी के चेहरे पर एक लाली आई। वह अन्तिम उत्तरना थी। दूसरे ही क्षण उसकी श्वास बन्द हो गई।
दोनो प्रथी अनन्त नीद में थे।

ठकुरानी

एक शब्द का सच-बतिया के लिए महानेका विरक्ति का एक एक का
नियम बानी है। एकाके एक कल्पिता का सच-बतिया की दुर्नि कल्पित
एक ही एककारे क ही एककारे ही बान है। का एक ही शब्द
कल्पिता का कल्पिता-बतिया है कल्पिते बतिया कल्पिता के लिए बतिया का एक एक
म सच-बतिया का ही एक है आ सच-बतिया का ही एक ही कल्पिता है।

‘बतिया ! मैं गरीब बतिया हू।

‘बु मुझकी हा रे मरणांत क्या है ?

‘सरकार ! क्या है वह।

‘तू क्या निता है ?

‘मैं ही सरकार !

‘तुदा गार बौन-या है ?

‘दापदा मरणांत कल्पिते म बतिया मर हू है।

‘सिरे कोई है ?

‘सरकार, मैं कल्पिता दुर्भिता हू।

‘तेरा नाम क्या है

‘उमन्दायी !

कल्पिता उदा बतिया की सरकार बतिया । इतना कहकर ठकुर साहब ने बतिया एक मर कल्पिता बतिया पर पर किया ।

‘तु का दुर्भिता उदा ही था । मम मु बतिया ही । मरणांत के निकाने के ठकुर साहब बतिया मुनमान बतिया बतिया में कल्पिता पर बतिया बतिया पर बतिया उदा बतिया ही है ।

उदा मम म उदा बतिया म बतिया न उदा बतिया की ममों का ठान किया था कहकर मर बतिया ममों का ही ममों की बतिया फटे बतिया के बतिया निकल रही था ।

रही की बतिया बतिया बतिया के ममों की । साधारण मुन्दायी की ममों

देखकर राजकुमारी मुस्कराई। योगेन्द्र भी मुस्कराया। इसके बाद कुमारी
 भीमे स्वर में कहा—कैप्टन यह हमारा प्रांतिरी शिकार रहा।

कुमारी। योगेन्द्र ने झूठे स्वर में कहा।
 महाराना वहाँ से हट गई। कुमारी ने सबको हट जाने का संकेत किया
 हर कुमार से कहा—राजकुमार मुझे माप क्षमा करें। मैं मापको पति रूप में
 ही ग्रहण कर सकी। मेरी दुर्बलताएँ माप क्षमा करें। मेरे वाल-स्वभाव ने मुझे
 वहाँ तक पहुँचाया परन्तु मर्यादा का मुझे पालन करना था। यह घटना
 प्रकस्मात् कहकर ही विख्यात होनी चाहिए। राजकुमार मापको बहुत बधू
 मिल जाएगी। इस मूर्खा के लिए दुखी न होना।

राजकुमारी शक्ति होकर चुप हो गई। योगेन्द्र उल्टी सास ले रहा था।
 कुमार ने कहा—क्षमा करना कुमारी मुझे यदि यह प्रपम से शार
 होता ।

कुमारी न बोध ही में चौंकर कहा—घरे। कैप्टन ने तो तयारी कर दी
 राजकुमारी के चेहरे पर एक साली भाई। वह अन्तिम बतोजना थी। दूर
 ही दाएँ उसकी श्वास बन्द हो गई।
 दोनों प्रमी अनन्त नीद में थे।

निबाह होना मुम्किन है उसका मिन्नाज बेइब है ।

'तब मैं वहीं का न रहूंगी ।

'पर तुम्हें मामूम है कि मेर सामन बिना बिन्नीकी नहीं चलता जा बहता हूँ उनपर भरोसा कर और मौज कर ।

इतना बहकर टाकुरने स्ना का हाथ पकड़ लिया । मन्िरा की गन्ध से स्त्री का मिर भिन्ना गया और उसने बतपूवक घृणा को रोक्कर कहा—घाप तो सखार म है पर मैं मुह निखाने सायक न रही यह भी तो सोचिए ।

बम्बर ! प्याऊ पर पानो निसानवाला से रानी बनी जाता है राड ! और नन्दे कर जानो है क्या फिर भूरासिंह को मुनाऊ ?

दया करो नहीं मैं मर जाऊंगी ।

'मरकर अपनी ही जान से जाएगी । जीनी रहेगी और मेरी मर्जी के माफिक काम करगी ता मौज म दिन बट जाएग ।

'पर घाप दवावा करे कि घावकी नजर ता न फिर जाएगा ? घाप मुक्त दूध की मस्वी की तरह तो निखान न फेंके ?

'तब क्या बुझाये तक मैं तुम्हें पास जाऊंगा ?

'चार दिन बाँ क्या होगा ?

नई-नई विडियों फास-काँसकर साना ठेरा मगे घावर-मान बना रहेगा ।

'हाय ! मुक्त यह भी करना होगा ?

इसम दोष क्या है ? तुम्हें इनाम कम मिला है ! तू तो निहात हो गई है । इसा तरह मैं उस निहात करता हूँ जा मरी मर्जी के माफिक चलता है ।

गर तकरीर म जो लिना पा वह हुमा । और जो होना है वह होगा । मैं घापके भ्रवीन हूँ घावके बाहर नहीं ।

टाकुर का बाधे लिन गइ मद्य का बानत उठेसी जाने लगी । शमागिनी नारी घीर घीर मन की घृणा राककर एक गिलास पी गई । उतके बाँ ? बहु दुध कहने मीम्य नहीं ।

गराब के घूट गटागट पीकर टाकर साहज ने घरती म करवद पड़े हुए एक युवक को नात मारकर कहा—बनों र गुलाम ! मकूर धरता है चाकुर

उसके समस्त शरीर पर थी—वह मले वस्त्र पहने प्रतिगम भयभीत दृष्टि से भूमि पर पड़ी हाथ जोड़कर ठाकुर साहब से प्रार्थना कर रही थी। ठाकुर के हुक्म से वस्त्र ही वह प्राण को सरनी कि ठाकुर ने अपने दोनों पर उसकी छाती पर धर दिए। इसके बाद वे गिलास की शराब को गटागट पीकर बोले

‘हो रामप्यारी ! तुम हमारी भी प्यारी हो !

घनदाता ! दुहाई ! आप मा-बाप हैं। इतना कहकर उसने धीरे धीरे ठाकुर साहब के पर धरती पर रख दिए और पीछे को सरबकर अपने वस्त्र उभालकर बैठ गई।

ठाकुर साहब तब से आ गए। उन्होंने मुह तक बाट कर दो गिलास गटागट पीए और फिर अबला को धुरते हुए उठ सब हुए और गरजकर बोले—क्या रसता है रे भूरासिंह ! जनार दे दस !!!

भूरासिंह ने घनामास ही उसे अपने बलिष्ठ हाथों में उठा लिया और दूधरे दूधरे म ले गया।

बहु भ्रमभ्रष्टतावस्था में सुन में लपपप पड़ी करा रही थी। ठाकुर साहब ने एक हलकी साठ जमाकर कहा—क्या ? ठिकाने आई ?

कचण नत्रो में खुपचाप तापत हुए अबला वेदना से लडप रही थी। ठाकुर ने कहा—बोल ! मरा हुक्म टालेगी !

अबला ने कहा—सरकार ! अब तो पठ लुट गई जान बाकी है वह भी मे को आपको मस्त्यार है।

ठाकुर साहब ने पगाधिक हसी हसकर कहा—छिनाल ! तब इतना नखरा क्यों किया था।

स्त्री चुप रही। ठाकुर साहब धीरे धीरे चल दिए।

‘सरकार ! मेरे-आपके बीच गज्जा है !

‘बिचकफ तुम कि-वास नहीं आता !

‘शि-दगी निबाहनी आपके हाथ है !

‘कह दिया न कि रजपुरा गाँव का पट्टा मुझ दे दिया पाएया !

‘और मुझ बयोदियो में रहने को जगह मिलेगी ?

‘जब तक ठकुरानी नहीं भागी तब तक तो टीक है पर उसके सामने

निवाह होना मुश्किल है उनका विवाह बेवश है।

'तब मैं कहीं भी न रहूँगा।

'पर तुम्हें मालूम है कि मर सामने जिन्हीं किमीकी नहीं चलती जा बहता हूँ उसपर नरोड़ा कर घोर मोत्र कर।

इतना कहकर टाकुरन स्त्री का हाथ पकड़ लिया। मस्त्रि की गप से स्त्री का फिर निन्ता गया और उसने बलपूर्वक घृणा की राखकर कहा—घाप तो सरकार मर है पर मैं मुक्त निन्ता लायक न रही यह भी तो साबित।

कम्बल ! प्याऊ पर पानी निभानेवाली स रानी बनी जाना है राह ! घोर नरारे कर जाता है क्या फिर भूरासिंह का सुनाऊ ?

'दमा करो नहीं मैं मर जाऊँगी।

'मरकर अपनी ही जान स जाएगी। जीजा रूयी घोर मरा मर्जी के माफिक काम करगी ता मोत्र म स्त्रि कट जाणग।

'पर घाप यह बात करें कि घापकी नजर ता न फिर जाएगी ? घाप मुझे दूष भी मरवा का तरह ता निन्ता न फेंकेगी ?

'तब क्या बुझाये तक मैं तुम्हें पाम जाऊँगा ?

'चार दिन बात क्या होगा ?

नई-नई बिडिया फास-फासकर साना तरा दगी घात्र-मान बना रहूँगा।

'गप ! तुम्हें यह भी करना हाणा ?

इतमें दोष क्या है ? तुम्हें इनाम कम मिता है ! तू तो निहाल हो गई है। इसा तरह मैं उने निहाल करता हूँ जो मेरी मर्जी के माफिक चलता है।

'खर तकरार में जो निन्ता या वह हुमा। घोर जोहाना है वह होगा। मैं घापके अधीन हूँ घापक वात्र नहीं।

टाकुर का बाधे तिल गद मघ की बोवल उठली जाने सगी। शत्रुगिनी तारी घोर घोर मन की घृणा राखकर एक गिताम पी गई। उसने बा ? वह कुछ कहत सोम्य नहीं।

गठब के घूट गगण्ट पाकर टाकुर सात्र ने परती में करवड परे हुए एक मुदक का नात्र मोरकर बना—स्त्री र सुताम ! मंजूर करता है घात्रुक

संगाऊ ?

युवक ने परोँ म तिर देकर कहा—सरकार माई-भाप हँ चाहे बोटी बाट^{रू} खालिए पर धन्नदाता ! यह कुकर्म मुभसे नही होगा ।

कुकर्म ! भर हरामजादे कमीने कुकर्म कहता है ! दो सौ रुपये तो ब्याह में नकद लिए सौ भव गीने मे दिए । किसलिए ? गाव की बड़े-बड़े परो की बहुर गीना होकर पहले यहा डोक देती हैं तू एसा नवावजादा बन गया है ! इतना कहकर ठाकर साहब ने एक सात युवक के जमा दी ।

युवक ने गर्दन ऊची करके जरा करारे जिन्तु बेदना भरे स्वर में कहा—सरकार, चाह जान ले सँ पर जीते जी यह होने का नही । भावरू गरीब भमीर सभी की है । भावरू के सामने जान क्या चीज है ?

ठाकुर ने गम्भीर गजन से पूजाप—भूरसिंह !

एक लठबन्द गुण्डा कमरे म भा हाडिर हुआ । ठाकुर ने तत्काल भादेग दिया—दे साले की गोला-साठी दे ।

देखते देखते युवक क गोला-साठी बदा दी गई । ठाकुर ने कहा—कमीने कुत्ते ! तेरे सामने ही उस लुचवी की नगी करने बेभावह करणा । भूरसिंह ! उठा सो सा रे मुसरी की !

युवक भी भासँ जमने लगी । उसने लक्ष्मणर कहा—मासिब ! तुम्हारा नमक तो खाया है पर यह याद रखना कि मुझे बनिया-बामन न समझना । यदि मेरी इज्जत पर हरफ भापा गो मैं खून पी जाऊगा इसे याद रखना । मुझे मारते मारते भाप चाहे दुकब कर दें सब सह सूगा पर मेरी घोरत पर जो हाप लगा देगा उसीको जान से मार डालूगा चाहे पीछे फासी ही लग जाए । मुझे सेठ सोगों की तरह भपनी जान इतनी प्यारी नहीं है ।—इतना कहकर युवक ने इतने जोर से भपना होंठ काट डाला कि खून निकल आया ।

ठाकुर युवक के भापण से दाणभर के लिए सहम गया । इसके बाद उसने छूटी स चाखुब सेबर युवक की खान उयेदनी शुरू की । एक भयानक घातनाद से लिंगाए कापने लगीं । नर विगाब ठाकुर ने, जब तब युवक बेहोश होकर न गिर पडा भपनी मार बराबर जारी रखी ।

इसके बाद उसने भेडिये कीसरू गुराकर कहा—भूरसिंह ! उठा सा उध बदजात की देखें कौन उधे मेरे हायो स बचासा है !—सायात् प्रव-पूत की

तब भूरासिंह उधर को लपका ।

रात्रि का गहन अन्धकार को भंगकर, दौरे के घुपते प्रकाश में बउते हुए नर पिशाच भूरासिंह को लठ सिए भीतर घुसना देखकर वृद्ध नाइन और उसकी नवागता बधू के प्राण मूस गए । बेघारी सुबह से दोनों भूली बठी थीं—मन्न का दाना भी उनके कण्ठ से उतरा न था । प्रातःकाल ही से उसके लडके को ज्योदिया में बुता लिया गया था और वह घब तक लौटा न था । उमपर क्या बीता हागी इसका दाना प्रसहाय नारिया भाति भाति का कल्पना कर रही थी । नव बधू का गौना होकर बल ही घाया था । पति के उसने घाँघी तरह दसन भी नहीं किए थे । फिर भी वह भयङ्क देहाती अन्वेष बालिका हृदय की पडवन को रोकर क्षण-क्षण पति की प्रतीक्षा कर रही थी । वृद्धा की बाठ सो कही क्या जाए, जिसने बीच बप से उमीको देखकर गरीबी और बुडापा पाया था । भूरासिंह को देखकर दोनों सक्ते की हातत में हो गई । उसने घुसते ही कहा—वह ज्योदिया में जाएगी ।—वृद्धा पर वज्रपात हुआ ।—उसने सपक कर बहू को छाती में छिना लिया । जिस अनुभय और करुणा की दृष्टि से उसने बज्र-मुख्य भूरासिंह को देखा उससे परपर भी पानी हो जाता पर उमने अपने बलिष् बाहुओं से बालिका को सीधकर उठा लिया । उसी क्षण कदाचित् बालिका मूर्छित हा गई और एक क्षण भी उसके मुख से न निकला । वृद्धा पीछे दौडी पर एक साठ छाकर वह कही डर हो गई । भूत भूरासिंह अभागिन अरक्षिता बालिका को लेकर उसी अन्धकार में विलीन हो गया । पृथ्वी पर कौन उसका रसक था ? लोग कहते हैं परमन्वर सबकी रसा करते हैं पर इन नर पिशाचों की नित्य की करतूता को न जान क्यों परमन्वर हाथ पर हाथ परे बठ देखा करता है !!!

रात के ग्यारह बज गए थे । अभागिनी बालिका उस अंधेरे और मुनसान कमरे में परती पर अत्यन्त उन्मत्त बठी थी जिसमें वह कद की गई थी । उस अचट औरत के सिवा—जो उसे दिन में दो बार खाना दे जाती थी—कोसरे व्यक्ति की सूरत उस तीन दिन से दखना नहीं नसीब हुआ था । हर बार अन्धेरे खाने उसके लिए बहुरस जाती थी और फिर उठा ल जाती थी । बालिका

मैं कहता हूँ कि सीधे-साथे घर की बहू-बेटी की तरह रहो करना छोट पूगा
—भाप को लेकर रहना ।

बहू-बेटी की तरह ही रहनी विश्वास रखिए । पर भापको भी इच्छत
दार रईस की तरह रहना चाहिए । रियाया की बहू बेटियों को अपनी बहन
बेटी की तरह समझना चाहिए । दारान की मूत्र समझकर त्यागना चाहिए ।
पढ़ने लिखने रियासत की देख बाल और गाँवों की उन्नति में मन लगाना
चाहिए । तमाम लुच्चे लुझाबे टुकड़-कुत्तों का पास से हटा देना चाहिए ।

मैं कह चुका मरे जो मन में भाएगा वह कम्मा मुझपर तुम्हारा
हुकम नहीं चलगा ।

मैं भी तो वह चुकी हूँ कि भाप मनमानी न करने पाएँगे । भापको सभी
पुरी बातें छोड़नी होंगी और भादतें बदलनी पड़ेंगी ।

भाप मैं न छोड़ूँ ता क्या करोगी ?

जो उचित होगा ।

क्या मुझसे सड़ोगी ?

भाप भावश्यकता हुई ।

मैं बड़ा जालिम हूँ !

भाइल्ला जालिम न रहने पाओगे ।

मैं तुम्हारी चाबुकी से खाल उठा खालूगा ।

तब यही भापके साथ किया जाएगा ।

क्या कहा ?

'यही कि भापकी माम भी चाबुकी से उखाई जाएगी ।

और यह कौन करेगा ?

मैं आज ही उमका बन्दोबस्त कर लूँगी ।

तुम औरत हो या चण्डी ?

मैं भापकी घमपली हूँ ।

मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ । जो कर सको करो । देख किस औरत मुझ-
कम्मा करती है ।

जो भाजा अब भाप जा सकते हैं ।

‘रामसिंह !

बाई जी राव ।

अपने कितने भ्रातृमी यहां हैं ?

कुल सोलह हैं ।

पिताजी को लिख दो आठ मजबूत बिवासी गोरखा और भेज द ।

और प्रत्येक को छ महीने की तनख्वाह पेगगी दे दें ।

ओ हुकम ।

और सुनो ।

‘जी ।

‘रामप्यारी हवेली के भीतर बंदम न रखन पाए, यदि आए तो उस नगा करके धाबुका स पिटवा दो और बाहर निजान दो ।

ओ हुकम ।

सरकार का इस मामले में कोई हुकम तामील न किया जाए ।

यहूत अच्छा ।

‘दो भ्रातृमी सरकार क पीछे हर समय रहें और ज कय नया करते हैं कहा जात है—निगाह रखें ।

‘ओ हुकम !

बाई और नई बात है ?

बात तो बड़ी सगीन है परन्तु

‘फौरन कहो ।

अपना नाई हास में मुकलावा (गौना) करने लाया था । सरकार ने बहू को बल उठवा मंगाया रात भर बड़ा हो हुआ मचा । नाई दो-तीन दिन बन्द रहा । उस बहुत मारा भी गया । बहू ए जी जी से फरियाद करने जा रहा था । उस पाच हजार रुपये देकर चुप किया है । सरकार ने हुकम दे दिया है कि नाई के घर स हवेली तक पक्की सड़क बनवा दी जाए । बहू दुमबिला मकान भी उसे बहू दिया है । गांव में इस बात की बड़ी चर्चा है । सरकार की बड़ी बानामी हो रही है ।

हू अभी ए० जी० जी को मरी तरफ से तार दे दो मैं स्वयं मिलना चाहती हू ।

वासना शराब और कमीनी हलकतें हैं। श्रीमान् ! मैं आप ही से यह पूछती हूँ कि यदि कोई रत्न ऐसा ही नुम्हा हो—उसमें ऐसी नीच भावतें हों जिनसे सारी प्रजा तग भा गई हो—पर आपके पधारने पर स्वागत सत्कार खूब कर दे राजभक्त भी बना रहे खिताब भी लेता रहे तब आप उम्मे क्या बुरा समझेंगे ? मुगलों का जमान म भी वादगाह रईसों से सिर्फ अपनी यसूली का ख्याल रखते थे वे कसा जुम करते हैं इसकी ओर उनका ध्यान न था।

‘रानी साहिबा ! आपकी बातों का मुझपर बड़ा असर हुआ है। मैं इस पर विचार करूँगा। परन्तु यह तो आप भी मानेंगी कि इन सब बातों को जाहिर में नहीं लाया जाता, खासकर स्त्रियों चुपचाप सहती रहती हैं। फिर गवर्नमेंट कर भी क्या ? और आप अगर नाराज न हों तो मैं कहूँगा यह विषय गवर्नमेंट पर निर्भर करने का है भी नहीं। यद्यपि हिन्दु-सौं स्त्रियों के अधिकारों में संकुचित है पर सन्तान के अधिकारों पर उसमें बहुत काफी विस्तार किया गया है। अगर स्त्रियाँ हिम्मत करें अपनी सन्तान का पक्ष लेकर ऐसे रईसों से लड़ें तो उन्हें गवर्नमेंट बड़ी सहायता कर सकती है। कारण रियासत हमेशा रईस के खानदान की बपोती होती है। यदि गवर्नमेंट को यह यकीन हो जाए कि रईस की हलकत से वह रियासत इस तरह नष्ट हो रही है कि उसके खान दानी हकों में सराबी धाने का अन्धेरा है तो गवर्नमेंट निस्तान्देह हस्तक्षेप

।
मैंने भी यही विचार किया है। मैं अपनी सन्तानों के पक्ष में आपसे न करती हूँ कि आप रियासत को कोर्ट आफ वार्ड म कर दें। टागोर साहब की रक्षा के योग्य नहीं हूँ।

आप मेरी पुत्री के ममान हैं आपके हित के सभी पहलुओं पर मैं विचारूँगा। रियासत को कोर्ट आफ वार्ड म करने से रियासत का भला नहीं होगा व स्वयं ही सोचें कि आजादी एक चीज तो है। ब्रिटिश गवर्नमेंट इस बात पर भी नहीं है। इसलिए जब आप कहती हैं तो मैं बड़ी घमकी रियासत को कोर्ट आफ वार्ड म करने की दूंगा तो पर वह कोरी घमकी ही होनी समझता हूँ इससे आपका काम सिद्ध हो जाएगा यदि आप जरा बुद्धिमत्ता काम लेंगी।

‘आपपर मैं पूरा भरोसा करती हूँ। और मैं आपका बड़ा बल समझती हूँ।

यह तो नामुमकिन है कि मैं माय स्त्रियों की तरह सब कुछ देखू। मैं इस रईस का टोक करूंगी और रियासत की नष्ट न होने दूंगी। आप इपाकर मेरे सद्दुहय का स्वागत रखें।

अवश्य मैं पूरा स्वागत रखूंगा। आपसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हू। आपसे मैं फिर कहता हू कि आप अपने पिता की तरह ही मुझपर विश्वास रख सकती हैं आपके किसी भी काम आने पर मैं बहुत प्रसन्न होऊंगा।

रानी साहिबा ने खड़ी होकर साहब को धन्यवाद दिया और विदा हुई।

पोलिटिकल एजेंट ने बन्दर के समान लाल झुंड की ऊपर उठा और बिल्ली के समान कड़ी धावा से धूरकर कहा—ठाकुर साहब बठ जाइए, बड़ी बुरी खबर है।

'खर सा है हूबूर ! उन तिन पार्टी में भी तारीफ नहीं साए। बड़ी इन्तजारी थी। हूबूर के लिए सब तरह का सास इन्तजाम।

मुझे इसका खेद है। परन्तु अभी तो जो बात मैं कह रहा था उसपर गौर करना होगा। ए० जी० जी० साहब का पत्रांन भ्राया है, उन्होंने लिखा है कि रियासत कोट आफ वाइस पर ली जाएगी।

ठाकुर साहब की फूब निवत गई। उन्होंने घम्म से कुर्सी पर बठकर कहा—किस कसूर पर सरकार !

आपकी फिजूलखर्ची और बदचलनी की शिकायत पहुची है। रियासत आपके हाथ से ले ली जाए, इस बात की हितायत है और मेरी राय पूछी गई है।

मगर हूबूर ! शिकायत की किसने ?

'किसीने भी की हो भूठी तो नहीं है। मरे ख्याल में तो आपकी सब नेसा-ओसा तयार करना चाहिए।

तब क्या हूबूर भी अपनी रिपोर्ट मेरे खिलाफ दोगे ?

आप जानते हैं मैं अपनी जिम्मेदारी पर कुछ भी नहीं कर सकता और उस बात से भी आप इनकार नहीं कर सकते कि मैंने आपकी धारदा खतावनी की है।

'तब क्या हूबूर न ही शिकायत की है ?

'नहीं सास रानी साहिबा न।

रम वही रोना दो । इसमे कौन हैं ?

रामप्यारीजी हैं ।

उहे बाहर निकालो ।

सरकार का हुक्म है कि

रानी साहिबा का हुक्म है कि इह जहा देखा जाए, नगा करके कोढ़ लगाए जाए ।

मगर सरकार

'उहे कौरन बाहर निकालो इतना कहकर एक गौरसे न पर्दा खींच लिया । रामप्यारी बटिया खरी की पाशाक पहन बठी दरघर कांप रही थी । क्षणभर में उसे नगा कर दिया गया और चाबुक की मार पठन लगी । प्रभायिनी नारी रोती-फसपती वहां से भाग गई ।

उहरो इस बरस सरकार कचहरी कर रहे हैं मुलाकात नहीं होगी ।

रामप्यारी बदहवास थोड़ और अपमान से नागिन की तरह खपेट साकर कचहरी में बढ़ गई थी । नीकर के उपमुक्त वाक्य सुनकर उसने जोर से नीकर का गला पकड़कर दवा डाला और दात किटकिटा कर बोली

'तेरी और तरे सरकार की ऐसी-संसी । दुष्ट हृदयारा पापी ! पहले इच्छत उतारता है पीछे यों छोड़ देता है । भ्राज में उसका मून पीऊंगी । यह पहरे दार को धकेलकर कचहरी में घुस गई ।

सब लोग हैरान थे । रामप्यारी ने जमानिनी की तरह दरघर हाथ में लेकर गालिया बकती दरवाओ के काध फोड़न और मेज-कर्सि उलटनी शुरू कर दी । पापी हृदय ठाकुर हकना-वकवा हुमा देखता रह गया । समन समझान की चपटा की, तो वह उसपर टूट पड़ी । दाढी और मूछो के बाल उल्लाड निग । ठाकर साहब कचहरी छोड़ भाग भ्रमन लोग मेज के नीचे छिप गए । वही मुस्लिम से रामप्यारी को कूच में किया गया ।

रामप्यारी न ए० जी० जी० के यहा मुजामा दापर कर दिया । ठाकुर साहब को दस हजार रुपया नकद देना पडा । इस समय रानीजी ही रियासत की सर्वेसर्वा हैं ।

फिर

इस कहानी में परस्पर मिल पत्नी के माध्यम से मानव मन के गुन्द-गुन्दोन्नत मानवभो का हृदयग्राही विषय किया गया है ।

५

यह सम्मती चार दिन से घाई है पर मिली घाज है । मोह ! देखने मे नगा छून में नगा बार्ता में नगा घास जान और नस-नस में नगा । मूर्तिमती मरिा है । भयानक भनि भयानक किन्तु मायामयी ! प्यारे में तो विमूड हो गया हू । जगत् में जो कभी न देखा था न खया था—भरे ! कल्पना और भागा स त्रिस्रुत दुलभ—दुघट ! छनिया तू कब से पी रहा था चुपचाप और नीरव ! न कभी कहां न भू खुलने िया । यही आश्चय है कि भय तक में इसके बिना कैसे जीविग रहा ! यह जगत् ही कैसे जी रहा है ? बाह रे वसन्त ! कसी वायु बह रही है ! वह सज्जावती कुसुम-कलियों के पूषट की चीरती हुई उन्हें खिलखिलाकर हसानी हुई उनके हृदय का सारा रस एक ही सास म पीकर मेरे घर म धुम पड़ी है । यह कसी गुन्द है ! भरे कितना घालस्य इसने बछेरा है । तुम क्या जाग्रत रहन हो इस वसन्त म ? यह भसम्भव है ! भास तो खुलती ही नहीं । मैंने कह दिया है समझा दिया है ।

आ प्यारी मयनों बसे पलक डोप तोहे लूँ !

ना म देखूँ और को ना तोहे देखन बूँ !!

बाह रे स्वाद ! लास प्राणों को देकर मैं इसकी एक बूद लूंगा । और और और भरे ! हाय ! हाय ! सब सब सब ! क्या इतना ही है ! और एक बूद भी नहीं रहा मैं नहीं मानूंगा इसस न खलगा । मैं स्वय भडे का मूह सोलूंगा मैं स्वय पीऊंगा । हाँ जोर-जुल्म छन-बल सब तरह छककर तृप्त होकर और फिर इसीम एक गीता लगा लूंगा— मैं डूबूंगा चाहे लास बार मरना पडे ।

हे प्यारे ! तुम घाघो तो इस वसन्त मे कंसा स्वाद है कसा रस है, तुम

विश्वासी ! विश्वासपात न करना ! मैं आता हूँ !

—५—

प्रिय !

- बड़ा सुख है जब मैं रात दिन चाहे जब निस्संकोच रो नेता हूँ। कोई सुननेवाला नहीं देखनेवाला भी नहीं ! सन्नाटे की रात में नितान्त दूर टिम टिमाते तारों के नीचे स्तम्भ खड़े वाले-जाने वृक्षों के नीचे घूम घूमकर मैं रात भर रोता रहता हूँ। यह मेरा अत्यन्त सुखभर काय है। इसमें मेरा बड़ा मन लगता है। और इस पवित्र रुदन के लिए ये स्थान उपयुक्त भी हैं। निकट ही शीतल रो रहे हैं। कुत्तों भी कभी कभी रो पड़ते हैं। धुंधू बीच-बीच में रोने का प्रयत्न करता है परन्तु मरे रुदन का स्वर तो कुछ और ही है वह अन्तः स्तम्भ की प्राचीन भक्ति का विदीर्ण करने के एक नीरव लहर उत्पन्न करता हुआ नीरव लय में खीन हो जाता है। उसे दखने की सामर्थ्य किसमें है ? नींद अब नहीं आती है। दो महीने रात दिन सोता रहा हूँ। जब नींद से हिसाब साफ है। हा बटाई पर भीधा पड़ जाता हूँ और भास बनकर धूपचाप कछ सुनने की पछटा करता हूँ। तब रात्रि के गभीर भयभार का विनीत करने एक अस्फुट ध्वनि सुनाई देती है और मैं विवश होकर उसमें स्वर मिलाकर विहाग या मालकीश की रागिनी में रुदन-गान करने लगता हूँ। आमुष्मा के प्रवाह में रात्रि भी चलने लगती है। तब हठात् वह उसी विमल परिधान में आती है और पहले वह जैसे बलपूर्वक भर कागज-पत्र उठाकर मुझे सोन पर विवश करती थी उसी तरह मेरे उस संगीत को उगारकर रख देती है। पर ज्ञाय ! जब मैं सो नहीं सकता ! भास फाटकर देखता हूँ तो भकेला रह जाता हूँ। मैं वेप रात्रि इस वृक्ष के नीचे उस वृक्ष के नीचे घूम घूमकर काट देता हूँ।

—६—

सू०

न कहने योग्य बात को कैसे कहूँ ? परन्तु नम-नस में रमी हुई बात को बिना कहे कैसे रहूँ ? तुम्हारा यह सुख देखने-सुनने की वस्तु नहीं। इसका अन्त हो, यह मरम हो। पुक्ति और तक बहुत हैं। भावनाप्रा की नदा उमड़ रही है

स्मृतियाँ हिसारें ल रही हैं परन्तु सबके ऊपर तुम ठर रहे हो । मैंने तुम्हें छोड़ घोर कब किसे दसा है ? मरें प्यारे बंधु मुझ धाज भासब तरफ से प्रधा बनकर तुम्हींको देखन दा । अतीत क महागर्त में तो विश्व की समस्त विभूतिया हैं पर वतमान शरणभगुर जन्तु वहां जाने स प्रथम वहा की सत्ता ही क्या रखती है ? उपर का ध्यान छोड़ो । उस श्ति तुमने मरा अनुरोध माना था धाज मेरी इस विपुल्लहरी को मानो । वह शम्भे की कली में समान कोमल घोर कश्चे दुग्ध के समान स्वच्छ बालिका भाग्य-बल स तुम्हारे लिए प्रस्तुत है । वह इसकी सगी बहिन है । प्यारे ! परम प्यारे बंधु ! तिनके का आसरा रहते इच्छापूवक मत डूबो । जीवन का मध्य मुवावस्था है, वह शरणभर के लिए प्रथम प्राणी को स्वर्ग क प्रथम मंजार स दा गई है । उसे योंनष्ट न करो । मैं क्या कहूँ ? मुझ भय है मैं निष्ठुरता कर रहा हूँ । परन्तु मैं इस बात को जानता हूँ । बोलो—क्या तुम इसका अनुरोध रखोगे ?

तुम्हारा,

—५०

प्रिय !

तुम्हारे पत्र का प्रत्येक अक्षर मूर्तिमान काल की तरह सिर पर मढरा रहा है । इससे कैसे रसा होगी, कब कथ प्रहार होगा ? कौन जानता है । भावना की बरसात में साससा की दूध नदी उमठ खली है । समय का अपूर्ण पुल टूट कर बहा चारता है । बहाव की बूसरी बोर पर वह एक चट्टान की काली-कासी बूट जिला दीख रही है । वहाँ स सोक-साज मुझ पुकार-मुकारकर सावधान कर रही है पर धारमवेत्ना स भग-सघातन तक मरे लिए अभाव्य है पर पर—हे भगवन् ! क्या यह समभव है ? भोक् ! कंसी तेजी से वह कृष्णकूट निकट धा रहा है । इस भीषण प्रवाह में धब एक ही धक्के में सब समाप्त है ।

जीवन अभी है बहुत है । हृदय-नीप में भी अभी काफी स्नेह है—सब नहीं जल पाया है परन्तु परतु—हे मित्र ! मुझ दीन को पतितन करो—तरसाओ मत ! ठहरो मैं मृत्यु या जीवन दो में स एक वस्तु को चुन लेता हूँ ।

—मू०

वह घाती है मानो कहीं गई ही न थी। बातचीत और प्यार का जो प्रसंग बनता है वह प्रारम्भ और समाप्ति से रहित सिर्फ मध्य भाग से समझो। मध्य भाग से। हाय तुम नहीं समझोगे। उधर गए हृषों से तुम्हारी मुलाकात ही नहीं है। सभी तो तुम एसी सुख घातों जवान पर न घाते हो। मुझे जरा उधर जान दो म प्रमाणित कर दूंगा कि म तुम्हारे लिए कितना उदार हूँ।

—सू०

सू०

किस लोक की तरफ तुम्हारा लक्ष्य है ? और तुम सवथा प्रत्यक्ष इन्डियाय सन्निवप ज्ञान की अपेक्षा किस कल्पित लोक को देख रहे हो ? तुम अमर अविनाशी अल्प और लीन आत्मा के विषय में कौन-भी ध्यान धारणा कर रहे हो ? सुख से भ्रम मूढ़े रहे हो—दुःखवाद में पड़े हो वह न अनुरक्ति है न विरक्ति। तुम्हारा विमानवाद क्या यही है ? रूप-मुखा वियो ज्ञान को सात मारो उभक्त रहो अविनाश दिन यो व्यतीत करो। दसो जसा वह रूप है इसे हवा न मुला छोड़ तुम किस भावना में दूबे बठे हो। वह टण्डा और बर्बाद हुआ जाता है।

—प

प्रिय !

यह उम्मत हास्य तो मुझ भार डालेगा। विजती घमकती है और बादल रोते हैं। किसी भी तरह में इसके साथ नहीं हम सबका। हास्य मेरे लिए हास्यास्पद है। वह समाप्त हो चुका। इतने धाब ? इतनी बदनाए ? इतना भार लेकर किसमे हसा जाता है ? जब म हमला था तब किसकी मजाज थी कि उसे रोक सके। मास्टर के हजार डाटने पर भी हमी नहीं रकती थी। पिता कार-कार कहते थे—भर बेटा इतना नहीं हसा करते। हाय ! के दिन गए। वे दगाबाज दिन इस गडे में डकेल गए अब क्या होगा ? मेरा हृदय रो रहा है मानो उसमे नामूर हो गया है जिसमे से रक्त का घट्ट करना बह रहा है। जागरण की अपेक्षा स्वप्न में सुख मिल रहा है। वास्तविक वस्तु की अपेक्षा कल्पना मीठी दीसती है। धात्र ! उस अनन्त में इतनी दूर—वह क्या अमव रहा

है। प्रलय ही वही है—पर इस अधम पापिय शरीर को लेकर म वहां जा कैसे सकता हूँ ? वह स्वर, जो प्रति क्षण मुनाई देता है कस इन धम-धगुधों से दसा जाए। इस धात्मा का शरीर मे बिच्छे कब होगा ? कब ज्ञान की धाराएं जगत् भर म अपने इयेय को दूध साणगी—यब कब कब ?

धमकती हुई बिजली के बीच से झरझर बरसने बादल तो बड़े सुन्दर दीख पड़ते हैं बिल्व जब वह हमनी है तब मैं रोता हुआ क्यों नहीं धाया लगता ? फिर भी जममें इतना मुख मिलता है। उम दिन इसे दसव ही हर्ष के मारे सोहू नाच उठा था। दसते-दसते पेट ही नहीं भरता था। पर आज इससे बरला हूँ। इसकी वे कटोरी-सी भावों नस धर की तरह मेरी धोर घूरा करती हैं। हाय ! इतनी प्यास इमे किम रम की है ? मैं भी तो जवान हुआ था। सायद इसनी प्यास मन कभी नहीं देखी थी। मरे पास सग ही रम का टोटा रहा पर भव तो शिवाला है। लोग पहने हैं कि मैं धया रहा हूँ पर म रत पावकर जी रहा हूँ। तुम कहत हो रूप ! धर यह रूप तो धूप है। धूप क्या सदा शरीर को सुहानी है ? उमके निग समय चाहिए, श्चतु चाहिए धोर शरीर चाहिए। धोप्य का यह धूप क्या मेर जैसे धायन के तापने की वस्तु है ? म मानता हूँ स्नेह है बहन है। पर मानो वह किमी धसूत का धुधा जस है पीने की तरफ प्रवृत्ति ही नहीं होता। या कोई दारुण रोग पज नहा बुमन देना। कहीं मन नहीं लगता कुछ धाया नहीं लगता।

—सू०

सू

पज पढ़कर इच्छा हुई कि सीधा धाऊ धोर फिर हम दोनों उम प्राचीन बाल-काल की तरह नगा-स्नान करने चलें बिल्वु लौटें नहीं वहीं रह जाए।

तम्हार दुष का यह दुषय विषय मेर समझने का विषय सायद नहीं। तममें रूप है गुण है पन है ऐश्वर्य है परी-सी सुन्दर स्त्री है। हाय ! यह पाकर तुम मृत्यु कामना की धोर इतनी तीव्रता स बढ रह हो कि भय लगता है ! क्या मृत्यु एसी सुखकर वस्तु है ? जगत् को दसा कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसीकी प्राप्ति में धमफल हो लोग मारु-कामना करते हैं परतुम उन्हें पाकर भी मारु-कामना करते हो। यह क्या बात है ? यह मृत्यु-सुन्दरी कौन है ? किस

प्रणय-वध

रसमें प्रणय के बंध का एक बन्ध संशयमय चित्र दिया गया है ।

घो प्यारी ।
तम भव विदवासपातिनी हू ।
उस मुझमें ?
जिसकी नस-नस में तुम थी ।
बस एक रात में ?
उम भ्रमकार के तुच्छ पटल में
यद्यपि मैं—
सीट रहा था प्रति प्रनात में भातुर ।

मन से
पह रूप रागि अपनी तुमने
जो मरी थी—
उम तन्वर की दे डाली
जो मरा पहा है निकट द्वार के देखी !
देखी यह ठेरु घुरा
जिसे मैं अभी धार दे लाया हू—
जिससे तुम्हें घट्ट कम ही
भव
सुन्दर सूर्योदय तुम देख सकोगी कभी नहीं

सन्नाटा है ।
भव कौन महा बटा है ?
जो मुन तुम्हारा भन्दन ?
श्रान्त ग्रामवासी भव मुखद मीद सोत है ।

त्रिदे !

मरने से पहल

तुम्हें देखने का न करेगा कोई ।

क्यों क्या छानटाती हो ?

मैंने जब सोता पाया

दोनों मरणात् कुछ बाध लिए घोर से ।

दोनों में एक-दूसरे बांधे हैं हड्डि से शम्भा में ।

त्रिदे !

अब सोया फिर-निगा में ।

बसा वह धरिण कौट सोता है ।

किन्तु

प्रन मधुर है

घोर तुम तो मेरे लिए मधुर से कहीं अधिक थीं ।

पर,

बहु प्यार कसा था ?

त्रिसको

मरी आँखें मन्वी करने को खरए धूस दे शमी

जरा इन अक्षरों का मधुरस तो दो ।

जो अति प्यारे हैं

हा हन्त ! किन्तु विवासापात्र कर चुके ।

उस फिर प्रयास से पहल

बस एक बार फिर आत्म-अभय कर दो ।

अपि तुम अब भाष नरक-वप पर हो

पर, जीवन का उत्कृष्ट गहन आनन्द तुम्हें प्रकटित है ।

आ प्राणाधिक ! ओ अत्य वयस्का ।

ओ अस्तुष्ट बुन्दरसी प्यारी ।

सदा फूल की तरह मल से रखा था मने तुम को
 किन्तु भव
 इन बातों में क्या है ?
 उसके प्रति—
 जिसके जीवन की घड़िया इति हो चुकी

मैं मारूंगा ।
 पर भीत न हाना
 या प्राण-धन्सभ ।
 यह मर्यु तुम्हें कुछ जतना कष्ट न देगी ।
 जितना तुमने
 उस एक रात के लिए दिया मुझ पति को ।
 निदयी वहा
 यदि साहस हो—
 मुम ।
 जिसने क्षणिक स्वाद के लिए मेरे जीवन को नष्ट किया ।

दखो तो प्यारी ।
 उस खुले द्वार में दम्भा
 के स्वर्ण किरण रवि की कसी सुन्दर है ।
 बुरस्थ नाल गिरि शिखा देखता हूँ व
 ये पीले-पीले पके सुगन्धित मधुर घाम भुक् भूम रह है ।
 य मुमने सीचे थे ।
 ये पके मधुर फल सद वृक्ष तो दरो ।
 किन्तु तुम्हारे लिए नहीं ।

य हिमगिरि शुभ्र गिम्बा ।
 नीलाम्बर में कसी शोभित हैं ।

दसो

धो प्यारी दसो

धव ये प्रीत्य धाम से तप्त हुई विषलेंगी ।

पर हाथ !

तुम मन्व की भांति न देख मरोगी ! !

धस धव से धागे

यद् जगत् तुम्हारे लिए समाप्त हुआ ।

धव धनन तरु—

तुम्हें धकेल निश्चल सोना होगा ।

हा तुम्हें

आ एक रात भी सो न सकी थी,

मद्यपि म सूर्योदय से पूव धा रहा धा ही ।

वह परो धिल्ल भिल्ल टूटी बीणा ।

व विल्लरे हैं शृंगार दिम्ब ।

धोर तिमो उन्हें धुधा धा—

वत् मण्ड-मण्ड ति-चेष्ट पडा है यह ।

ममूण रात्रि वह उल्लसित धानन मद्य धीकर धा ।

इन प्रभात में बिल्लु वही उल्लाम मुक्त भी मिला ।

जब

दग दृशाण की धार हृदय के पार गई ।

मीमी रसा बनी ।

मरे इन निधिर विकल्पित हाथो ने उस उल्लय रस धारा म धम्वर म

मया धनुभूत किया ।

धा प्यारी ।

तुम्हें बनना होगी ।

पर प्रम-बिन्दु का भन्तिम स्वाद यही है ।
 जब तक धीरजित हो सुन सो
 हा ये धधराली मृदु भलकावलिमा ?
 म वज्र मूल धा निद्वेष
 जो प्यार किया इस रूप-सुधा को और भकेसा एक रात को छो
 ओ परम मुन्दरी ।

यह शीतल लौह फलक
 ओ पुण्य गचिनी प्यारी ।
 इस कुसुमविनिन्दित तन को
 दाखुभर म सर्वाङ्ग शीत कर देगा ।
 भर ! नहीं ।
 इन धपर-पत्सवो का एक चुम्बन एक मधु चुम्बन दो ।
 अब भी इनमें कुछ रस है ।
 ये झूठे ये उच्छिष्ट धभागे
 वसे ही दीख रहे हैं ।
 जैसे कल तक देते थे ।

वह धनुज तुम्हारा सौट रहा होगा अब ।
 पर्वत-पथ से उत्सुक दर्शन का प्यासा ।
 पर अब देखेगा मृतक तुम्हें ।
 और मुझे पास मे सोते ।
 यह क्या समझगा ?
 क्या बध करने से पूव मुझे—
 वह जगा-जगाकर पूछेगा ?
 यह खेल कौनसा खेला ।

इसी-निए,
 मैं सौजंगा ।

इसी क्षेत्र पर निकट तुम्हारे निहारना हृदय के
 तब

जब मृत्यु तुम्हें शीतल कर देगी ।

जब यौवनपूर्ण हृदय यह

झीर घपल घघर

स्तब्ध झीर शीतल हूँगे ।

एसे—

फिर मेरे उल्लास स्वाम भी उन्हूँ गर्मा न सकेंगे ।

धीरे से

यह छुटा तुम्हारे मृदुल गात्र के धारदार होगा ।

फिर वहाँ शीघ्र पहुँचेगा—अन्तस्तल में

जहाँ—तडपती स्मृतियाँ—मधुर झीर बटु

विर शान्ति-साम कर रुदन समाप्त करेंगी ।

प्रम विजय का पुरस्कार अप्रतिम प्राप्त कर

गहरी निदिया सोऊगी ।

फिर प्यारी ?

दु स्वप्नोत्थित निर्वीच मुग्ध प्रमी हम ।

मिल प्रेम-मुषा पीवेंगे ।

टाचलाईट

इन ब्रह्मिणी में चरित्र-शैल्य और बुद्धि का एक अद्भुत विश्वरथ है ।

दुर्भाग्य एक अपरिशील और अपरिष्कृत वस्तु है । वह मनुष्य के जीवन का बहीलाता है । उम बहीलाते में मनुष्य के जीवन के पुण्य ही नहीं चरित्र-शैल्य और कुरमा का एक मानसिक कल्पना का भी लेखा ब्रह्मा घाना पाई एक हिमाव करके ठीक-ठीक लिखा जाता रहता है । लोग कहते तो यह है कि यह दुर्भाग्य मनुष्य पर लादा गया बोझ है परन्तु सच पूछा जाए तो यह मनुष्य की पाप बर्माई की पूजा ही है । पाप के विषय में भी एक बात बहू लाग पाप की गठरी को बहुत भारी बतते हैं । मेरी राय इसमें बिलकुल ही दूसरी है । वह न तो उतनी भारी ही है जिसे लादन की कुली या धकटागाड़ी की प्राथम्यता है न वह — जमा कि लोग कहते हैं—ऐसी ही है कि जो केवल मरने के बाद परलोक में ही धोती जाएगी मरने तक उसे मनुष्य लादे फिरगा । वह तो शरीर में हाथ परा के बोझ के समान है जिसे प्रादमी बड़े चाव से लादे फिरता है और अभी भा उबताया नहीं है । वह चाहे जब उसकी एक चुटकी का स्वाद ल लेता है और उसके तीव्र और बड़ब स्वाद पर उमी तरह उद्वेग है जब वह धन्य नदी पाती की चीजों के ब्रुस्वाद पर । नद्ये-पानी की चीजों से पाप में कवल इतना ही भ्रतर है कि नद्ये-पानी की चीजें महंगे मूल बिकती हैं परन्तु पाप मनुष्य के जीवन में घारा और विसरत पड़ा है और उसे जितना वह चाहे बटोरकर अपने पचापर लाग मन से रोवने के लिए कोई मनाही नहीं है । उगपर को घौकीदार जमादार मिपाही पहरा नही दे रहा है । बर हवा-पानी से भी अधिक गस्ता और मुनभ है । इसीसे मानव स्वच्छल भाव में युग-युग से उसका मेयन का घग्गामी रहा है । परन्तु अभी यह चचा यही तक रहे बिलहाल घाप हमारी पहानी मुनि ।

एक दिन सृष्ट्या समय धनम्मान् ही वितय की उममें भट हा गई । वितय के लिए यह साधारण घग्ना थी । जीवन के पौर पर ही नम विपुल होना पड़ा

दना का पाप पति का दुभाग्य हो जाता है। उनी दुभाग्य न दिनय को स्वामाविक्र नने रहने गिना। इन्द्रियों की मूख की ज्वाना न उच इपर-उपर देखन ही न गिना। जो निना उमने साया जो बचा फेंक गिना। मोहन या बेतन या, विना या और निमम सनिक जीवन या जिसका व्यवसाय हा हिन्य है। बहा बीनन ननुक जीवन कहा ? क्या-बसी न जान बव रिठनी टकराइ पूर पूर हुइ और फेंक ही मइ—विस्तृत भी कर हा गइ।

परन्तु यह सुई भी न जा सकी। भावना की भीति ही उनकी रणक बनी। अनाथ बालिका दुभाग्य का बरसी में किसी हुई अज्ञात बधम्य का मूनामन माये पर लिए, नवयौवन क ज्वर को स्तन की पृन्तकें पढ़-मइकर दूर गिया चाह रही थी। यही सबने कहा या स्त्रियों का शीमाग्य दुभाग्य पुरपों क शीमाग्य दुभाग्य क मनन करत में बचनबामा नहीं। बहु अचना नाये भाव उता अपरि पात्र-यस्था न जान गई थी और अचन अभाग्य की अनिट अचन छाना न भी बहु अनिष्ट थी। बहु चुपचाप रोया गिना की दनिक परिवचा पूरी कर मृत माता के लिए एक बूद धामू बहाकर स्तन जाती भरती पर हृष्टि लिए बीनन तनुपों क मृतुन बिहू पकरी अमचमती नागरिक सडकों पर दनाजी हुई अचन बिकारिणो-आ। क्योंकि व मइकें वास्तव में उचक लिए नही मोटरों पर बचियों पर बचने वानों के लिए थीं। स्तन स सौमता बार ठारकोन की गर्मी स उमके समुए मुचन जात थे। पर पट्टबकर पिता की अख बचा बहु अचनी ही नो में सेकर उनपर प्यार क हाथ फरती। अचन यौवन के स्वप्न की मूचना की हा अचन ने उच यह अनुभूति दी थी कि शीमाग्य अचि होता तो कोई इन तनुपों पर इता भांति मुखस्तन करता।

पति का उमने सग्य तो गिना या पर तब बहु मुचती नहीं बालिका थी। पति क माप का मन उमन तब जाना नहीं। अच यौवन न गिना न मछार ने और नातुक स्वप्नों न पति की बरोदों बीनन और गिन्य मूर्तिपा उमके सामन गिन्य बनाना और गिनानी प्रारम्भ कर दीं। अच बार बहु उन मूर्तियों के माप बेचकर हजी स्वा मवसा। और उनके दूट जान से पूर पूरकर रोई। धीरे धीरे पार उचन अनुभव गिना कि मन के भाजन सटोस धरोर की कृष्टि नहा होजी। गरीर क लिए ठास पति चाहिए—गरीर पति।

दिन स ज्योही उमका अहस्मात् साक्षात् हूमा उसने पट्टी ही हृष्टि

में उसकी भूखी माँखों की याचना को जान लिया। उसने चाहा याचक को कुछ देकर सुखी करना चाहिए। उसने यह भी अनुभव किया कि कुछ देने से कुछ मिलेगा भी सम्भवतः सुख। परन्तु उसको संस्कृत आत्मा ने सभी उसे सावधान कर दिया कि नहीं नहीं। एसा देन लेन किसी भी स्त्री-पुरुष में ही नहीं सकता जब तक वे पति-पत्नी न हों। उसकी भीखता घील और सस्वार सब मिलकर उसकी प्रवृत्ति का विरोध कर उठ। इधर विनय की याचना सीमा लाघ गई। वह अपने सम्पूर्ण पौरुष को बनाहट करके निरीह भिखारी की भाँति दीन यत्नों पर उतर आया। वहिए वह सरल सरल कोमल बालिका अब क्या कर ? देने ही के लिए जिस सम्पदा का भार वह लिए फिर रही है उसे याचक सामने पाकर कैसे न दे ? फिर याचक की प्रिय मूर्ति जिसके दर्शन ही से सचारीभावा का उदय होता है और उसकी आतुर आभुल प्रायना वेदना प्रदान की ज्वाला का दाह आर्षा की गम पानी की बूँदें ! वहिए भाप ? सामने घर को भाग में जलता देखकर हाथ में पानी भरा घड़ा रहते कौन उस भाग में भोक देने के लिए आनाथानी करगा ? कौन पात्रापात्र का विचार करेगा ?

परन्तु लड़की ने सत्साहम किया दान का बोझा लादे ही रही। विनय ने से डालने की जितनी आतुरता थी दे डालने की उमस अधिक आतुरता हृदय में रखकर भी उसने कुछ दिया नहीं—दान का बोझा बोती ही रही। और एक दिन विनय से उसकी भी भरकर बातें हो गई।

क्या डरती हो मुझसे ?

'जिसे प्यार किया जाता है क्या उससे कोई डरता है ?

'तो दूर-दूर क्यों ?

दूर तो तुम्हीं हो।

तो तुम मेर निकट आती क्यों नहीं ?

'कैसे ?

क्या मुझपर विश्वास नहीं ?

फिर वही जब डर नहीं तो विश्वास क्यों नहीं ?

विश्वास करती हो ?

'क्यों नहीं !

'तो मर निकट घामो इतन निकट कि हम-नुम दो न रहें ।

किन्तु कैसे ?

'बापा क्या है ?

यही कि तुम मर् हो में घोरत ।

'म' के लिए घोरत घोर घोरत के लिए म' है ।

'नहीं नहीं ।

'तब ?

'पति के लिए पत्ना पत्नी के लिए पति ।

मर्यादा यह बात है ?

'क्या यह इसके योग्य है ?

'घोड़, क्या बुरा मान गइ परन्तु मुना है म' ही तो पनि होता है ।

'नहीं ।

'तब ?

पति ही पति हाना है ।

कस ?

'म' जगत् म बहुत हैं पति केवल एक है । वह है तब भी है नहीं है तब ! !

घोर म' ?

'वह है तब भी नहीं घोर नहा है तब भा नहीं ।

किन्तु

किन्तु क्या ?

'म' ही म पति की भावना की जाती है ।

नहीं पति में म' की भावना की जाती है ।

'तो स्त्री को पहले पनि चाहिए पीछे म' ?

हां ।

'घोर यदि पति पाछे मद न निकले ?

'तो लाचारी है । वह रहे ही नहीं तब भी लाचारी है ।

'भाह तुम्हारे मन में पति के लिए इतनी वेचना है ?

'पति के लिए नहीं ।

तब ?

तुम्हारे लिए !

'मेरे लिए नहीं ।

मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ ।

क्या मुझसे भी अधिक ?

हां !

तब दूर-दूर क्यों ?

बह लो दिया ।

समझ गया मैं आज स मन-वचन कम से कमपूवक तुम्हारा पति बनता हूँ ।

नहीं ।'

क्यों ?

यह कोई मर्यादा नहीं है !

तब मर्यादा क्या है ?

यह सब जानते हैं ।

'तुम चाहती हो कि मैं नियमपूवक तुमसे विवाह कर लूँ ?'

यदि यही चाहूँ तो ?

मुझे स्वीकार है ।

तो मैं मन-वचन से तुम्हारी दासी ।

'नहीं रानी ।

रानी भी सही ।

तो प्रिये घर ?

नहीं, नहीं ।

घर क्या नहीं ?

जब तक दुनिया मुझ पति-स्वरूप से तुम्हें न दे दे ।

किन्तु वह झूठा शिवावा है मैं आज देखता, नदान और दिवगत गुरुजनों० ।

के समझ तुम्हें पत्नी भाव से ग्रहण करता हूँ साधो हाथ दो ।

नहीं ऐसा न करो ।

यह मर्यादा से विपरीत नहीं है प्रिये एसा सदा होगा भाया है ।

'नहीं नहीं एसा नहीं ।

'नहीं त्रिप देवता सागी है यह स्तम्भ रात्रि नया का यह जीवन उज्ज्वल
यह चांगे-सी रेती और आकाश में हनत हुए तारे । आधो मरे निशट ।

'नहीं नहीं ।

'आधो ।

'नहीं नहीं नहीं ।

'आधो ।

'नहीं नहीं ।

'आधो ।

'नहीं ।

'आधो आधो ।

'न-न-ही' ।

'आ-आ-आ-आ-आ-आ

घोर इस प्रकार उसका मन-मन प्रारम्भ हो गया । वह अविनाशित बना
हा गया । जहाँ दिक्कत है प्रेम है परस्पर की एकता है वहाँ मन-मन बड़का
क्यों नहीं । वह बना हा गया बड़का ही गया बड़का ही गया । बत्तरव बत्तर
हूए एसा बन-बन करती हुई तहरे टिमटिमाते तार और आकाश के समान झलक
रेती उनक सैन-सैन का सागी रहीं । मानव जनपद के सामने इस सैन-सैन का
हिंसा रचन की उल्टे पुष्प नहीं हो गिनी । और एक दिन अघानक उसन
दशा उस मन-मन में अस्मानता-ओ भा गई है । उसे एक निमि अघानक एसा
झीठ हुआ कि उसन—वा यह समझती रहा या कि वह देती हो रहा है—जो
तिदा है उसका भार कुछ बर रहा है । सोचे निमों म सदेह मिट गया । उसने जो
दिना या वह सब बटू लाज गया । और उसन जो तिदा उसक भार से वह
एक निमि अघनरी हो गई ।

उसने बरले-बरले विनय से कहा
'यह सोच बड़का हो जा रहा है यह तुम्हारा प्रमोदहार है । इस सबस कह
दो । कोई यह न समझ कि पोरी की है ।
विनय न शिरोट क घुएं का नाचन बबाले हुए कहा—बिना म करो

भुटकी बजाते इस बोझ को नहीं बूबे के ढेर में फेंक दिया जाएगा ।

पर बोझा उसे डोना पड़ा । बूबे के ढेर में नहीं फेंका गया । वह उसे डोते डोते पक गई पीली पड़ गई, कमजोर हो गई । किसीकी भी उसपर मजूर न पड़े इसके लिए उसने बड़े-बड़े झूठ जाल भरसक घोर न जाने क्या-क्या किए । वह अब विनय के जितने पास भाना चाहती वह दूर हटता । जब बोझे की बात चलती । कहता—फिरन करो । वह झुम्झता भी उठता खीझ भी उठना डांट भी देता । उसे रोना पड़ा—पहले छिपकर सिसक सिसककर दहाक मार कर पछाड़ खाकर, धरती पर मिर पटककर ।

परन्तु कुछ हुआ नहीं ।

एक दिन स्कूस से भाकर उसने देखा कि घर में भ्रमचकार है सन्नाटा है दिया जला नहीं है । पिता को उसने पुकारा—पर जवाब नहीं मिला । दिया जलाकर दसा घोर उसका सारा रक्त पानी हो गया ।

उसने देखा बूबे पिता ने अपनी महायात्रा उसकी गच्छाजिरी ही में कर ली है । उसका मृत शरीर पड़ा है । उसने कठिनता से अपने को मूर्च्छित होने से रोका । वह झींझें फाड़-फाड़कर मृत पिता के विवृत मुस को देखने लगी । उनकी भ्रमछुली निस्पन्द झींझें देन वह उस मूने भंघेरे घर में भय से चीख उठी ।

परन्तु वह सब निरर्थक ही था । जीवन एक बडोर सत्य है । वह भीति, मातृकता और करुणा के यक्षीभूत नहीं होता । उसने भ्रान्तू पोछे, एक गहरी सास ली । उसने टार्चलाइट हाथ में ली और वह विनय के घर की घोर चलती । सडक गली और रास्त उसने पार किए । घाते-जाते जनों के उसे पक्के साने पड़े पर वह भंघरी भ्रमभ्रम गलियों में हाथ से टाच की साइट फेंकनी हुई भागे बढ़ती गई ।

गली के किनारे पर स देता । सामने विजली की रोगनी और गस के हड्डो से गली जगमगा रही है । बँड यज रहा है । बहुत-से स्त्री-पुरुष बढ़िया-बस्त्र पहने एक्त्र हैं । चांदी के बक सगे पान बांटे जा रहे हैं । गुलाबजल छिड़का जा रहा है । वह भागे बढ़ी । घोड़े पर दूल्हा था । उसने टार्च की साइट दूल्हे पर फेंकी । वह विनय था । क्षणभर को उसका छिर घूम गया । परन्तु भ्रमभ्रमात् ही उसकी वेदना और विस्मृतिवा मुस्करा उठी । एक मुस्मान की

मसक उसके होंठों पर आई। विनय ने देखा। धीरे से मुश्किल एव साभी मित्र न रहा—यह इस वक्त यहाँ क्यों ?

मित्र ने पूछकर बताया। यह कहती है विना मर गए उनकी धरती जग पर पर पड़ी है। विनय ने हाथपर सोचा और मित्र के बाल न एक बाल नहीं। मित्र उसे एक घोर अघरे न से गया। एव कागज का टुकड़ा उसकी मुट्ठी न पकड़ा दिया और भरसना के स्वर में कहा—इस मौके पर तुम्हारा यहाँ रहना धात्र ठीक नहीं था। इस ली घोर अघरेता काम करो।

मित्र सेडी से फिर भीड़ में मिल गए। उमन टाचलाइट से दया उसकी मुट्ठी न एव ली रुपये का नोट था। वह नहीं सक्ते उमन उस अस्पृश्य समझ कर फेंक दिया या वह उसके बोम को न संभाल गयी वह नोट यहीं उसकी मुट्ठी से गिर गया। उमने हाथ के टाच को भीचे झुका दिया। रीतन नहीं किया। वह अंधेरी सूती गनी घोर ऊबड़-साबड़ गतिया को पार करती ठोकर सानी गिरती उठती अपने घर की घोर खली गई जहाँ उसका एवमान भाधार पिता चुपचाप महानिष्ठा में मो रहा था।

धरती और आसमान

बलाकार जो एक अस्पृश्य गृहस्थ है विन्दु सरल बलाकार। वह कला की सफ़लता में व्यस्त रहकर पानी को अभाव की दुनिया में धर्मश्रुता चला जाता है। वह सदा आर्शों के आसमान पर विचरण करता रहा और कभी अपनी जीवन-संघिनी को मोर देगा भी नहीं—जो धरती पर रह रही है और अभाव में क्षिप्रा जवन धिम गया है। और भव एकाएक वह उसे देखता है पति की दृष्टि से नहीं बलाकार की दृष्टि से। कहानी में यही तथ्य वर्णित है।

पूरनमायी का पूरा ध्यान आसमान पर अपना उज्ज्वल आलोक फला रहा था और धरती जैसे द्रुप में नहा रही थी। दिनभर खूबे खेपड़ों ने घाग वरसाई थी और हम समय ठण्डी हवा बह रही थी। स्निग्ध चादनी थी शान्त वातावरण। दूर एकाध पक्षी मन्द ध्वनि कर रहा था।

पति ने धाम दिनभर कड़ा परिश्रम किया था कई भूधरे स्वेचा म रग भरा था एक मूर्ति को खत्म किया था कुछ नई रेखाएँ चित्रित की थी। इस समय वह धन के सुते सहल में आरामदेह पलग पर पड़ा सुदूर नगना को जिसकी आभा उज्ज्वल चन्द्रलोक से फीकी पड़ रही थी ध्यानमान देख रहा था। वह गिरी थी बलाकार का भावुक था मनापी था। जीवन के पचास साल उसने कला की साधना में लगाए थे। आज वह साक-द्रष्टा था दिव्य-द्रष्टा था विश्व-द्रष्टा था। उसकी गहन कल्पनाएँ ब्रह्माण्ड के उस पार तक जाती जाती थी उसकी मूर्तिका शत-सहस्र जनों को जीवन का सदेश देती थी। उसके भवन ही ध्यनित्व में अस्तित्व ब्रह्माण्ड समाया हुआ था विदव का मुख-दुःख आज उसका भवन मुख दुःख था। वह भवने लिए बहिमुख था विश्व के लिए भन्तमुख। वह भवन को नहीं देख पाता था त्रिंश्व पर उसकी दृष्टि कैन्दित थी।

और इस समय शान्त-स्निग्ध चन्द्रमा के उज्ज्वल धवल आसोक में अबाधित रूप से वह उन करोड़ों मील दूर अवस्थित टिमटिमाते नक्षत्रों के निकट जा पहुँचा था। यह सोच रहा था इन नक्षत्रों में क्या सबकुछ इसी प्रकार प्राणियों का

बान है जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर ? क्या वा भी वातावरण क्या लोगों का हसने रोने और स्मृत्य नागरिक बोनाहत स परिपूर्ण है ? क्या भी क्या बच्चों की पीठ जगती है ? क्या भी क्या ऐसा ही है जसा कि यहाँ कुछ बच्चे गुनाह के पुनः के समान मुन्तर मुद्रावने उत्पुम्न कुछ सुख मुरझाए मक हुए कुर्मित और निष्पत्त ? कहीं सुख कहीं दुःख, कहीं हास्य कहीं रुचन कही प्रनाय कहीं अघवार कहीं बहुत धीर कहीं कुछ भी मर्गे ? ऐसा ही क्या यहाँ भी है ? परन्तु उस मूल-सुख से परिपूर्ण जीवन-बान में केवल यह प्रबानमान टिमटिमाना रूप ही क्या सीखता है ? अन्तः के मगसांघर पर उगरी दृष्टि जब गई यह सोचने लगा क्या ये अन्तः के पवत हैं या मृग समु ? क्या क्या अभी जीवन है ? लोग कभी कुछ कहते हैं कभी कुछ उसके अनुमान ही तो हैं । अभी कोई अन्तः गया तो है नहा । यह अन्तः गुण वृत्तवति सप्तपिम्पत्त ध्रुव ! क्या क्या इस धरती के मनुष्यों का धरतु स्पष्ट करेगा इह ? या य सब धमहाप जन मक प्वास और अभाव से अत्ररित होकर ही मर जाएगे ।

उसकी विचारधारा बदनी । वह सोचने लगा क्या अभावग्रस्त होकर मरने ही के लिए मनुष्य न जीवन धारण किया ? जीवन तो अभाव का नाम नहा है । फिर जीवन अभाव स परिपूर्ण क्यों है ? जीवन को समाज नियन्त्रापो ने सीमित किया है संयम से । इसी संयम न उसे अभावों स भर दिया है । मूल मगन पर वह उस पयोमी का धन धीनकर नही ला करता जिसके पेटभर खान पर भा बनू न बच रहा है क्योंकि वह समय का मर्णांग में बचा है । प्वास न सटपने पर धीर स ठिठुरने पर धीर जीवन के सम्पूर्ण अभावों स यह धरने धारा धीर फेंकी हुई विव-अम्पणापो की नहीं भाग सजता क्योंकि वह समय क मूल में बचा है ।

वह स्टेसन पर जाता है । अम्भी याना है । तीसरे दर्जे के डिब्बों स भड़-बन्दी की भाति ठसाठस आनी भर है । फल और सेकेंड क्लास के डिब्बे खाना हैं यहाँ अन्तर सुख सीट हैं । सरसर चलते पस हैं । मूल है धाराम है सुविधा है इसीकी उस चाह है । पर वह भाठ धीर गन्धी से भरे तीसरे दर्जे के डिब्बे स अवरत्ता धुन रहा है इनके लिए लड़ रहा है मनुष्यता स गिर रहा है । क्यों नहीं वह उन सुख खानी फल और सेकेंड क्लास के डिब्बों स जा बठता जहाँ सब कुछ है । क्या वह अभाव में मृत्यु दूठता है भाष म जीवन नहीं ? अन्त इमा लिए कि वह समय-पास म बचा है । उसके पास तीसरे दर्जे का ही निबट है । अन्त वह

सुभीता होने पर भी उन मुखद फण्ट बलास और मेकेण्ड बलास के दिग्बों में नहीं बठ सनता इसका विचार ही नहीं कर सकता ।

पति की विचारधाराएँ धरती से आसमान तक विचर रही थी । वह अपने में खो रहा था । वह सोच रहा था—इसी तरह तो मनुष्य जिस जीवन मिला है मृत्यु की बूढ़ खेता है । कितना उसका दुर्भाग्य है ! कितनी उसकी मूर्खता है ! फिर उसका ध्यान उन सुदूर नक्षत्रों की ओर गया । उस चांदी के घाल के समान क्षण-क्षण पर विकसित होते हुए चंद्रमा की ओर गया । शीतल मन्द पवन ने बेला के फूलों की महक लेकर उसके मन में गुदगुदी उत्पन्न कर दी ।

पत्नी भी पास के पलग पर झेटी हुई थी बहुत देर से । आज उसे भी बहुत परिश्रम करना पड़ा । नौकर बीमार हो गया था । सारा घर और बतन साफ करने पड़े थे । बच्चों को नहलाना और उनके कपड़े भी धोना पड़ा था । नौकर के लिए अन्न पच्य बनाना पड़ा था । सीसर पहर कुछ उसकी मिलनेवाणियाँ भी पढ़नी थी उनके अन्न-पान आसिष्य की व्यवस्था करनी पड़ी थी । आज पूर्णिमा थी उसका उपवास था । वह इन सब कामों से थक गई थी उपवास से कमजोर हो गई थी । अभी उसने यत्किंचित् लघु आहार लिया था । वह इस स्निग्ध चांदनी रात में इतनी यकाल के बाद इस सुखद पलग पर आराम पाकर बहुत-सी बातें सोच रही थी । बच्चे सब शीतल वायु के थपेहों से मुखद नीन्ना आनन्द ले रहे थे । दिनभर की धर-गृहस्थी की सटसट चसचस बकभक के बाद इस समय के निद्रन्त आसावरण में उसे कुछ गान्ति मिस रही थी । फिर भी उसका मस्तिष्क शान्त न था । धोकी उसकी नई सादी काट लाया था । उसकी धुलाई का हिसाब में पये काटने थे । दूधवाले का सुरह ही हिसाब करना था । बच्चों की फीस देनी थी । नौकर तो बल भी काम न करेगा । सार बतन यो ही पड़े थे । भोफ सुबह उसे कितने काम हैं ! रुपये तो भ्रगसे हफने मिलेंगे । बल वह इन सबको रुपये दगी किस तरह ? एकाएक उसे याद आया । घर रागन भी तो बल ही घाना है । कस आएगा ? जैसे उसका सारा धाराम हवा हो गया । उसने बेचनी से करवट ली । पुल के घाल के समान चांद पर उसकी नजर गई । बड़ी दर तक वह उसे देखी रही । फिर उसने आँखें बन्द कर लीं । वह सोच रही थी आज मह मानों के सामने उसे कितना नीचा देखना पड़ा । पड़ोसी से काँच के गिलाम मांगकर धर्यत पिताना पड़ा । एक बार वह घर के सारे भभावों पर विचार कर गई । इतनी

बड़ी घृत्स्वी और इनका यह हास ! न जाने किस उपेक्ष-बुन म रहत है । तनिक भी नो ध्यान नहीं दत । सब मुझ ही भ्रुगतना पड़ना है । वह सोच रही था उस उस नन बोझ और जिम्मेदारी के सम्बन्ध म उन अभाव क सम्बन्ध म जो उसे चारों ओर स दबोचे हुए थे उसपर सद रहे थ ।

एकाएक पति ने कहा—अहा क्या इन नशत्रों म भी मनुष्य-सोच है ? वहाँ नो क्या प्राणियों का निवास है ? क्या कभी इम पृथ्वी के मनुष्य वहाँ आ-जा सकते ? न जाने कब से बिनने बगानिक इन नशत्र-मण्डलो से सम्बन्ध स्थापित करने की जुगत में हैं । मगल और चन्द्रसोच म जाने के साथ तो मुना है राबेट बन गए हैं । किराया सस्ता हो तो जरा राबेट म बँटवर हम मोग चन्द्रलोक की घर कर आए । मुनठी हो खसोपी तुम ?

पत्नी अपने विचारों में डूबी हुई थी । वह समझी थी पति सो गए हैं । उसने ननक धाराम में दखत दना टीक नहीं समझा । वह खुपचाप अपना चारपाई पर आ सेठी थी और अपने विचारों में डूब उतरा रही थी । उसने पति की पूरी बात नहीं सुनी । जो मुना वह टोक-टीक नहीं समझी । पति जग रह हैं यह जानते ही उचन उस एकाएक सावधान होकर कहा—क्या जो घर में एक भी वाष का गिलास नहीं है । बरी खराब बात है । घाए-गयों के सामने बितना शर्मिन्दा होना पड़ता है !

पति की सारी ही विचारधारा छिन्न भिन्न हो गई । नशत्र-मण्डलो स उसके सम्पर्क समाप्त हो गए । विज्ञान की विद्वम्पापिनी प्रक्रिया अन्तर्हित हो गई । उमन पत्नी क थके हुए, सूग नीरस उदाम मुन की धार दसा उमकी टूटी चारपाई और चारपाई की पटी चान्दर को देखा । अपनी सारी गरीबी स मरी हुई घृत्स्वी का एक समूचा बित्र उमका प्राँखो म बन गया । पत्नी के इम एक छोटे म वाष ने उस उमकी सारी ज्ञान-गरिमा को चुनौती दी हो । वह सज्जित-सा मर्महित-सा अचरधी-सा भयभीत-सा खुपचाप पत्नी की बिन्नावुन दृष्टि को दखने लगा बिनम अभाव ही अभाव या अज्ञान ही अज्ञान थी ब्यया ही ब्यया थी चिन्ता ही चिन्ता थी ।

उसके मुह से बोल नहीं निकला । उसे हटात्पाद प्राया विवाह के समय जब दुम दृष्टि की रसम अदा हुई थी तो इसी दृष्टि म शुक्र नशत्र जसा तेज और उज्वल आसोक देखकर बिष प्रवार उसके धारीर का रक्त बिन्दु नाच उठा था

सुभीता होने पर भी उन सुखद फस्ट क्लास और सेकेण्ड क्लास के डिब्बों में नहीं बठ सकता इसका विचार ही नहीं कर सकता।

पति की विचारधाराएँ धरती से आसमान तक विचर रही थी। वह अपने में सो रहा था। वह सोच रहा था—इसी तरह तो मनुष्य जिसे जीवन मिला है मृत्यु को दूढ़ लेता है। कितना उसका दुर्भाग्य है! कितनी उसकी मूल्यता है! फिर उसका ध्यान उन सुदूर नक्षत्रों की ओर गया। उस चांदी के घाल के समान क्षण-क्षण पर विकसित होते हुए चंद्रमा की ओर गया। शीतल मन्द पवन ने जेला के फूलों की मटक लेकर उसके मन में गुदगुदी उत्पन्न कर दी।

पत्नी भी पास के पर्लंग पर खेटी हुई थी बहुत देर से। आज उसे भी बहुत परिश्रम करना पड़ा। नौकर बीमार हो गया था। सारा घर और बतन साफ करने पड़े थे। बच्चों को महलाना और उनके कपड़ भी धोना पड़ा था। नौकर के लिए भलग पच्य बनाना पड़ा था। तीसरे पहर कुछ उसकी मिलनेवालियाँ आ पहुँची थीं उनके जल-पान-प्रातिप्यकी व्यवस्था करनी पड़ी थी। आज पूर्णिमा थी उसका उपवास था। वह इन सब कामों से थक गई थी उपवास से कमजोर हो गई थी। अभी उसने यत्किञ्चित् लघु आहार लिया था। वह इन स्निग्ध चांदनी रात में इतनी थकान के बाद इस सुखद पलंग पर आराम पाकर बहुत-सी बातें सोच रही थी। बच्चे सब शीतल वामु के कपड़ों से सुखद नींद का आनन्द ले रहे थे। दिनभर की घर-गृहस्थी की झटझट चक्कचक्क बकभक्क के बाद इस समय के निद्रान्द्र वातावरण में उसे कुछ शान्ति मिल रही थी। फिर भी उसका मस्तिष्क शान्त न था। धोबी उसकी नई साड़ी फाड़ लाया था। उमनी घुसाई का हिसाब मैं पैसे काटने का। दूधवाने का सुदह ही हिसाब करना था। बच्चों को फीस देनी थी। नौकर तो कस भी काम न करेगा। सारे बतन यो ही पड़े थे। प्रोफ सुबह उसे कितने काम हैं! रुपये तो भगले हफ्ते मिलेंगे। कस वह इन सबको रुपये देगी किस तरह? एकाएक उसे याद आया। भरे राशन भी तो बल ही आना है। कसे आएगा? जस उसका सारा आराम हवा हो गया। उसने बेधनी से करबट ली। फूल के घाल के समान चांद पर उसकी नज़र गई। बड़ी देर तक वह उसे देखी रही। फिर उसने आँखें बन्द कर ली। वह सोच रही थी आज मेहमानों के सामने उसे कितना नीचा देखना पड़ा। पहोसी से कांच के गिलास मागकर शर्वत पिलाना पड़ा। एक बार वह घर के सारे अभावों पर विचार कर गई। इतनी

बड़ी शृङ्खली और इनका यह हाल ! न जाने किस उधेद-बुन म रहत हैं । तनिक भी ना ध्यान नहीं दत । सब मुझ ही भुगतना पटना है । वह सोच रही थी उम उत नन बोझ और जिम्मागारी के सम्बन्ध म उम धभाव क सम्बन्ध म जो उसे चारा और स दबोचे हुए थे उमपर सद रहे थ ।

एकएक पति ने कहा—घहा क्या इन नसत्रा म भा मनुष्य-लोक है ? वहा नी क्या प्राणियों का निवास है ? क्या कभी इन पृथ्वी के मनुष्य वहा आ-जा सकेने ? न जाने कब से किने बज्ञानिक इन नसत्र-मण्डलों से सम्बन्ध स्थापित करन की जुाठ में हैं । मगन और चालोक म जान के सामक तो मुना है राकेट बन गए हैं । किराया सस्ता हो तो जरा राकेट म बठकर हम लोग चालोक की सर कर आए । मुनती हो चलोगी मुम ?

पत्नी अपने विचारों में हूबी हुई था । यह समझी थी पति सा गए हैं । उसने इनक धाराम म दखत दना टीक नहीं समझा । वह चुपचाप अपनी चारपाई पर आ सेटी थी और अपने विचारों में हूब-उतरा रहा थी । उमने पति की पूरी बात नहीं सुनी । जो मुना यह टीक-टीक नहीं समझी । पति जग रह हैं यह जानते ही उनन जस एकाएक सावधान होकर कहा—क्या जो घर म एक भी पाच का गिमास नहीं है । बड़ी सराव बात है । आए-गयों के सामन कितना घमिन्ना होना पशता है ।

पति की सारी हा विचारधारा छिन्न भिन्न हो गई । नसत्र-मण्डलों से उसने सम्पक समाप्त हो गए । विज्ञान की विद्वध्यापिनी प्रक्रिया धन्तहित हो गई । उमन पत्नी के थके हुए, सूस नीरस उदाम मुख की ओर देखा उसकी हूटी चारपाई और चारपाई की फटी चादर को दखा । अपनी सारी गरीबी स भरी हुई शृङ्खली का एक समूचा चित्र उसकी घाला म बन गया । पत्नी के इस एक छोटे म बावय ने जस उसकी सारी जान-गरिमा को चुनौती दी हो । यह सज्जित-सा मर्नाहित-सा अपराधा-मा भयभीठ-सा चुपचाप पत्नी की चिन्ताकृत दृष्टि को दखन लगा त्रिनमें धभाव ही धभाव था पकान ही पकान थी ध्यया ही ध्यया था चिन्ता ही चिन्ता थी ।

उमके मुह स बोल नहीं निकसा । उम हठात् या धाया विवाह के समय जब शुभ दृष्टि की रस्म घदा हुई थी तो इनी दृष्टि म मुझ नसत्र जसा ठेज और उग्गदल धालोक देखकर किस प्रकार उसके शरीरका रक्त चिन्ता नाच

उसका अस्पष्ट जीवन-पथ आलोचित हो उठा था। वही दृष्टि आज इतनी मूर्ती हो गई। आज उसपर नजर पड़ते ही मन दद से कराह उठा। उसने और ध्यान से पत्नी को देखा। उसकी साड़ी मली और फटी हुई थी। दिनभर काम-बाज करन के धाम भी उसन उसे बदला नहीं था। इसलिए नहीं कि उसन घासमान किया था वह फूड़ थी। दूसरी घोड़ी उसके पास थी ही नहीं। उसके बाल भी रुखे थे। उनम न तेल डाला गया था न कधी की गई थी। उस मैली फटी साड़ी में रुखे और उमभके हुए बालों के नीचे उसका सूखा मुह मुरभाए हुए होंठ चिन्ताकुन धाँसे—उस टूटी चारपाई पर बिछी फनी धादर पर लेटा हुआ उसका जीण दारीर उसने देखा।

हठात् उसके मन म एक बात आई। आह अपन जीवन में अपनी तूतिका स मैंने इतन चित्र बनाए। जीवन को इतना रंग दिया। लेकिन यह जो जीवित चित्र मैंने बनाया है। इसपर तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया। इसके सम्मुख मेरे धन तक के बनाए हुए सारे चित्र हेय हैं। सब निर्जीव हैं। सब नकली हैं। असत्य हैं। उनम सौन्दर्य है। प्रकाश है। रंगीनी है। पर जीवन कहाँ है? ये जीवित कहाँ हैं? जीवित चित्र केवल यही मैं बना पाया हूँ।

निस्सन्देह यह चित्र मेरा ही बनाया हुआ है। मेरी यह पत्नी वह नहीं है जो धव से बीस साल पहले ब्याह कर आई थी। यह तो मेरे द्वारा बनाई हुई मूर्ति है। इसे बनाने में मुझ कलाकारके बीस वर्ष लग गए। निस्सन्देह बीस वर्ष! इन बीस वर्षों में उसके गुलाबी धमकदार गालों को पीना पिचका हुआ बनाया गया। उन पर झुर्रियों की रेखाएँ अंकित की गईं। दाँतों का मादक तेज कटाक्षों का विद्युत्प्रवाह धो-धोकर इनमें अमिट मूनापन पदा दिया गया। प्रेम का घाम तण सा देनवाने इन सरस होंठों को सुखाकर उन्हें फीका किया गया। उन्नत युगल यौवनो को ढहा दिया गया। धव के उसके अतीत यौवन के एक प्रामाणिक इतिहास बन गए थे। उसकी यह मृदुल-मुषिकवण धमकावतियों को अंगली भाड़ियों का रूप दे दिया गया था।

आप कह सकते हैं कि यह तो रूप को बदरूप कर दिया गया। तो इससे क्या मेरी कला सदोष होगी? कलाकार सौन्दर्य के सम्पाद का चित्रण करन का ठकेदार नहीं है। वह कल्प भी सज्जन करेगा। उसका याम अदिरा की दोतस भरना नहीं। सत्य के दगन करना है। सत्य को मूत करना है—वह सत्य जा

आदिनों-हकानिनों से होता या रहा है होता रहगा। यही तो उक्तकी कता है। मैं नहीं किना।

एन्नी की और पति न प्यार नही बिम्बन स दसा। यह बाह्यता या कि कानी इन इति को किस उन्नत प्रवृत्ति पर विराम पाकर बनाया है प्यार करे। एन्नु वह उन्नत काना कानन स बुर बुर होकर मो गई या। वह गहरी नीच में या रहा या।

वह चौक पता। का! का गृह विधान तो इन जीवित चित्र की एक भिन्न ही या है। कना तो मैं विचार ही नहीं किना या। मैं सोच रहा या कि इन का का जीवन मैं किना। एन्नु धर कमल रहा है कि यह जो उन्के प्यार जीवन में बच-बाच में ऐसे हा गृह विधान क विराम निरन्तर बीस बप तक हाउ रह उन्नत उन्नत जीवन कानन रया है। का सगिउत हुआ। टाक तीव्र यह बटि उन्नत। उन्नत कपन रेसाए यह यह। वह सोचन सगा कम विराम का तो चित्र उन्नत न हो सकेना। फिर जीवन स उन्नत का कामकाय कम स्याति हो एन्ना ?

यह बुद्ध भी विराम न कर पाया। यह पति या या और बनाकार भी। इस का पति भी कुछ सोच रहा या और कानी एन्नु पर सगिउत भी हो रहा या एन्नु बनाकार कानन या। यह और भी गृहों बात सोच रहा या। यह सोच रहा या कना के कान हृष्टिकाउ के सम्बन्ध में। यह सोच रहा या कि यही गृहा विधान सगि विरामिधान में परिवर्तित हा जाए तो फिर कपी यह मूर्ति के उन्नत कना की प्रवृत्ति-मूर्ति पर कानिउत रहगी तो ?

पति न उन्नत विधान-प्रवृत्ति मूर्ति पर हृष्टि जनाई। उन्नत कौमुदी का विस्तार कानन कना कानना मुद्दर एन्न में विमतिमात्रे तारे समी देसत रह या।

कानन मूर्ति का प्रवृत्ति-विचार का। इन कप से कि कहीं बात उन्नत कानी में हृष्टि-कानन का क उन्नत एन्न ही पर हृष्टि-कानन किना। प्रवृत्ति-कानी पति का कानी या—वही मूर्ति ही मूर्ति हृष्टि कानन हृष्टि चित्रवन काने हृष्टि कानन और एन्नत कानन। कम मूर्ति में कानन-कानन कानना कानना का एक कानन किना या। उन्नत मूर्ति में उन्नत विराम कानी कानन-कानन किना या और उन्नत कानन कानन मूर्ति की काननों में काननी की या। इन प्रवृत्ति का नाम रया उन्नत—धरती और कानन।

नहीं

इधर आचार्य ने कुछ नउ पद्यति पर कहानी लिखना आरम्भ किया था जो सम्भवतः हिन्दी में सब्धा नया प्रयोग है। इममें न कथानक है न चरित्र चित्रण न घटनाएँ केवल भाव है। भावों का आवेरा नहीं है विचारों के आभार पर एक स्थापना की ग' है। 'नहीं' ऐसी ही कहानी है। यह कहानी 'शरद' के एक-दो वाक्यों पर आधारित है।

परन्तु दक्षिणा न कहा—नहीं।

नहीं क्यों ? यह भी कोई बात है मला ? भोलानाथ न क्रोध स फूटकार करके नष्टुने फुलाकर कहा।

नहीं ऐसा हो नहीं सकता दक्षिणा ने सज्ज शान्त और स्थिर स्वर म कहा और फिर वह उठकर धीरे स चल दी। उसकी नहीं म न तो विद्रप की जलन थी और न क्षमा का दम्भ था। उसके नीचे भुके हुए पलको के भीतर एक नीरव समय झाँक रहा था। आप ही कहिए मला एक दिन जिसे उसने अपना धमस घबल कोमल नवीन केलेक पत के समान शोभायुक्त प्रकृता कौमार्य पूण समर्पित किया था अपन प्राणों के उस्तास को लेकर जिसे पागल की तरह प्यार किया था जिसकी आखा म आर्ये डालकर जीवन की सार्थकता को समझा था जब उसीके प्रति निमम कल्पना कस कर सकर्तः थी ? उसने तो उसी दिन उसी क्षण सबकी निगाह से धोभम उसके सब दोष चुपके से धो-मोंछ करके साफ कर दिए थे। ऐसा क्रुद्ध शोवाकुल हाहाकार का भाष तो उसके शान्त हृदय म उठा ही नहीं।

भीतर धाकर उगने देखा वृद्धा माता चुपचाप निश्चल बठी हैं। उसने मां के पास आ स्निग्ध स्वर म कहा—यह क्या मां धमो तब चूल्हा नहीं जला ! आज रसोई नहीं बनेगी क्या ? बाबूजी के दफ्तर जाने का तो समय भी हो चुका। हरिया गया कहाँ ?

उसने धाकुल नेत्रों से इधर-उधर हरिया की खोज की। और फिर उसकी दृष्टि मां के ऊपर आ टिकी। वह उसी तरह पत्थर की मूर्ति की भाँति स्थिर

बुध बठी थी। क्षणभर उगन मां को देखा फिर स्विचर गति से रगोई की घोर धस दी। परन्तु इसी समय भोला बाबू सम्बन्ध-सम्बन्धे ङग भरत भीतर घाबर ग्योष घोर घावेग म बापते हुए बोले—बहे दटा हू दाभी सब बातों म तेरी ही नहीं चलती। उसे सब्बा देना मेरा काम है मैं उसे एगा मडा धरा दूगा नि जिसका नाम ! धरे बाह मेरी फूल-नी वेगी के साथ यह धोगाबाडी ! इमीलिए मैंने उसे खप देकर वितायत भजा या ? एसा पाजी रास्बल ! मैं उसे जल की हवा न खिताऊ तो भोलानाय नहीं। घोर सघे की डिपी तो हुई रसी है।

भोला बाबू की गले की नसें ऊपर को उभर घाद घोर घहरा विकृत हो गया। परन्तु दक्षिणा ने एक पाग भी मुह से मही कहा। पिता की बात सुनन को एक पग भी रकी नहीं बसे ही धान भाष से रगोई मे चली गई।

बूढा ने कहा—ठूमा धमी तुम जाकर स्नान-पूजा से निगट सा तब तब मैं थोडा जलपान बनाए देनी हू। धब इस समय रगोई तो बन नहीं सकती। मैं भी दखुगी मेरी बेटी के भाग्य पर पत्यर मारकर बोन कसे सुख से बँटता हू।

पत्नी की बात से भोला बाबू को बहुत सहारा मिला। बटी ने जो उनके रोप का साथ नहीं लिया उसकी खीभ पत्नी के इस समयन स बुझ गई। उन्होंने पूर निगलकर कहा—देखूंगा देखूंगा !

घोर व धागे की बात कह न सके। पत्नी रमाईघर म चली गई थी। हरिया साग-तरकारी लेकर आ गया था। भोला बाबू घोर बुध न बहकर स्नान-गृह में घुस गए।

उसी दिन तीसरे पहर दक्षिणा को धन्ना दीदी न पकड़ा। धन्ना दीदी दक्षिणा के मुंह से निकना धन्नपूर्णा का कीमलतम सस्करण है। धन्नपूर्णा विषवा है दो बच्चों की मा है। उसके पति बहुत खमीन-जायन्दा छोड गए हैं। वह पढ़ी लिखी दुनिया देली खानीम साल की धायु की महिला है। उसने पति के साथ विश्व भ्रमण किया है स्त्रिया के धधिकारो की बर्षा सुनी घोर की है। वह स्त्री-स्वातन्त्र्य की बहुत बड़ी समर्थक है। स्त्रियों की समा-सोसाइटियों म उसका धाना-जाना है। दक्षिणा ने जो उसके नाम का यह कीमलतम सस्करण किया है, सो खूब प्रसिद्ध हो उठा है। धब तो सभी लोग उस धन्ना दीदी के नाम से ही पुकारते हैं। धन्ना दीदी जैसी पठित घोर प्रगल्भा रमणी है,

प्रतिकार कर रही है।

मैं प्रतिकार नहीं कर रही दीदी न म यह कहती हूँ कि यह सत्य है। परन्तु तुम माराज न होना इस सत्य को सत्य बिलासी दल के नर-नारी मूह ने भाँति भाँति के भ्रान्तोत्पन्न करके ऐसा गन्दा कर दिया है कि उसे छूना भी घिन होती है।

घिन कैसे होती है तनिक सुनू तो ?

'तुम्हारा तो सब देखा-सुना है दीदी सुनोगी क्या ! बिलायत के ही लोगों को देखो वे कसौ धाजादो से प्रमाभिनय करके कितन उत्साह से विवाह करते हैं ! उनके बीच तो माता पितापों के माध्यम की परम्परा नहीं है। स्वच्छा है प्रेम है ठोक-बजाकर जिमा हुआ सौदा है फिर क्या कारण है कि तनिक-तनिक मी बातों पर छोटे छोटे कारणों को लेकर वहाँ विवाह विच्छेद हो जाते हैं ! वहाँ की धनलता के लिए, समाज के लिए, स्त्री के लिए पुरुष के लिए यह एक मामूली बात हो गई है। कहाँ तुम दीदी क्या उहे ऐसा करने में तनिक भी शोच नहीं लगती ? वही इतना-सा भी बद नहीं होता ? मैं कहती हूँ यही याँ उनका सत्य प्रेम है यदि यही पति-पत्नी के समान अधिकार का सम्बन्ध रूप है तो यह छूने क्या धाँस उठाने देखने के भी योग्य नहीं। मुझ तो यह धारणा है कि वे लोग अपनी सम्यक्ता का गर्व किस झूठे पर किया करते हैं।

घन्ना दीदी की धाँसो में धामू भर गए। यह उसकी हार के धामू में उसे जगाम नहीं सूझ रहा था। दक्षिणा सूखे मूह और सूखे होठों से घन्ना दीदी की ओर देखती रही उस दृष्टि को सहन न कर उसने दक्षिणा को क्षीचका अपनी छाती से मया लिया। वह बहुत देर तक उसके धिर पर हाथ फेरती रही बड़ी देर बाद उसने कहा—कैसे सहेगी दीदी मेरे पास धामू नहीं जैसे तुम्हें सजाना दूँ।

दक्षिणा बहुत देर बुपचाप घन्नपूर्णा की गोद में खेटी रही फिर उसने निरा उठकर कहा—दीदी जल्दी जल्दी भ्रामा करो। दो मिनट ठहरो मैं चाय बनाती हूँ। माँ को कुछ दिना-पिता दो बस मैं उन्हींने एक बूद पानी तक नहीं पिया है।

धरे इसीसे तरा मह डहर में रसोई में जाकर चाय और जलपान बना लाती हूँ।

दुःख-हा-टोटे-हँसे-में-जागी-हूँ ।
 परन्तु-हमों-माथ-हा-साथ-रसोई-में-आकर-आप-का-सुख-साम-जुदाने-में-
 लगे-हो-गई ।

एक-बदल-का-।-पुणनी-साथी-दुनिया-हम-बुझी-थी-।-जीवन-उपा-की-
 लगन-पात्र-प्रभा-इतनी-दुःखी-में-हम-बुझी-थी-।-पुरुष-की-लोगुप-दृष्टि-
 खिन्न-बिना-नाथ-को-परवान-करती-है-सम्झा-को-दीक्षित-करती-है-आत्र-उससे-
 वा-दक्षिणा-को-मलिन-बनी-थी-।-इतन-दिन-बाद-एक-एक-पति-से-जाने-क-
 लिए-आए-।-उन्होंने-एक-अनुभव-पत्र-भितकर-दक्षिणा-को-अन-अनुमान-
 करने-में-सूचित-दिना-का-घोर-पह-भी-मिस्ता-या-कि-उन्हे-जीवन-में-अब-केवल-
 दक्षिणा-की-दक्षिणा-एव-है-।

दक्षिणा-के-हृन्-में-दरान्त-दिनन-की-उप-भी-अपत्ता-न-थी-।-पिर-भी-
 इन्हे-हूर-दीन-घोर-तर-स-मेकर-अब-तक-क-दक्षिण-क्रम-बिना-पर-आन-
 परिचित-अ-ही-स-उन्का-आन-अवचित-हो-रहा-था-।-उन-दिनों-की-वह-
 कह-अब-न-थी-।-आप-आर-हाउ-हो-आंसों-के-हीनों-स-निरतनी-आप-की-
 बिगारिया-अन-अनुमान-उस-हो-गई-थी-वह-राज-भी-आगुओं-से-धुनकर-करा-
 की-बहु-पत्र-था-।-एक-दय-का-मूर-बदना-आत्म-अदम-घोर-बिरदमन-की-
 जो-रख-उमर-अप-पर-अक्षिण-हा-गई-थी-व-तो-दूर-स-पड़ी-जा-सकती-थी-।-
 वा-दर-अन्ना-दीन-न-मरकत-हूर-आकर-उससे-कहा-—'वह-क्या-?'-आप्या-हीने-
 की-आ-हून-न-अन-अपने-न-आत-दनाए-।-उठ-म-घोटी-गुप-दू-।-अन्ना-
 इन्ही-तो-क्या-इन्ही-मति-

अन्ना-दीनी-का-आपसे-अब-आर-।-परन्तु-दक्षिणा-न-मूला-आप्या-से-उमकी-
 आर-अकर-करा-—'नित्य-हा-तो-अभी-ही-रहती-हूँ-दानी-इस-केना-मुक्त-आन-
 अकरन-की-आन-नहीं-।

न-महा-पर-आन-ठा-।

आप-क्यों-?

'मू-एही-अपनी-है-अनुम-अन-अकर-न-कर-।-उठ-घोटी-गुप-दू-।

'घोटी-गुप-है-तो-गुप-दा-दीन-परन्तु-इस-आन-

'अन-?'-इतन-दिन-बाद-व-आए-है-मैं-ऐसे-अन-म-मिती-हूँ-।